सनातन संस्कृति का मूलज्ञान

विश्व की सबसे प्राचीन सभ्यता का अनंत ज्ञान

प्रतीक प्रजापति

सनातन संस्कृति का मूलज्ञान

विश्व की सबसे प्राचीन सभ्यता का अनंत ज्ञान

इस **पुस्तक का उद्देश्य सनातन संस्कृति के मूलभूत ज्ञान** को आज के मॉडर्न **लोगों तक** सबसे सरल तरीक़े से **पहुँचाना है।** जिसको जीवन में उतार के वे अपना, अपनो का और अंततः पूरे समाज का हित कर सके।

इसी **ज्ञान** को आगे **विस्तार से** या तो हम किसी **प्रामाणिक गुरु शिष्य परंपरा से** उचित गुरु के मार्गदर्शन से **प्राप्त कर सकते है;**

या फिर,
Veducation के अभी के और भविष्य के वीडियो, पॉडकास्ट एवं पुस्तकों से ले सकते है। जहा सारे **वेदिक शास्त्रों का ज्ञान** विस्तार से **समझाया जाएगा।**

Sanatan Sanskriti ka Mool-Gyan
By Pratikkumar Prajapati
Published by : Self Published

Publisher Address :
Nr. Bhat village Bus-stop,
Bhat Village, Sarkhej Dholka Road,
Ahmedabad, Gujarat - 382210

ISBN : 9789356078468

Fourth Edition - 2023 April - 5000 Books
Third Edition - 2022 - 2000 Books
Second Edition -2022 -1000 Books
First Edition -2022- 1000 Books

Written and Edited by Pratikkumar Prajapati
Book Design and Cover by Pratikkumar Prajapati

Printed in India
Gopinath offset,
Akar complex, Nr.golden triangle,
Stadium road, Navarang pura,
Ahmedabad - 380009

इस पुस्तक को हम
अर्पण करते है,

हमारी सभी महान **गुरु शिष्य परम्पराओ,**
उत्कृष्ठ **साधुओ** तथा गौरवान्वित **शास्त्रों** को;
जिनकी **कृपा से** ये दिव्य **ज्ञान**
आज के इस **कलियुग** के समय में भी
हम पतित आत्माओं के लिए **उपलब्ध है।**

आप क्या सीखोगे?

1. **आत्मा, जीव** का मूलज्ञान
2. **परमात्मा, भगवान, ईश्वर** का मूलज्ञान
3. **देवी - देवता**ओं का मूलज्ञान
4. **प्रकृति** का मूलज्ञान
5. **योग** का मूलज्ञान
6. **धर्म** का मूलज्ञान
7. **कर्म** का मूलज्ञान
8. **ब्रह्मांड** का मूलज्ञान
9. **समय, काल** का मूलज्ञान
10. **शास्त्रों** का मूलज्ञान
11. **सनातन संस्कृति** का मूलज्ञान

तो शुरू करें?

पठन से पेहले प्रार्थना !

ॐ अज्ञान तिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया ।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरुवे नम : ।।

नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम् ।
देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जय मुदीरयेत् ।।

सनातन : जिसका ना कोई आरंभ है ना ही कोई अंत
संस्कृति : जीवन जीने का तरीक़ा

सनातन संस्कृति : जीवन जीने का अनादि तरीक़ा

अब,

कुछ समय के लिए,
जैसे जैसे आप इस दिव्य ज्ञान
की पुस्तक के पन्ने पलटते जाएं,

भूल जाइये की
आप कौन हो,
कहाँ हो,
क्या जानते हो,
और क्या मानते हो,

सबकुछ भूल जाइये।

और एक शांत से कोने में बैठकर,
इस पुस्तक को ऐसे पढ़िए,
जैसे कि आप आकाशगंगा बीच में तैर रहे हो
और **ब्रह्मांड आपसे बातें कर रहा हैं।**

क्योंकि

अब आप जो पढ़ने जा रहे हो,
वो कोई **साधारण** सांसारिक **ज्ञान नहीं है।**

हो सकता है,
आपने इसके बारे में कुछ पढ़ा हो, कुछ सुना हो,
और शायद औरों को इसके बारे में बताया भी हो।

लेकिन **आज,**
कुछ समय के लिए,

सबकुछ भूल जाइए।

आज,

हम इस ज्ञान की ओर उस तरह बढ़ेगे जैसे एक **आदर्श शिष्य**
आदर्श ज्ञान की प्राप्ति के लिए,
एक **आदर्श शिक्षक (गुरु)** की ओर बढ़ता है;

अपने आप को संपूर्णतः मूर्ख जानकर।
जो स्वीकार करता है कि वो कुछ नहीं जानता,
और अपने मन को एक कोरा काग़ज़ बनाकर समर्पित कर देता है,
जिस पर कुछ भी पेहले से लिखा हुआ नहीं है।

आज,
हम सिर्फ **ज्ञान** लेंगे नहीं,
परंतु हम उस **पर विचार विमर्श** भी **करेंगे।**

जो हम कभी नहीं करते!

परंतु

आज,

हम फ़िरसे शुरुआत करेंगे।
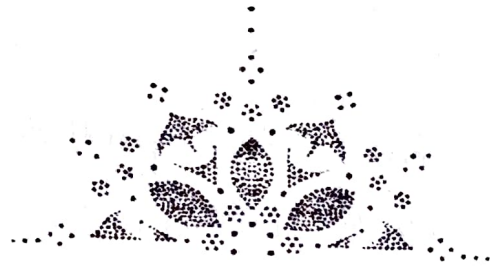
आत्मा

जीव

आत्मज्ञान,

वो ज्ञान जो **सुनने में** एकदम **सरल** लगता है,
लेकिन **समझने पर** उतना ही **गहरा** होता है।

इसी ज्ञानके साक्षात्कार से,
महान से महान **ऋषि मुनियों ने** बड़ी बड़ी शक्तियाँ, सिद्धियाँ,
और उच्चतम लोकों को प्राप्त किया हैं, तथा इसी ज्ञान से ही
उन्हों ने **जीवन के सर्वोच्च लक्ष्य को** भी **प्राप्त किया है।**

ये ज्ञान तब शुरू होता है जब हम
भौतिक तत्व और आत्मा तत्त्व के बीच का अंतर समझने लगते हैं।
तभी हमें ये स्पष्ट होने लगता है की,

हम ये शरीर नहीं हैं,
हम आत्मा हैं।

'अहं ब्रह्मास्मि'

मैं एक **शाश्वत आत्मा** हूँ।

हमारा **शरीर** एक **वाहन** की तरह **है,**
जिसमें हम, **जीवात्मा,**
एक **वाहन चालक** की तरह बैठे **है।**

अब ये पढ़कर,
हम ये सोचना शुरू कर देंगे की,
'अरे हाँ, हाँ, मुझे पता है,
हम ये शरीर नहीं हैं, हम आत्मा हैं,
आत्मा शरीर बदलती रेहती है,
आत्मा शाश्वत है।'
वगैरह वगैरह..
'अरे प्रभु,
ये सब तो हम जानते हैं,
कुछ नया बताओ!'

और फिर, हम इस ज्ञान पर कभी विचार ही नहि करते,
और फिर से हमारे सांसारिक दिनचर्या में वापस लॉट जाते हैं।

परंतु आज नही।

आज,

सोचिए,

आपका शरीर,
कितना भी सुंदर, तंदुरुस्त, मोटा, पतला, स्वस्थ, रोगी, युवा या वृद्ध हो,
आख़िर में तो एक जटिल यंत्र के सिवाय और कुछ नहीं है।
यन्त्रारूढानि मायया ।। - भगवद् गीता 18.61

जो **11 इंद्रियों** से बना है:
5 ज्ञानेन्द्रिय + 5 कर्मेन्द्रिय + 1 उभयेन्द्रिय

5 ज्ञानेंद्रियों के माध्यम से,
हमारा शरीर सूचना के रूप में जानकारी प्राप्त करता है।

1. **आंखों** से दृश्य
2. **कानो** से आवाज
3. **नाक** से गंध
4. **जीभ** से स्वाद तथा
5. **त्वचा** से स्पर्श।

इस जानकारी के उपयोग से, हमारा शरीर क्रिया करता है
और 5 **कर्मेंद्रियों** के माध्यम से कार्य पूरा करता है।

6. **हाथ**
7. **पैर**
8. **मुंह**
9. **जननांग**
10. **मलाशय।**

इन सभी को संचालित करती है **11वी उभयेंद्रिय,**

11. **मन**

इसलिए,

हमारे इस यंत्र जैसे **शरीर का मुख्य कार्य** है,
ज्ञानेंद्रियों से **जानकारी लेना**,
उभयेंद्रिय से **उस** जानकारी **का संचालन करना और**
कर्मेन्द्रियों से अपना **कार्य** पूरा **करना**।

लेकिन,

वो क्या है जो ये सब करने की
इच्छा करता है, सोचता है और उसका **अनुभव करता हैं।**

या फिर ये पूछें की वो,

कौन है

जो इच्छा करता है,

सोचता है और इन सब का अनुभव करता हैं।

क्योंकि,
इच्छा करना, सोचना और अनुभव करना
ये सब शरीर द्वारा नहीं किया जाता।

ये सबकुछ
कोई और ही करता है!

और वो कोई और है,
आत्मा : जीव : ब्रह्म

इसलिये,
अहं ब्रह्मास्मि : मैं एक आत्मा हूं।

तो हम,
जीवात्मा,
जब इस भौतिक संसार में आते है,
तो इस भौतिक शरीर को अपनाते है,
जो की **प्रकृति के पांच प्राथमिक तत्त्वों** (पंचमहाभूतो) से बनी है,

1. **धरती**
2. **जल**
3. **अग्नि**
4. **वायु**
5. **आकाश**

परंतु इस भौतिक शरीर के उपरांत
हमारा **एक और शरीर** है,
जिसे हम जहा भी जाते है,
लेकर जाते हैं;
मृत्यु के बाद भी।

वो शरीर इन 5 स्थूल तत्वों से नहीं,
परंतु 3 **सूक्ष्म तत्वों** से बना है,

1. **मन**
2. **बुद्धि**
3. **मिथ्या-अहंकार**

अब
यहाँ से शुरु होता है
जीवन का वास्तविक खेल।

हम,
हमारे विचारों, इच्छाओं और कर्मो से
हमारे सूक्ष्म शरीर को आकार देते हैं।

और वो **सूक्ष्म शरीर हमारे**
स्थूल (भौतिक) शरीर को आकार देता है।

उदाहरण के लिए,
यदि हमारे **विचार अस्वस्थ** और **अनियंत्रित** हैं,
तो हमारे **कर्म** भी **अस्वस्थ** और **अनियंत्रित** हो जाते हैं,
जिससे हमारा **शरीर भी अस्वस्थ** और **अनियंत्रित** हो जाता है।

लेकिन यदि हमारे **विचार स्वस्थ** और **नियंत्रित** हैं,
तब हमारे **कर्म** भी **स्वस्थ** और **नियंत्रित** होंगे,
जिससे हमारा **शरीर भी स्वस्थ और नियंत्रित** रेहता है।

और ज़्यादातर समय इनकी वजह से हमारे आसपास का वातावरण
और हमारे सम्बंध भी शुद्ध, स्वस्थ और नियंत्रित बनते है।

अब समझिए की,
ये तथ्य मात्र हमारी रोज़िंदा आदतों तक ही सीमित नहीं है।
ये तथ्य **जीवन और मृत्यु से परे** भी लागू होता **है।**

आइए समझते है,
तो भगवान ने ये भौतिक संसार इसलिए बनाया,
क्यूँकि हम, जीवात्माएँ, हमारी निजी इच्छाएँ पूरी करना चाहते है।

इसलिए अपने पूरे जीवन के दौरांत हमने
अपनी इच्छाओं को जैसा भी आकार दिया है;
उन **इच्छाओं को पूरा करने के लिए,**
जो भी शरीर सबसे उपयुक्त है,
हमें वो **शरीर अगले जन्म में मिलता है।**

उदाहरण के लिए,
यदि हम जीवन भर भालू की तरह **सोने में ही रुचि रखे है,**
तो हमें भालू का शरीर मिलता है जिसमें हम ज्यादा समय तक सो सकते हैं
और अपनी सोने की इच्छा को और अच्छे से पूरा कर सकते हैं।

अगर हम भेड़िये की तरह **मांस खाने में ही रुचि रखे है,**
तो हमें भेड़िये या कुत्ते का शरीर मिलता है,
जो मांस खाने की हमारी इच्छा को पूरा करने के लिए ज्यादा उपयुक्त है।

और यदि हम हमारे पुरे जीवन में,
संभोग संभोग और **संभोग में ही रुचि रखे है,**
तो फिर उसी के अनुसार **हमे सूअर या कबूतर का शरीर मिलता है;**
जहाँ वो जीव प्रतिदिन 50-60 बार संभोग कर सकता है,
और अपनी ऐसी यौन इच्छाओं को पूरा कर सकता है,
जो इस मानव शरीर में संभव नहीं है।

अब,
ऐसी अलग अलग भौतिक इच्छाओं से बनी हमारी
चेतना के स्तर के अनुसार **84 लाख** प्रकार की
अलग अलग योनियाँ बनती हैं।

और मृत्यु के समय हम उन भौतिक इच्छाओं से बनी चेतना के जिस भी स्तर पर होते है, उसके अनुसार हमें अपनी उन इच्छाओं को पूरा करने के लिए उपयुक्त शरीर प्राप्त होता है।

जैसा कि पद्म पुराण केहता है,

जलज नव लक्षाणी : 9 लाख जलीय योनियाँ हैं,
स्थावर लक्ष विम्शति : 20 लाख पेड़ और पौधे की योनियाँ है,
कृमयो रूद्र संख्यक : 11 लाख सरीसृप योनियाँ है,
पक्षिणाम दश लक्षणं : 10 लाख पक्षी की योनियाँ है,
त्रिन्शल लक्षानी पशव : 30 लाख स्थलीय पशु की योनियाँ है,
चतुर लक्षाणी मानव : और 4 लाख मानव प्रजाति की योनियाँ है,
जिसमें देवता, राक्षस, दैत्य, गंधर्व, किन्नर, चित्त, चरण, यक्ष सभी समाहित हैं।

और **ये सभी रूप हमारी अपनी इच्छाओं से ही जन्म लेते हैं।**
हम जो भी इच्छाएँ बनाते हैं, **जैसी भी चेतना विकसित करते हैं,**
उसीसे हम अपने **शरीर की रचना करके** हमारी **जन्म और**
मृत्यु की अनंत यात्रा जारी रखते है।

अब सोचिए,

दिन-रात हम हमारे शरीर को आराम प्रदान करने और सजाने हेतु निरंतर प्रयास कर रहे है, लेकिन वास्तव में **महत्व तो मात्र हमारी चेतना ही रखती है।**

इसलिए,
साधु और तपस्वीलोग केवल जरूरत हो उतना ही शरीर पर ध्यान देते है, जिससे बस उनका शरीर स्वस्थ और स्वच्छ रहे। तथा और **सारा ध्यान वे उनकी चेतना के विकास में लगाते है।**

क्योंकि आखिर में वही तय करेगा कि हमारा अगला जन्म किसी कीड़े, पशु, पक्षी, वृक्ष का, मानव का, या फिर किसी उच्च लोक में देवता का मिलेगा।

या फिर,

हमारे पास एक और विकल्प है।

यदि हम हमारे **जीवन का उपयोग हमारी चेतना को** भगवान की ओर, **नारायण की ओर ले जाने के लिए करते है; तो** हम इससे कभी न खत्म होने वाले **जन्म-मृत्यु के चक्र से** हमेशा के लिए **बाहर निकल सकते हैं।**

और अपने मूल शाश्वत रूपमें,
हमारे शाश्वत निवास स्थान को वापस जा सकते हैं।
जो कि है **सत्, चित् एवं आनंद** (अनन्त, जाग्रत एवं आनंदित)
से युक्त **आध्यात्मिक जगत।**

जहां हमें मिलेंगे...

परमात्मा

ईश्वर, भगवान, परमेश्वर

लेकिन,

भगवान है कौन?

तो,
अलग अलग धर्मों में भगवान की
अलग अलग व्याख्याएँ हैं।

परंतु हमारा **वेदांत सूत्र (1.1.2)** एक ऐसी व्याख्या देता है,
जिस पर संसार के लगभग सभी धर्म सेहमत होंगे।

जन्माद्यस्य यतः ॥२॥
जन्मादी—उत्पत्ति आदि (उत्पत्ति + जीविका + प्रलय);
आस्य—इस (संसार) की;
यतः—किससे।

"जिनसे समस्त (अस्तित्व) उत्पन्न होता है।"

अन्य शब्दों में,

"भगवान ही सभी के स्रोत है।"

वेदांत का **अर्थ** ही होता है : वेद + अंत : **वेदों का अंतिम उद्देश्य**
जिससे हम केह सकते है की यही व्याख्या सारे वेदिक शास्त्रों से सेहमत है।

अब सोचिए,

इस दुनिया में **सब कुछ**
प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष (Perceivable & Non-Perceivable)
कही न कही से तो आया ही है।

सजीव हो या निर्जीव
सबका एक स्त्रोत तो है ही
जहां से उनकी उत्पत्ति हुई है।

उसका उत्पत्ति बिंदु खोजनेपर,
हमें पता चलेगा की वो स्त्रोत भी,
किसी अन्य स्त्रोत से आया है।
और फिर उस स्त्रोत के भी मूल को
खोजेंगे तो पता चलेगा की वो भी किसी और
महान स्त्रोत से आया है।

तो वो प्रारंभिक स्त्रोत,
जहां से सबकी उत्पत्ति शुरू होती है;
जहां से सबको स्थिरता प्राप्त होती है,
और अंत में जहां सब कुछ घुल जाता है;
हर उस प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष, सजीव, निर्जीव,
आत्मा और पदार्थ का मूल स्रोत है,

भगवान..

तो अब सवाल आता है की,

भगवान कैसे हैं?

उनके गुण कौनसे है?

सर्वव्यापक : वो, जो हर जगह उपस्थित है।
सर्वज्ञ : वो, जो सब कुछ जानते हो।
सर्वशक्तिमान : वो, जो सर्वशक्तिमान है।

कर्तु : वे वो कर सकते हैं, जो हम कर सकते है।
अकर्तु : वे वो भी कर सकते है, जो हम नहि कर सकते है।
अन्यथा कर्तु : वे वो सब भी कर सकते है, जो हम सोच भी नहीं सकते है।

लेकिन इन सबके ऊपर,
सबसे महत्वपूर्ण बात ये है,
की वो हम सभी जीवात्माओं के **परम हितैषी** है।

'सुहृदं सर्व-भूतानां' - भगवद् गीता 5.29
भगवद् गीता उनका वर्णन करने के लिए **'सुहृदं'** शब्द का प्रयोग करती है।
तात्पर्य ये है की वो मात्र एक अच्छे मित्र ही नहीं है, परंतु परम मित्र (सुहृद),
परम शुभचिंतक है, जो हमारे लिए **सबसे उचित** ही **चाहते है।**

और **हम में गलतियाँ, त्रुटियाँ** और **गलत प्रवृत्तियाँ**
होने पर भी, हमारा साथ कभी **नहीं छोड़ते है।**

भले ही हम, और यहाँ तक कि सम्पूर्ण जगत भी उन्हें ग़लत समझकर,
उन्हें कोसने लगता है, फिर भी वो हमारे लिए अच्छा ही करते हैं।
वे अपनी विशाल छवि का भी त्याग करके हमारे लिए उचित
करने के लिए हमेशा तत्पर रेहते है।

ये उनका स्वभाव है।

और ये सब भी तब, जब वे स्वयं...
भग : ऐश्वर्य
वान : से भरपूर
भगवान : समस्त ऐश्वर्यों भरपूर ...है।

इसे सरलता से समझने के लिए,
सोचिए कि बलवान, धनवान, गुणवान का क्या अर्थ है!

विष्णु पुराण के 6.5.47 वे श्लोक में पराशर मुनि
हमें **भगवान की व्याख्या** देतें है।

ऐश्वर्यस्य समग्रस्य
वीर्यस्य यशसः श्रियः
ज्ञान-वैराग्ययश् चैव
षण्णां भग इतीङ्गना ।।

अर्थात्,
हमारे परम पिता, परमेश्वर, **भगवान**, वे है जो
सभी छह ऐश्वर्यों से अनंत मात्रा में परिपूर्ण है,

1. **ताकत**
2. **यश**
3. **संपत्ति**
4. **ज्ञान**
5. **सुंदरता**
6. **त्याग**

सोचिये,

इस दुनिया में किसी के भी पास यदि इन छह ऐश्वर्य में से
कोई एक भी ऐश्वर्य थोड़ी भी अधिक मात्रा में हो,
तो वो इस दुनिया के लिए आकर्षक हो जाता है।

उदाहरण के लिए किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में सोचिए जिनसे आप आकर्षित हो।
आप ध्यान से अवलोकन करने पे समझोगे की उस व्यक्ति में इनमें से एक या
ज्यादा ऐश्वर्य दूसरों की तुलना में अधिक ही होगा।

इस दुनिया में **हम** सब **उन** व्यक्तियों **की ओर आकर्षित होते हैं जो** या तो
बलवान, धनवान, बुद्धिमान, कीर्तिवान, सौंदर्यवान या त्यागी होते हैं।

तो सोचिये हम **उन** व्यक्ति **की ओर कितने आकर्षित होंगे**
जिनके पास ये **सभी ऐश्वर्य सम्पूर्ण मात्रा में हो।**

संसार के सबसे **बलवान से भी ज़्यादा बलवंत,**

न केवल पृथ्वी पर, किंतु समस्त ब्रह्मांडों में **सबसे प्रसिद्ध,**

सबसे अमीर से अधिक अमीर,
क्योंकि अंततः पूरी सृष्टि के स्वामी वही है।

सबसे बुद्धिमान से भी अधिक बुद्धिमान,
क्योंकि प्रत्येक जीव की बुद्धि उन्ही से आती है।

सबसे सुंदर व्यक्ति या वस्तु से अधिक सुंदर,
क्योंकि वो दुनिया की सारी सुंदरता के स्रोत है।

और ये सबकुछ अनंत मात्रा में होने के पश्च्यात भी, वे **पलक जपकते ही इन
सभी ऐश्वर्यों का त्याग कर देंगे,** वो भी **उसके लिए जो निःस्वार्थ प्रेम** से
फूल, पत्ती, फल या जल की एक बूंद भी उन्हें **अर्पण करता है।**

भगवान को खुश कैसे करें?

पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति।
तदहं भक्त्युपहृतमश्नामि प्रयतात्मनः।।

- भगवद् गीता 9.26 और श्रीमद् भागवतम् 10.81.4

ये वे शब्द है जो भगवान कृष्ण के मुख से निकले थे,
जिस समय उन्होंने बचपन के उनके दरिद्र गुरुकुल मित्र
सुदामा द्वारा दिए गए सूखे चावल ग्रहण किये।

अपने मित्र के **शुद्ध निस्वार्थ प्रेम** से लिप्त, उन्होंने उन सूखे चावल के हर एक निवाले के बदले एक एक ब्रह्मांड देना शुरू कर दिया। यहाँ तक की स्वयं माँ लक्ष्मी को उन्हें रोकना पड़ा तब जाकर वे रुके, नहीं तो वे केवल मुट्ठी भर चावल के लिए अपने मित्र को सारी सृष्टि दे देते।

जी **हां, उन्हें प्रभावित करना इतना सरल है।**

वो **प्रेम भरे शुद्ध हृदय** से दी जाने वाली हर वस्तु को **स्वीकार** करते है। यदि आपके पास एक फल भी है, तो उसे चढ़ाएं, यदि फल नहीं है तो फूल चढ़ाएं, यदि फूलों की ऋतू नहीं है, तो पत्ता चढ़ाएं; और अगर पत्ते भी कम हों तो हथेली भर पानी दें।

क्योंकि भक्त का **प्रेम ही है जो भगवान को प्रसन्न करता है,**
न कि भेंट का मूल्य। उन्हें हमारी भेंट के भौतिक मूल्य से कोई संबंध नहीं है।

परंतु,

वो सबसे अधिक महत्व देते है,
उस **प्रेम को** जिस से हम भेंट चढ़ाते हैं।

तुलसी-दल-मात्रेण जलस्य चुलुकेन च।
विक्रीणीते स्वम् आत्मानं भक्तेभ्यो भक्त-वत्सलः॥

"यदि आप **सच्चे प्रेम से भगवान को** बस एक तुलसी का पत्ता एवं हथेली में भर सके उतना जल **अर्पित करते हैं, तो** बदले में **वो स्वयं को आपको अर्पित कर देंगे**, क्योंकि उन्हें मात्र प्रेम से प्राप्त किया जा सकता है।"

जरा सोचिए,

अनंत कोटि ब्रह्मांडों के स्वामी,
जिनके गुण तथा लीलाएँ वर्णन से परे हैं,
एवं जो विचार मात्र से अनंत ब्रह्मांड बना देते
और फिर से उन्मे समा भी लेते है,
वो सर्वोच्च भगवान **प्रेम** से दी गई हमारी
सबसे विनम्र भेंट को भी **स्वीकार करते है।**

श्लोक में उपयोग किया गया शब्द है '**प्रयतात्मनः**'
जिससे भगवान केहते है की,
"मैं उन लोगों की भेंट को स्वीकार करता हूं जिनके ह्रदय शुद्ध होते हैं।"

परंतु,

हर कोई उनके साथ सीधा भगवान स्वरूप में प्रेम का आदान-प्रदान नहीं कर सकता है। इसलिए वे स्वयं को तीन भिन्न रूपों में सबके लिए उपलब्ध करते है।

1. **ब्रह्म स्वरूप :**
   जो **निराकार** है,
   अव्यक्त (गुप्त) है,
   तथा **सर्वव्यापक** (हर स्थान पर उपस्थित) है।

2. **परमात्मा स्वरूप :**
   जो **प्रत्येक जीव के हृदय में** निवास करता है।
   योगी अपने **हृदय में** जिस रूप का **ध्यान करते हैं।**

3. **भगवान स्वरूप :**
   जो **साकार** है,
   जो की उनका मूल **व्यक्त** स्वरूप है,
   जो **आध्यात्मिक दुनिया में रेहते है**
   तथा **केवल** अपने **भक्तों के लिए प्रकट होते है**

श्रीमद् भागवतम् के 2.2.8-12 वे श्लोक में **परमात्मा के उस सुंदर रूप** और यहाँ तक की उनके **कद** के बारे में भी बात की गयी है,

केचित् स्वदेहान्तर्हृदयावकाशे प्रादेशमात्रं पुरुषं वसन्तम् ।
चतुर्भुजं कञ्जरथाङ्गशङ्ख- गदाधरं धारणया स्मरन्ति ॥ ८ ॥

'अन्य लोग परम पुरुष को हृदय के क्षेत्र में शरीर के भीतर निवासित रूप देते है। जो अनामिका से अंगूठे के अंत तक (औसत **आठ इंच)** चार हाथो के साथ, हाथ में एक कमल, एक सुदर्शन चक्र, एक शंख और एक गदा लिए उपस्थित है।'

अतः,

वे वास्तव में,
हमारे हृदय में उपस्थित है,
और **हम जो कुछ भी कर रहे हैं उसका अवलोकन कर रहे हैं।**
सब कुछ अच्छा, बुरा, धर्मी, अधर्मी, सब कुछ।

हमारे कृत्यों की तो बात ही छोड़िए,
हम हमारे विचार भी उनसे छिपा नहीं सकते।
वो सभी के साक्षी बनकर हमारे हृदय में खड़े है।

अब सोचिये,

वो स्थान जहां **ब्रह्मांड के स्वामी**
खड़े है, उसे हमें कितना स्वच्छ रखना चाहिए?

हमारे घर में जब कोई अतिथि या कोई बड़े व्यक्ति आते है,
तब कैसे हम सब कुछ साफ सुथरा रखते हैं?
तो फिर ये तो **हमारे जीवन में प्रवेश करने वाले**
सबसे बड़े और सबसे महत्वपूर्ण अतिथि है।

तो **क्या हमे** हमारे **हृदय** में उनके उस आसन को
लोभ, क्रोध, वासना और ईर्ष्या से भरा हुआ **रखना चाहिए?**

या हमे हमारा हृदय **साफ** रखना चाहिए,
तथा **प्रेम, धार्मिकता, दया, विनम्रता**
एवं संतुष्टि से **सुसज्जित** रखना चाहिए?

हजारों वर्षों के ध्यान और तपस्या के बाद भी **मात्र सबसे साफ हृदय के योगी** ही उनके **उस परमात्मा रूप की झांकी प्राप्त कर सकते हैं।**

परंतु,
ऐसी **तपस्या** सभी के लिए **संभव नहीं है।** भगवान का अनुभव करने के लिए
हजारों वर्षों तक ध्यान करने की **तो** बात ही **छोड़िए, हम**में से कितने लोग
इस पतित युग में **100 वर्षों तक जीवित** भी रेह सकते हैं?

लगभग **कोई नहीं।**
इसीलिए,
ईश्वर स्वयं को प्रत्येक जीव द्वारा अनुभव किए जाने तथा प्रेम के
आदान-प्रदान के लिए चार **तरीक़ों** से उपलब्ध करते है।

1. **अवतार :**

जिसमें **वे** स्वयं भिन्न-भिन्न रूप धारण करके पृथ्वी पर **आते हैं,**
धर्मी की रक्षा, अधर्मीयों के विनाश, **धर्म की स्थापना और**
सबसे अधिक महत्वपूर्ण, अपने **भक्तों के साथ**
और उनके लिए **लीलाए करने के लिए।**
अधिक विवरण के लिए भगवद् गीता 4.5 से 4.9 पढ़े..

उदहारण :
भगवान राम, श्रीकृष्ण, भगवान नरसिंह आदि..

2. **भक्तवत्सल :**

भगवान जब पृथ्वी पर अवतार लेके आते है उस समय के
अतिरिक्त भी **वे** भक्तों के लिए उनके सबसे प्रिय रूपों में और
कभी कभी उन रूपों के **विग्रह रूप में दर्शन देते है।**
अधिक विवरण के लिए भगवद् गीता 9.30 से 9.32 तक पढ़े..

उदहारण : भगवान विट्ठल, श्रीनाथजी, उडुपी कृष्ण आदि...
ध्रुव महाराज, मीरा बाई, नरसिंह मेहता, संत तुकाराम
और अन्य संत जैसे भक्तों के लिए...

3. विभूति :

अब उन लोगों के लिए जो चेतना के उस स्तर पर भी नहीं हैं जिससे
वे विग्रह आराधना भी कर सकें, उनके लिए **भगवान** हमारे चारों
ओर उन **विभूतियो के रूप** में हमसे सम्बंध बनाए रखते है
जो **हमें जीवन प्रदान करती है और हमें पूर्ण बनाती है।**
अधिक विवरण : भगवद् गीता 7.8 से 7.12 और 10.19 से 10.42

उदहारण : पानी के स्वाद के रूप में, सूर्य एवं चंद्रमा के तेज के रूप में,
अग्नि की ऊष्मा, बुद्धिमान की बुद्धि, बलवान का बल, वेदों में ॐ,
संतान के जन्म के पश्च्यात माता-पिता में उत्पन्न होना वाला प्रेम...

4. शक्ति :

अब इन समस्त विभूतियों के अतिरिक्त, संपूर्ण अस्तित्व के
प्राथमिक आठ तत्व भी उनकी ही भिन्न भौतिक **ऊर्जाएं हैं**
जिन्हें अपरा शक्ति के रूप में भी जाना जाता है।

उदहारण :
पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, मन, बुद्धि और मिथ्या-अहंकार।

और अंत में हम **जीवात्मा भी,**
वास्तव में **उनकी ही उर्जा** परा शक्ति के ही स्वरूप **हैं**।
अधिक विवरण के लिए भगवद् गीता 7.4 और 7.5 पढ़े..

तो, ये चार प्रमुख प्रकार हैं जिनसे भगवान
सभी जीवों से प्रेम का आदान-प्रदान करते है।

**परंतु क्या होगा यदि हम इनमें से भी किसी से
प्रेम का आदान-प्रदान ना कर सकें?**

क्या होगा यदि हम वेद नहीं पढ़ सकते, तपस्या, साधना, पूजा या मंत्रों का जाप भी नहीं कर सकते?

उनके लिए जो इस स्थिति पर भी नहीं हैं की उनकी चेतना किसी तपस्या, पूजा, साधना, वेद अध्ययन, या किसी भक्ति सेवा के स्तर पर ना हो; **भगवान उन्हें उनके हृदय में ब्रह्म-अनुभूति प्रदान करते है।**

परंतु उसके लिए उन्हें कुछ **योग्यता**ओ की आवश्यकता है,
जो की **है विशुद्ध प्रामणिकता, प्रबल इच्छा,**
सरल स्वभाव एवं संपूर्ण समर्पण।

यदि इन सभी योग्यताओं के साथ, कोई **पूरे मन से प्रार्थना** करता है या मदद के लिए पुकारता है, तो किसी न किसी रूप में भगवान मदद के लिए आते ही है।

उदहारण : गज मोक्ष लीला, द्रौपदी चीर हरण, पिंगला वेश्या आदि...

अधिक विवरण के लिए भगवद् गीता 10.11 पढ़िए...

अभी आइए जानते है की,

कुल अवतार कितने हैं?

10..?
नहीं।

24...?
गलत।

100....?
निकट भी नहीं।

1000.....?

अच्छा, कैसा रहेगा यदि हम आपको छः विभिन्न प्रकार के अवतार का वर्णन करे उसके पश्च्यात आप ही हमे बताएं..!

हां? तैयार? उचित है।

6 प्रकार के अवतार,

1. **पुरुष अवतार**
2. **लीला अवतार**
3. **गुण अवतार**
4. **मन्वंतर अवतार**
5. **युग अवतार**
6. **शक्त्यावेश अवतार**

आइए इन्हें एक-एक करके समझते हैं।

1) पुरुष अवतार :

पुरुष अवतार भौतिक ब्रह्मांड में **भगवान नारायण के तीन प्राथमिक विस्तार हैं**। उनसे ही भौतिक ब्रह्मांड का सृजन प्रारम्भ होता है।

1. **कारणोदक्षायी विष्णु :**

जो उस **कारण सागर में योग निंद्रा में सो रहे है,**
जिसमें अनंत ब्रह्मांड ऐसे तैर रहे हैं, जैसे समुद्र में बुलबुले।

जब वे साँस छोड़ते हैं तो वे ब्रह्मांड उनके शरीर के छिद्रों से निकलते हैं और उनके साँस लेते ही वे नष्ट होकर पुनः उनके शरीर में समा जाते हैं।

कारण सागर एक ही है ,
अतः **कारणोदक्षायी विष्णु** भी **मात्र एक ही है।**

और क्यूँकि वे **अनंत ब्रह्मांडों**, यानी की समस्त भौतिक जगत की **उत्पत्ति के अंतिम कारण** स्वरूप है, उन्हें **कारणो के कारणकार, कारणोदक्षायी विष्णु** के नाम से जाना जाता है।

2. **गर्भोदक्षायी (हिरण्यगर्भ) विष्णु:**

जो हर एक ब्रह्मांड के भीतर बसे गर्भोदक सागर में
अनंत शेष की सर्प शय्या **पर लेटे हुए है।**

सभी ब्रह्मांडों के अपने अपने एक गर्भोदक्षायी विष्णु होते है।
अतः **गर्भोदक्षायी विष्णु की संख्या अनंत है**।

तथा हर उन गर्भोदक्षायी विष्णु की नाभि से दिव्य कमल खिलता है, जिससे भगवान ब्रह्मा प्रकट होते हैं और परमात्मा के उपदेश से उस ख़ाली ब्रह्मांड में समस्त लोकों की रचना करते है।

3. क्षीरोदक्षायी विष्णु :

जो भूमंडल पर स्थित सात वर्तुलाकार महासागरों में से एक **क्षीर सागर** (दूध के सागर) **में लेटे** हुए है।

ये वो विष्णु है जो उस ब्रह्मांड के भीतर बसे **समस्त जीवों के हृदय में** परमात्मा के स्वरूप में **रेहते हैं।**

सभी देवता इन्ही भगवान विष्णु के पास प्रार्थना, याचिका या किसी भी प्रकार की मदद के लिए आते हैं।

सभी ब्रह्मांडों के अपने अपने एक क्षीरोदक्षायी विष्णु होते है। अतः **क्षीरोदक्षायी विष्णु की संख्या अनंत है।**

क्षीरोदक्षायी विष्णु जिस ब्रह्मांड में रेहते है उस **ब्रह्मांड के भरण-पोषण के उत्तरदायी** होते है।

इन तीनो पुरुषावतार विष्णु के रूप अत्यंत ही अलग अलग है, जिनका विवरण अलग अलग पुराणो में अलग अलग तरीक़ों से दिया गया है।

2) लीला अवतार :

ये **वे अवतार हैं जो भगवान** जीवों को **अपनी लीला दिखाने** के लिए लेते हैं। ये अवतार हर कल्प में होते हैं अतः इन्हें सामान्य रूप से कल्प अवतार कहा जाता हैं, जो की 25 हैं...

1. **सनत कुमार,**
2. **नारद,**
3. **वराह,**
4. **मत्स्य,**
5. **यज्ञ,**
6. **नर-नारायण,**
7. **कर्दमी कपिल,**
8. **दत्तात्रेय,**
9. **हयशीर्ष,**
10. **हम्सा,**
11. **ध्रुवप्रिया - पृश्निगर्भ,**
12. **ऋषभ,**
13. **पृथु,**
14. **नरसिम्हा,**
15. **कुर्म,**
16. **धन्वंतरि,**
17. **मोहिनी,**
18. **वामन,**
19. **भार्गव (परशुराम),**
20. **राघवेंद्र (श्रीराम),**
21. **व्यास,**
22. **प्रलम्बरी बलराम,**
23. **कृष्ण,**
24. **बुद्ध**
25. **कल्कि**

इन अवतारों में से प्रत्येक अवतार के सन्दर्भ में अधिक जानने के लिए पढ़े श्रीमद् भागवतम् का प्रथम सर्ग का तीसरा अध्याय

3) गुण अवतार :

समस्त भौतिक ब्रह्मांड प्रकृति के तीन गुणों से बना है, जो की है सत्व, रजस और तमस। इन हर एक गुण को नियंत्रित करके **ब्रह्मांड के सृजन, संचालन और विनाश करने** के लिए भगवान तीन रूप लेते है,
जिन्हें गुणावतार केहते है।

जो की है...
ब्रह्मा : रजोगुण : **सृजन**
विष्णु : सतोगुण : **संचालन** (भरण-पोषण)
महेश : तमोगुण : **विनाश**

4) मन्वंतर अवतार :

ब्रह्मा के प्रत्येक दिन में 1,000 महायुग होते हैं, जो की **चौदह मनु** (मानव जाति के पिता) के शासन काल में विभाजित हैं, जिन्हें मन्वंतर केहते है।

उन प्रत्येक मनुओं के शासनकाल से जुड़े अवतारों
को मन्वंतरावतार कहा जाता है।

1. **यज्ञ,**	8. **सर्वभौम,**
2. **विभु,**	9. **ऋषभ,**
3. **सत्यसेन,**	10. **विश्वकसेन,**
4. **हरि,**	11. **धर्मसेतु,**
5. **वैकुंठ,**	12. **सुधाम,**
6. **अजित,**	13. **योगेश्वर और**
7. **वामन,**	14. **बृहद्भानु**

मन्वंतर अवतारों के सन्दर्भ में अधिक जानने के लिए श्रीमद्भगवतम के आठवे सर्ग का प्रथम, पाँचवाँ तथा तेरहवाँ अध्याय पढ़े।

5) युग अवतार :

हमारे चार युगों (सत्य, त्रेता, द्वापर, कलि) में **प्रत्येक युग में भगवान युग के अनुसार भिन्न भिन्न रंग के शरीर के साथ अवतार लेते हैं।** इन अवतारों को शास्त्रों में युगावतार कहा गया है।

आसन् वर्णास्त्रयो ह्यस्य गृह्णतोऽनुयुगं तनूः ।
शुक्लो रक्तस्तथा पीत इदानीं कृष्णतां गतः ॥ १३ ॥

'कृष्ण हर हजारो वर्षो में अवतार के रूप में प्रकट होते हैं। अतीत में, उन्होंने तीन भिन्न-भिन्न रंगों को ग्रहण किया - सफेद, लाल तथा पीला - और अब वे एक काले रंग में प्रकट हुए हैं।'

- श्रीमद् भागवतम् 10.8.13

6) शक्त्यावेश अवतार :

जब **भगवान स्वयं** अपने छः ऐश्वर्यों में से किसी एक विशेष ऐश्वर्य शक्ति का प्रदर्शन करते हुए विस्तृत होते हैं तो उन्हें **साक्षत** अवतार कहा जाता है।

जब **भगवान** किसी जीव को कोई **विशेष शक्ति** के साथ, उनका प्रतिनिधित्व करते हुए किसी विशेष कार्य के लिए सशक्त करते हैं, तो उस अवतार को **आवेश** (अप्रत्यक्ष) अवतार कहा जाता है।

ऐसे अनंत शकत्यावेश अवतारों में से कुछ है,
चार कुमार : ज्ञान : **ज्ञानावेश**
नारद : भक्ति सेवा : **भकत्यावेश**
ब्रह्मा : ब्रह्मांड का निर्माण करने : **सृष्टि-शक्त**
अनंत सेसा : भुमण्डला धारण : **भू-धारणा-शक्ति**
शेष नाग (वैकुंठ) : व्यक्तिगत सेवा : **स्व-सेवा-शक्ति**
कपिला और ऋषभ : दिव्य अवशोषण : **भगवद आवेश**
पृथु : जीवों को पालने की शक्ति : **पालन शक्ति**
वेद व्यास : वेदों का संकलन : **ज्ञानवेश**
परशुराम : दुष्टों का नाश : **धूल-दमन-शक्तिः**

अब बताइए,
क्या निष्कर्ष निकाला आपने?

भगवान के कितने अवतार है?

जैसे समुद्र की लेहरों की कोई सीमा नहीं होती,
वैसे ही **भगवान के अवतार की कोई सीमा नहीं है।**
- श्रीमद् भागवतम् 1.3.26

अर्थात् वे **अनंत** है।

तथा ये भी जान ले की अभी तक हमने अंश, अंशांश (अंश का भी अंश), आवेश (जीव में प्रवेश), कला (एक पूर्ण भाग), पूर्ण, और परिपूर्णतम (सबसे पूर्ण) इन सब रूपों की तो बात शुरू भी नहि की।

अभी,

इन सभी विस्तारों के सिवाय,
भगवान ने अपनी **शक्तियों** का विस्तार कर के उन्हें **स्वर्गीय पदों को सौंपा,**
जिन्हें प्राप्त करने पर जीव को विशेष स्तर की शक्तियाँ दी जाती है।
और उन पद और शक्तियों के अनुसार उन्हें विशेष जवाबदारियों
का उत्तरदायित्व पूरा करने के लिए दी जाती है।

इन दिव्य पदों को कहा जाता है...

देवी देवता

आइए,
पेहले ये समझते है की आख़िर,

देवता कौन होते हैं?

हर छोटी या बड़ी योजना को ठीक से चलाने के लिए **पद अनुसार प्रशासन** की आवश्यकता होती है। यहाँ तक कि ब्रह्मांड को चलाने के लिए भी...

तो **देवी देवता** इस ब्रह्मांड की योजना के वे **अनुक्रमित पद** या उपाधियां **हैं, जिन्हें** ब्रह्मांड के **प्रशासन का उत्तरदायित्व** तथा उन्हें पूर्ण करने के लिए कुछ शक्तियां **प्रदान की गयी है।**

पद अनुसार प्रशासन : Hierarchical Administration
अनुक्रमित पद : Hierarchical Posts
प्रशाशन से जुड़े उत्तरदायित्व : Administrative Responsibilities

देवताओं के लक्षण

- **देवता का पद कैसे पा सकते है?**
  देवता का पद मुख्यतः शास्त्रोक्त निश्चित कठिन **कार्मिक, पवित्रता तथा तपोबल की आवश्यकताओं** को पूरा करके, या फिर केवल **भगवान को प्रसन्न करके पाया जा सकता है।**

  जैसे की केवल श्रीनारायण को प्रसन्न करके बाली महाराज ने इंद्रलोक और ध्रुव महाराज ने ध्रुव लोक प्राप्त किया।

- **देवताओं को शक्ति** उनके दैविय पद मिलती है, तथा उस दैविय पद को शक्ति **भगवान द्वारा** सौंपी गई होती **है।**

- देव के पदों पर बैठे लोग **हर कल्प में बदलते हैं।** जैसे कि...
  वर्तमान में **देवराज इंद्र** के पद पर **पुरंदर** नाम के व्यक्ति बैठे है।
  जिसपे आने वाले कल्प में **बाली** महाराज बैठेंगे।
  वर्तमान में **सूर्यदेव** के पद पर **विवस्वान** नाम के व्यक्ति बैठे है।
  जिसपे अगले कल्प में कोई और बैठेगा।

- अपने जीवन के अंत में अधिकतर समय वे अपनी उत्तम सेवा और भगवान विष्णु के प्रति अपनी भक्ति के कारण अन्य **उच्च पदों पर आसीन** होते हैं, परंतु कभी-कभी वे निचले पदों पर भी गिर सकते हैं या **मनुष्य योनि में वापस भी आ सकते हैं।**

- कोई भी जीव (जी हाँ, हम और आप भी) किसी भी देवता का स्थान उस पद की **आवश्यकताओं को तपस्या से पूरा करके ले सकता है।**

- परंतु वे सभी विभिन्न **देवताओं का स्थान** अंततः अंत में **परमात्मा भगवान का ही प्रतिनिधित्व करते हैं।**

एकोदेवः सर्वभूतेषु गूढ़ः।

तो आइए, अब जानते है की,

कितने देवी देवता है?
33 कोटि या 33 करोड़?

चलिए, गणना करें।

प्रारम्भ करते है,
त्रिदेव : ब्रह्मा, विष्णु, महेश
त्रिदेवी : सरस्वती, लक्ष्मी, पार्वती

इनमे से भी भगवान विष्णु के
असीमित रूपों में से कुछ रूप हैं,

3 विष्णु पुरुष :
कारणोदक्षायी विष्णु
गर्भोदक्षायी विष्णु,
क्षीरोदक्षायी विष्णु

24 विष्णुरूप :
वासुदेव, केशव, नारायण,
माधव, पुरुषोत्तम, अधोक्षजा,
संकर्षण, गोविंदा, विष्णु,
मधुसूदन, अच्युत, उपेंद्र,
प्रद्युम्न, त्रिविक्रम, नरसिंह,
जनार्दन, वामन, श्रीधर,
अनिरुद्ध, हृषिकेश,
पद्मनाभ, दामोदर,
हरि और कृष्ण।

हालांकि ये रूप आध्यात्मिक दुनिया तथा हमारे ब्रह्मांड से बाहर स्थित हैं,
इसलिए हम इनकी गणना देवताओं में नहीं करेंगे।

इनके उपरांत,

त्रिदेवियों के **असंख्य** रूपों में से,
कुछ हैं..

12 सरस्वती:
महाविद्या, महावाणी,
भारती, सरस्वती, आर्य,
ब्राह्मी, महाधेनु,
वेदगर्भ, ईश्वरी,
महालक्ष्मी, महाकाली
और महासरस्वती।

8 लक्ष्मी:
आदि लक्ष्मी,
धन लक्ष्मी,
धान्य लक्ष्मी,
गज लक्ष्मी,
संताना लक्ष्मी,
वीर लक्ष्मी,
विजय लक्ष्मी,
विद्या लक्ष्मी

12 गौरी:
उमा, पार्वती, गौरी,
ललिता, श्रोत्तमा, कृष्णा,
हेमवती, रंभा, सावित्री,
श्रीखंड, तोता
और त्रिपुरा

साथ ही **200+ क्षेत्रीय देवीयां** जिनकी आज भी पूरे भारत में ग्रामीण तथा अर्ध-ग्रामीण क्षेत्रों में पूजा की जाती है।

अभी,
आगे बढ़ते है,

आदित्य-विश्व-वसवस् तुषिताभास्वरानिलाः
महाराजिक-साध्याश् च रुद्राश् च गणदेवताः ॥10॥
-नामलिङ्गानुशासनम्

33 प्रमुख देवता +
36 तुशिता +
10 विश्वदेव +
12 साध्यदेव +
64 आभास्वर+
49 मारुत +
220 महाराजिक = **424 देवता और देवगण:**

गण : सेना, सेवक, घनिष्ट सहयोगी या विशेष देवता की सेवा
करने वाला देवताओं का व्यक्तिगत सेवक समुदाय।

जैसे कि भगवान शिव के गणों को **शिवगण** कहा जाता है।
इन्द्र के गण को **इन्द्रगण** केहते हैं। इसी प्रकार अधिक रूप से
प्रमुख देवताओं में ऐसे गण समुदाय हैं और वे **असंख्य** हैं।

तथा, जैसे सभी **देवों के देव देवाधिदेव महादेव** हैं,
वैसे ही **सभी गणों के नेता गणाधिपति, गणपति गणेश** हैं।
उनकी पूजा करना अर्थात सभी ग़णो की पूजा करना।

इनके उपरांत,
वेदों में भी **10 आंगिरसदेव** एवं **9 प्रकार के देवगण** का भी उल्लेख है।

33 प्रमुख देवता:
12 आदित्य + 8 वसु + 11 रुद्र + 1 इंद्र + 1 प्रजापति
कुछ शास्त्रों में इंद्र और प्रजापति के स्थान पर 2 अश्विनी कुमार स्थित होते है।

12 आदित्य:
1. अंशुमान, 2. आर्यमन, 3. इंद्र, 4. तवष्ट,
5. धातु, 6. परजन्य, 7. पूषा, 8. भगा, 9. मित्रा,
10. वरुण, 11. विवस्वान और 12. विष्णु।

8 वसु:
1. आप, 2. ध्रुव, 3. सोम, 4. धार, 5. अनिल,
6. अनल, 7. प्रत्यूष और 8. प्रभास।

11 रुद्र:
1. शंभू, 2. पिनाकी, 3. गिरीश, 4. स्थानु, 5. भरगा,
6. भाव, 7. सदाशिव, 8. शिव, 9. हर, 10. शर्वा: और 11. कपाली।

ये **11 रुद्र, यक्षों और दस्युजन** के भी **देवता** हैं।
तथा कल्प बदलने पर रुद्र और उनके नाम भी बदल जाते हैं।

उदहारण:
ये **अन्य कल्प के** अन्य शास्त्रों में उल्लिखित **अन्य रुद्रों के नाम** हैं।
1. मनु, 2. मन्यु, 3. शिव, 4. महत, 5. ऋतुध्वज, 6. महिनस,
7. उमतेरस, 8.काल, 9.वामदेव, 10.भव तथा 11. धृत-ध्वज।

2 अश्विनी कुमार :
1. नस्तास्या तथा 2. दस्ता।

जो की **आयुर्वेद के आदि आचार्य** हैं, तथा **सूर्य देव के पुत्र** हैं।

36 तुषित :
36 तुषित देवताओं का वो समूह है जो विभिन्न मन्वंतर में जन्म लेते हैं। उनका एक भिन्न स्वर्ग है तथा उनके नाम पर एक भिन्न ब्रह्मांड भी है।

10 विश्वदेव :
1. वासु 2. सत्य 3. क्रतु 4. दक्ष,
5. कला 6. काम 7. धृति 8. कुरु
9. पुरुरवा 10. मद्राव,
तथा बाद में 2 और जोड़े गए
11. रोचक या लोचन, 12. ध्वनि धुरी

इनमे से पाँच विश्वदेव एक बार ऋषि विश्वामित्र के श्राप के कारण द्रौपदी के पाँच पुत्र पाँच उपपांडव के रूप में पृथ्वी पर अवतरित हुए थे। रात में अश्वत्थामा द्वारा मारे जाने के बाद वे अपने मूल स्वरूप में पुनः आ गए थे।

12 साध्यदेव :
1.अनुमन्ता 2. प्राण 3. नर 4. वीर्य 5. यान
6. चिट्टी 7. हय 8. नय 9. हंसा 10. नारायण:
11. प्रभव और 12. विभु:

64 अभस्वर :
तमोलोक में ये 3 देवनिकाय हैं।
1.भावेश्वर:
2.महाभास्वर और
3.सत्यमहाभास्वर।
अभस्वर देवता का काम भूतों, इन्द्रियों और बुद्धि को नियंत्रण में रखना हैं।

12 यमदेव :
यदु, ययाति, देव और ऋतु, प्रजापति आदि को यमदेव कहा जाता हैं।

49 मारुतगण :
मारुत **देवताओं के सैनिक** हैं। वेदों में इन्हें **रुद्र और वृष्णि के पुत्र** बताए गए है, जबकि पुराणों में इन्हें **कश्यप और दिति के पुत्र** बताए गए है। कल्पभेद।

7 मारुत : और उनके 7-7 मरुदगण तथा उनके आंदोलन क्षेत्र :
1. **आवाह**, ब्रह्मलोक
2. **प्रवाह**, इंद्रलोक
3. **संवाद**, अंतरिक्ष
4. **उदवा**, पृथ्वी के पूर्व
5. **विवाह**, भुलोक के पश्चिम में
6. **परिवाह**, भुलोक के उत्तर में
7. **परवाह**, पृथ्वी के दक्षिण में

इस प्रकार कुल **49 प्रमुख मरुत** हैं। **कुल संख्या** को कभी-कभी 180 कही जाती है। वे **अंतरिक्ष** में और **फूलों** में रेहते हैं। वे अपने देवता के लिए **देवों के रूप** में विचरण करते हैं।

220 महाराजिक :
एक प्रकार के देवता है जिनकी संख्या 226 या 236 और कहीं 4000 बताई जाती है। महाराजिकाओं के संदर्भ में अधिक जानकारी उपलब्ध नहीं है।

9 ग्रह देवता :

1. **सूर्यदेव**
2. **सोमदेव (चंद्र देव)**
3. **मंगल / कुज**
4. **बुध**
5. **गुरु / बृहस्पति**
6. **शुक्र**
7. **शनिदेव**
8. **राहु**
9. **केतु**

मुख्य श्रेणियों के सिवा अन्य देवता :
गणाधीपति गणेश, कार्तिकेय, धर्मराज, चित्रगुप्त, आर्यमा, हनुमान, भैरव, वन, अग्निदेव, कामदेव, चंद्र, यम, शनि, सोम, रिभुः, द्युह, सूर्य, बृहस्पति, वाक, काल, अन्ना, वनस्पति, पर्वत, धेनु, सनकदि गरुड़, अनंत शेष, वासुकी, तक्षक, कर्कोटक, पिंगला, जय, विजय एवं बहुत सारे...

मुख्य श्रेणियों के सिवा अन्य देवियाँ :
भैरवी, यामी, पृथ्वी, पूषा, आप: सविता, उषा, औषधि, अरण्य, ऋतु, तवष्ट, सावित्री, गायत्री, श्री, भूदेवी, श्रद्धा, शची, दिति, अदिति एवं बहुत सारी...

स्थानीय देवता :

1. **द्यु-स्थानीय:** : आकाश और स्वर्ग :
   सूर्य (प्रमुख), वरुण, मित्र, पूषन, विष्णु,
   उषा, अपानपत, सविता, त्रिपा, विंवासवत,
   आदित्यगण, अश्विनीवय आदि।

2. **मध्य-स्थानीय :** अंतरिक्ष :
   परजन्य, **वायु** (प्रमुख), इंद्र, मारुत,
   रुद्र, मातरिस्वन, त्रिप्रपत्य, अज एकपाद,
   आप, अहितबुधन्य आदि।

3. **पृथ्वी-स्थानीय :** पृथ्वी पर :
   पृथ्वी, उषा, **अग्नि** (प्रमुख), सोम,
   बृहस्पति, नदियाँ आदि।

4. **पाताल-लोकिय :**
   शेष नाग और वासुकी आदि।

5. **पितृ-लोकिय :**
समस्त मानवता के नौ दिव्य पित्रुओ को अग्रिसवत्ता, बरहीशद अजयप, सोमेप, रश्मिपा, उपदूत, अयंतुन, श्राद्धभुक और नंदीमुख के रूप में जाना जाता है। समस्त **पित्रुओं के देवता आर्यमा** हैं।

6. **नक्षत्र के अधिपति :**

- **चैत्र** मास में **धात,**
- **वैशाख** में **आर्यमा,**
- **ज्येष्ठ** में **मित्र,**
- **आषाढ़** में **वरुण,**
- **श्रावण** में **इंद्र,**
- **भाद्रपद** में **विवस्वान,**
- **अश्विन** में **पूसा,**
- **कार्तिक** में **परजन्या,**
- **मार्गशीर्ष** में **अंशु,**
- **पौष** में **भाग,**
- **माघ** में **त्वष्टा** और
- **फाल्गुन** में **विष्णु** है।

सूर्य को अर्घ्य चढ़ाते हुए इनको याद करना चाहिए।

7. **दस दिशाओं के 10 दिग्पाल:**

- **ऊपर** के **ब्रह्मा,**
- **उत्तर** के **शिव** और ईश,
- **पूर्व** के **इंद्र,**
- **अज्ञेय** की **अग्नि** या वाहरी,
- **दक्षिण के यम,**
- **नैरुत्य** की **नारुति,**
- **पश्चिम** के **वरुण,**
- **वायव्य** के **वायु** और मारुत,
- **उत्तर** के **कुबेर** और
- **नीचे** के **अनंत शेष।**

इनके सिवाय,

1. ऋग्वेद के केवल दो सूक्तों (3.9.9 और 10.52.6) में ही **3339 देवताओं** का उल्लेख किया गया है।
2. मत्स्य पुराण में **कई सौ देवियों** की सूची भी है।
3. केवल अप्सराओं की संख्या भी **60 करोड़** को पार करती है, जो की समुद्र मंथन से निकलकर गंधर्व-लोक को चली गई थी।
4. तथा हमने अभी भी यक्ष, किन्नर, गंधर्व, किमपुरूस आदि **असंख्य अर्ध-देवता**ओं की गणना नहि की है, जो की सभी स्वर्गीय ग्रहों के निवासी हैं और **देवताओं की तुलना में कम शक्तिशाली** हैं परंतु **पृथ्वी वासियों की तुलना में अधिक**।

तो क्या मिला आपको हमारे लोकप्रिय प्रश्न का उत्तर,

कितने देवी-देवता है?
33 कोटि? या 33 करोड़?

ना तो 33 कोटि,
ना ही 33 करोड़।

उत्तर है की,
वे बदलते रेहते हैं।
जैसे पृथ्वी पर मनुष्यों की कोई स्थिर संख्या नहीं है,
वैसे ही **स्वर्ग में देवताओं की भी कोई स्थिर संख्या नहीं है।**

मनुष्य की तरह ही वे भी जन्म लेते हैं,
उनका जीवन काल भी समाप्त होता है और
फिर एक और बार नए देवताओं के साथ ये चक्र फिरसे चलने लगता है।

तो अगला बड़ा प्रश्न होगा..

कौन से देव क्या करते है?

ब्रह्मा-सरस्वती : सृजन तथा ज्ञान
विष्णु-लक्ष्मी : भरण-पोषण तथा ऐश्वर्य
शिव-पार्वती : विसर्जन और ऊर्जा
कार्य विभाजन के अनुसार, **पत्नियां पतियों की शक्तियां होती हैं।**

इंद्र :
इंद्र **वर्षा, बिजली** तथा **स्वर्गीय सिंहासन** की देखभाल करते हैं।
हर मन्वंतर में इन्द्र के पद पर एक अलग व्यक्ति होता है।

इस कल्प के **14 इंद्र** हैं : यज्ञ, विपासित, शिबि, विधु, मनोजव, पुरंदर (वर्तमान के), बाली, अद्भूत, शांति, विश, ऋतुधाम, देवस्पति और सुचि।

अग्नि :
इंद्र के बाद अग्नि पदानुक्रम देव महत्ता में दूसरे स्थान पर है। **देवी देवताओं को** दिया जाने वाला हर **प्रसाद अग्नि के माध्यम से ही आता है।**

सूर्य :
दृश्यमान सूर्य को **जगत की आत्मा** कहा गया है।
जो की पृथ्वी पर समस्त **जीवों को जीवन देते है।**

वायु :
वायु को पवनदेव के नाम से भी जाना जाता है। वे सर्वव्यापी है, **सर्वत्र विद्यमान** है। वही प्राणवायु है। उनके बिना एक पत्ता भी नहीं हिल सकता तथा उनकी अनुपस्थिति में सारी सृष्टि थम जाएगी।

वरुण :
वरुणदेव **जल जगत पर राज करते हैं।** उन्हें देव और दानव दोनों के रूप में लिया जाता है। वो पानी को बर्फ के रूप में सुरक्षित रखते है तथा **बादलों और वर्ष के वितरण** का भी ध्यान रखते है।

यमराज :
यमराज **मृत्यु विभाग के प्रमुख** हैं। उनके **दो स्वरूप हैं**,
एक **भयावह** है जो नरक में प्रवेश करने वाली पापी आत्माओं के लिए है।
और दूसरा **सौम्य** (सुंदर) है जो पवित्र आत्माओं, देवताओं तथा
संत आत्माओं के लिए है।

कुबेर :
कुबेर देवताओं के **कोषाध्यक्ष** हैं।
उनके पास शरीर एक यक्ष का है परंतु उत्तरदायित्व एक देवता का है।

मित्रदेव :
मित्रदेव देवताओं तथा देवग़णो के **बीच संचारक** के रूप में कार्य करते हैं।
वे प्रामाणिकता, मित्रता तथा व्यावहारिक संबंधों के प्रतीक है।

कामदेव :
कामदेव तथा रति ब्रह्मांड में सभी **प्रजनन गतिविधियों के निर्देशक** हैं।
इनके बिना ब्रह्मांड की कल्पना नहीं की जा सकती।

कामदेव के शरीर को भगवान शिव ने जलाकर राख कर दिया था, अतः उन्हें
अनंग (बिना शरीर) भी कहा जाता है। शिवजी की ये लीला हमें ये सिखाती है
की वासना बिना किसी भौतिक अस्तित्व के बस एक क्षणभंगुर अनुभूति है।

अदिति और दिति :
दोनों को भूत, भविष्य, चेतना और **जनन क्षमता की देवी** माना जाता है।

धर्मराज और चित्रगुप्त :
वे संसार के **कर्मों का लेखा-जोखा** रखते हैं तथा यमराज स्वर्ग और
नरक के मुख्यालय का भी प्रबंधन और समन्वय करते हैं।

आर्यमन :
वे आदित्यों में से एक हैं और शरीर छोड़ चूकि आत्माओं के शासक हैं,
अर्थात् वे **पूर्वजों के देवता** हैं।

गणेश :
भगवान शिव के पुत्र गणेश को **देवगणों के अधिपति** नियुक्त किया गया है। उनका वाहन चूहा है तथा उन्हें **बुद्धि एवं समृद्धि के देवता** कहा गया है। उन्हें **विघ्ननाशक** के रूप में भी जाना जाता है। उनकी **रिद्धि** एवं **सिद्धि** नाम की **दो पत्नियां** हैं।

कार्तिकेय :
भगवान शिव के पुत्र कार्तिकेय **वीरता के देवता** हैं और वे देवताओं के सेनापति हैं। उनका एक नाम **स्कंद** भी है उनका वाहन मोर हैं। उनकी पूजा दक्षिण भारत में प्रचलित है। इराक, सीरिया आदि जगहों पर रेहने वाले यजीदी इन्हे अपने समुदाय के मानते हैं।

देवर्षि नारद :
नारद **सर्वोच्च वैष्णवों में से एक है।**
वे सभी शास्त्रों के पिता **व्यासदेव** एवं **वाल्मीकि** दोनों के **गुरु** हैं।
वे देवों के ऋषि होने से उन्हें देवर्षि नारद कहा जाता है।

तीनों लोकों में जाने में सक्षम होने के कारण, वे **देवताओं के दूत** की सेवा भी करते है। वे ब्रह्मांड में होने वाली सभी घटनाओं के बारे में अवगत रेहते है।

हनुमान :
रामदूत हनुमान, **सबसे शक्तिशाली देवता है।** वे अभी भी शारीरिक रूप से जीवित हैं क्योंकि वे आठ चिरंजीवी में से एक हैं। वो पवनदेव के पुत्र हैं तथा उनमे **भगवान शिव का भी एक अंश** है।

वे **ज्ञान, शक्ति और भक्ति के देवता** हैं। उनका नाम मात्र लेने से सभी प्रकार की अनिष्ट शक्तियां तथा कष्ट दूर हो जाते हैं।

कौन किसका भगवान है?

भगवान विष्णु सभी देवताओं के **भगवान** हैं,
रुद्र (शिव) ब्राह्मणों के,
चंद्रमा या सोम **यक्ष और** गंधर्वों के,
सरस्वती विद्याधरों की,
हरि साध्य संप्रदाय के,
पार्वती किन्नरों की,
ब्रह्मा और **महादेव ऋषि मुनियों** के,
सूर्य, विष्णु और **उमा मनु** के,
ब्रह्मा ब्रह्मचारियों के,
अंबिका वैखानों की,
शिव यति के,
और **गणपति कुष्मांडा और गणों** के भगवान हैं।

परंतु इस प्रकार का श्रेणीय विभाजन हम साधारण सांसारिक **गृहस्थों** के लिए सलाह कारक नहीं है, हमारे लिए **सभी देवता पूजनीय** हैं।

गृहस्थानाञ्च सर्वेस्युः।

तथा अब आता है सबका प्रिय विषय...

किसके लिए किसकी पूजा करें ?

जी हां,
हर देवता आपकी हर याचनाओं को पूर्ण नहि कर सकते।
आपकी **विशेष इच्छाओं की पूर्ति के लिए विशेष देवी देवता** होते हैं।
गलत इच्छा के लिए गलत देवता से प्रार्थना करने से आपकी प्रार्थना तथा तपस्या व्यर्थ ही जाएगी।

तो आइए अब आपको देते है,
विशेष इच्छा के विशेष देवताओं की सूची।

जीभ की शक्ति (जिह्वा) : **वरुण देव**
वाणी की शक्ति : **अग्निदेव**
हाथों की शक्ति : **इंद्रदेव**
संतानप्राप्ति : **प्रजापति**
सौभाग्य : **दुर्गा देवी**
नियंत्रण शक्ति (परिवार, समाज) : **अग्निदेव**
यौन शक्ति : **इंद्र देव**
धन : **वसु** (हाँ, कुबेर या माता लक्ष्मी नहीं)
वीरता (आकर्षण, शिष्ट, साहस) : **शिवजी**
शिवजी सबसे जल्दी प्रसन्न होने वाले देवता है
ढेर सारा अनाज : **अदिति**
स्वर्ग प्राप्ति : **आदित्य**
पत्नी : **अप्सरा + उर्वशी**
सांसारिक साम्राज्य : **विश्वदेव**
लोकप्रियता और प्रसिद्धि : **साध्य देव**
लंबी उम्र : **अश्विनी कुमार**
मजबूत शरीर : **भूमाता**
क्यूँकि हमारा शरीर भु से बना है। आप देखते होंगे की अभ्यास और लड़ाई से पेहले अखाड़ा पहलवान भूमाता से प्रार्थना करते हैं।
.....

.....
पद पर स्थिरता : **क्षितिजदेव + भूदेवी**
सौंदर्य : **गंधर्व**
दूसरों पर प्रभुत्व : **ब्रह्मा**
लंबे समय तक चलने वाली प्रसिद्धि : **विष्णु**
अच्छा बैंक बैलेंस : **वरुण**
विद्वान बनने के लिए : **शिवजी**
अच्छे वैवाहिक संबंध : **उमा पार्वती महादेव**
आध्यात्मिक उन्नति : **भगवान विष्णु और उनके भक्त**
वंश की रक्षा और वंश की उन्नति : **अनेक देवता**
राज्य पर आधिपत्य : **विभिन्न मनु**
शत्रु पर विजय : **दैत्य**
इन्द्रिय तृप्ति : **चन्द्रमा**
ब्रह्मज्योति की प्राप्ति: **ब्रह्मा या बृहस्पति**
उपरोक्त में से कोई नहीं : **भगवान नारायण**
उपरोक्त सभी : **भगवान नारायण**

अधिक जानकारी के लिए श्रीमद् भागवतम् 2.3.2-10 पढ़ें ...

अतः,
अब आप अपनी **उचित इच्छा के लिए**
उचित देव के पास जाओगे, है ना?

शायद नहि,
एक बार जब आप प्रकृति के स्वाभाव के बारे में जानेंगे,
तब आप इनमें से किसी इच्छाओं के लिए लालायित नहीं होंगे।

क्यों?
ऐसा तो क्या है ये प्रकृति के बारे में?
आइए जानते है,

प्रकृति

माया

तो,

क्या है प्रकृति?

भगवान के पास तीन प्रकार की शक्तियाँ हैं,
अंतरंगा : आंतरिक : **आध्यात्मिक**
बहिरंगा : बाह्य : **भौतिक**
तटस्थ : सीमांत : **जीव**

तो यहाँ,
उनकी **अंतरंगा शक्ति** से **आध्यात्मिक जगत** बना है।
और **बहिरंगा शक्ति** से **भौतिक संसार**

एवं जैसा कि नाम से पता चलता है,
आध्यात्मिक जगत् आध्यात्मिक चेतना से बना है,
जो की **सत (शाश्वत), चित (चेतन) और आनंद है।**

और **भौतिक जगत् भौतिक पदार्थ से बना है,**
जो कि **असत (अस्थायी), अचित (मृत)**
और निरानंद (बिना आनंद का) है।
जिसे शास्त्र अध्यात्म जगत के छाया प्रतिबिम्ब के समान बताते है।

तथा **जीवात्मा,**
अर्थात् हम, तटस्थ शक्ति से बने **हैं।**
अर्थात हमें ये चुनना है, कि हम किस शक्ति के साथ जुड़ना चाहते हैं।
हम जिस शक्ति के साथ जुड़ते है, उस शक्ति की तरह बन जाते हैं।

आध्यात्मिक शक्ति चुनेंगे तो **सत्-चित-आनंद** बनेंगे।
और भौतिक शक्ति चुनेंगे तो **असत-अचित-निरानंद** बनेंगे।

अब ये तो हम स्पष्ट रूप से केह सकते है की हमने भौतिक संसार को चुना है।
जो **अष्टांगिक द्रव्यों** तथा **तीन गुणों** से मिलकर बनी है,
और केहलाती है,

प्रकृति..

अभी,
यहाँ से समस्या शुरू होती है।

आध्यात्मिक ब्रह्मांड सत्-चित्त-आनंद इसलिए है,
क्योंकि स्वयं सत-चित्त-आनंद का स्रोत ही उस **ब्रह्मांड का केंद्र** है,
वो है **स्वयं भगवान**।

और **भौतिक ब्रह्मांड के** सत्-चित्त-आनंद ना होने का कारण
भी यही है की कि इस **ब्रह्मांड का केंद्र है** उन सतचिदानंद
भगवान से दूर जाकर **स्वयं** को केंद्र में रखने का विचार।

जब हम सूर्य से अपना पक्ष मोड़ते हैं,
तब हमारी अपनी ही छाया,
हमें ही प्रकाशित करने वाले प्रकाश को
अवरुद्ध करके स्वयं ही अंधकार पैदा करती है।

कुछ ऐसा ही होता है जब हम **भगवान से अपना मुंह मोड़**ते हैं।
हम स्वयं ही अपने आपके लिए अंधकार पैदा करते है।

माया क्या है?

माया : वो जो नहि है..

हम जीवात्मा अग्नि की चिंगारी की भांति हैं, चिंगारी में अग्नि के सभी गुण होते हैं, परंतु हम स्वयं अग्नि की भांति शक्तिशाली नहीं होती हैं, इसलिए चिंगारी अग्नि से अपनी ऊर्जा प्राप्त करती है।

वैसे ही **हम** भगवान के अंश के रूप में,
भगवान से ऊर्जा प्राप्त करते हैं।

लेकिन यहाँ **भौतिक दुनिया** में,
हम उनसे अलग रेहना चाहते हैं,
तथा साथ में **सत चित आनंद** भी **रेहना** चाहते हैं।

जो की **संभव नहीं है।**
परंतु क्यूकि हम फिर भी ये अनुभव करना चाहते हैं,
ऐसा करने के लिए **भगवान ने हमारे लिए एक व्यवस्था की है।**
और **उस व्यवस्था को केहते हैं,**

माया..

माया हमें ऐसे **भ्रम में रखती है की,**
हम यहाँ सत चित आनंद का अनुभव कर अनंत आनंद पा **सकते है।**
हमें हमेशा ऐसे भ्रम में रखती है कि 'अनंत आनंद बस एक कदम ही दूर है,
'मुझे ये मिल जाए फिर में खुश, मुझे वो मिल जाए फिर में खुश..!!'
ये धन, ये संपत्ति, सुंदरता, स्त्री, यश...' इन सब की इच्छाएँ दिलाके हमें भ्रम में रखती है की इन इच्छाओं की पूर्ति से हम वो परम सुख प्राप्त कर लेंगे।

पर वो सब मात्र वही है,

भ्रम..

हालांकि इसलिए नहीं कि ये वास्तविक नहीं है, ये सब वास्तविक ही है।
परंतु इसलिए क्योंकि वो अस्थायी है। ये टिक नहीं सकता,
क्योंकि उसका स्वभाव ही है असत्, **अस्थाई।** क्षणभंगुर।

परंतु ऐसा क्यों?

क्योंकि प्रकृति बनी ही अचित से है,
भौतिक द्रव्य से..
अष्टांगिक, अचित्त, द्रव्य से..

जो की है
पांच स्थूल द्रव्य :

1. **धरती,**
2. **पानी,**
3. **आग,**
4. **वायु,**
5. **ईथर**

तीन सूक्ष्म द्रव्य :

1. **मन,**
2. **बुद्धि,**
3. **मिथ्या अहंकार**

ये **आठ द्रव्य तथा उनके संयोजन से** ही
संसार की समस्त भौतिक वस्तुए बनी है,
जिससे समस्त ब्रह्मांड बना है, **प्रकृति बनी है।**

तो,

माया का क्या काम है?

सरल शब्दों में समझें तो,
माया का काम है हमे हमेशा **ये सोचने पर विवश करना** की यदि हम ऐसा करोगे, वैसा करोगे, ये पाओगे, वो पाओगे, फिर **अनन्त रूप से सुख** होगा, **परंतु** जब हम ऐसा करते हैं, **तब कोई ठोस सुख नहीं होता।**

फिर फिरसे एक नया छलावा देती है की अब ये पा लो तो फिर सुखी हो जाओगे, और फिर को पाने के लिए हम दिन रात गधे की तरह मेहनत करते है, और अंत वो भी मात्र **सुख की मृगतृष्णा** ही सिद्ध होती है।

और ऐसे ही हमें माया सुख दुःख और जन्म मृत्यु के चक्र में फँसाए रखती है।

अभी,
आइए समझते है की,

माया कैसे काम करती है?

सत्त्वं रजस्तम इति गुणा: प्रकृतिसम्भवा:।
निबध्नन्ति महाबाहो देहे देहिनमव्ययम् ॥ - भगवद् गीता 14.5

अर्थात्,
संपूर्ण भौतिक प्रकृति **तीन गुणों** से बनी है,
सात्विक : Goodness : संतुष्टि, ज्ञान, पवित्रता
राजसिक : Passion : सक्रियता, जोश, उत्साह
तामसिक : Ignorance : निष्क्रियता, अज्ञान, अंधकार

जब एक **जीवात्मा भौतिक प्रकृति के संपर्क में** आती है,
तो वो इन तीन **गुणों से बद्ध हो जाती है।**

सात्विक गुण में

हम खुशी, ज्ञान, कृतज्ञता और **संतुष्टि** की भावना अनुभवित करते हैं।

मुक्तसङ्गोऽनहंवादी धृत्युत्सा हसमन्वित:।
सिद्ध्यसिद्ध्योर्निर्विकार: कर्ता सात्त्विक उच्यते।। भगवद् गीता 18.26

'सात्विक लोग **अहंकार तथा मोह से मुक्त होते हैं, उत्साह एवं दृढ़ संकल्प से संपन्न होते हैं, तथा सफलता और असफलता में अचल रेहते हैं।'**

राजसिक गुण में

हम **अंतहीन इच्छाओं, लगाव, असंतोष** और **क्रोध** को अनुभवित करते हैं
जो हमें भौतिक फल की प्राप्ति के लिए कार्य करने के लिए प्रेरित करता है।

रागी कर्मफलप्रेप्सुर्लुब्धो हिंसात्मकोऽशुचि :।
हर्षशोकान्वित: कर्ता राजस: परिकीर्तित:।। भगवद् गीता 18.27

राजसिक लोग **कर्म के फल के लिए तरसते हैं, वे लोभी, हिंसक-स्वभाव वाले, अशुद्ध होते है और सुख-दु:ख से निरंतर प्रभावित होते रेहते हैं।**

तामसिक गुण में

हम **आलस्य, पागलपन, निद्रा, निष्क्रियता** का **अनुभव** करते हैं
तथा अपने ज्ञान को ढँक कर भ्रम में रेहना पसंद करते हैं।

अयुक्त: प्राकृत: स्तब्ध: शठो नैष्कृतिकोऽलस:।
विषादी दीर्घसूत्री च कर्ता तामस उच्यते।। भगवद्गीता 18.28

तामसिक लोग **अनुशासनहीन, अशिष्ट, हठीले, छल करने वाले, आलसी, निराश और हर काम में विलंब करने वाले होते हैं।**

अभी,
हम जैसी इच्छाएँ रखते हैं उसके आधार पर,
प्रकृति के ये **तीन गुण हमें कार्य करने को प्रेरित करते हैं।**

फिर उन कार्यों की प्रकृति के अनुसार,
या तो पुण्य कर्म के **फलो का आनंद भोगने**, या पाप **कर्मो की सजा भोगने** के लिए हमें इस **भौतिक ब्रह्मांड में बार बार जन्म लेना पड़ता** हैं।

हम सोचते हैं कि हम प्रकृति के नियमों को तोड़-मरोड़कर उसमे से जितना हो सके सुख और आनंद निचोड़ लेंगे। परंतु होता ये है कि **प्रकृति को भोगने के प्रयास में वो हमें ही उसकी जटिलताओ में उलझा देती है।**

और कुछ **अस्थायी सुख की खोज में** हम **स्वयं को दुखों के इस भवसागर में हमेशा के लिए बंदी बनाए रखते हैं**। इस भौतिक प्रकृति को भोगने का हमारा ये **भ्रामक संघर्ष** अनादि काल से चला आ रहा है और हमें हमेशा इसमें भरे घोर दु:खों को अनदेखा करवाता रेहता है।

हमारे आचार्य भौतिक जगत में मिलते उन छोटे से सुख की तुलना चूहे के जाल में लटके पनीर के टुकड़े से करते हैं। जिसे पाने के लिए, चूहा स्वयं को दु:खों के जाल में फेंक देता है।

जैसे हम अपने आप को अटल दु:खों से भरे
इस भौतिक अस्तित्व में फेंक देते हैं।

परंतु,
कौनसे है वे अटल दु:ख?

भौतिक संसार के **चार अटल दुःख :**

1. **जन्म**
2. **मृत्यु**
3. **जरा :** बुढ़ापा
4. **व्याधि :** रोग

ये चार दुःख ब्रह्मांड के हर जीव के लिए निश्चित हैं।
जिनसे कोई नहीं बच सकता।

तथा इनके उपरांत,
तीन प्रकार के अचल दुःख तो हैं ही:

1. **आदि आत्मिक :**
    - **दुःख** जो हमारा **अपना तन और मन** हमें **देता है।**
      जैसे कि, बीमारीयां, घाव, निराशा (Depression), चिंता, व्याकुलता (Anxiety), मानसिक त्रास एवं पीड़ा।
2. **आदि भौतिक :**
    - **दुःख** जो **अन्य जीव** हमें **देतें है।**
      जैसे कि, परिवार, मित्र, पड़ोसी तथा समाज से मिलने वाले छोटे बड़े दुःखों से लेकर, युद्ध, भुखमरी, अपराधों, राजनीतिक झगड़ो, सामूहिक हत्याओ जैसी त्रासदियों तक के समस्त जघन्य दुःख।
3. **आदि दैविक :**
    - वो **दुःख** जो **देवता** हमें **देते हैं।** जिसे बीमा कंपनियां 'एक्ट ऑफ गॉड' केहती हैं। जैसे कि बाढ़, भूकंप, अकाल, सुनामी, सूखा, आंधी तथा इस प्रकार की अन्य प्राकृतिक आपदाएँ।

माया क्यों काम करती है?

माया इसलिए काम करती है,
क्योंकि जब वो हमें भौतिक सुखों का
प्रलोभन देती है, तो उससे हममें **अनर्थ का उद्‌भव** होता है।
जो की है, **काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मात्सर्य** (ईर्ष्या)।

यदि हम उन प्रलोभनों में न पड़ें और अपने हृदय में अनर्थों को
उत्पन्न न होने दें तथा अपने आप को पूर्ण रूप से भगवान को
समर्पित कर अपने **हृदय को शुद्ध रखें**,
तो माया का हम पर कोई असर नहीं होगा।

क्या माया हमारे लिए इतनी बुरी है?

माया देवी कोई और नहीं बल्कि **स्वयं मां दुर्गा हैं।**
वे हमारी **शिक्षिका** है, हमारी **माँ** है।
वे **भगवान शिव की पत्नी** तथा **भगवान विष्णु की बेहेन** हैं।

वो ये **सुनिश्चित** करती है कि **केवल शुद्ध आत्माएं** ही इस भौतिक
ब्रह्मांड के सागर को पार करके **आध्यात्मिक दुनिया तक पहुंच पाए।**
ये सुनिश्चित करती है की आध्यात्मिक दुनिया में रेहने वाली शुद्ध हृदय
वाली जीवात्माएँ हमारे जैसे कामी, क्रोधी, लोभी और ईर्ष्यालु
हृदय वाली आत्माओं से परेशान न हों।

इसीलिए,
आचार्य इस **भौतिक संसार** की तुलना एक **जेल** से और **माया देवी**
की **जेल मालिक** से करते है। जो ये सुनिश्चित करती है कि कोई भी
जीवात्मा अपने **हृदय** का **शुद्धिकरण** किए **बिना भौतिक जगत**
की जेल **से बाहर न जा पाए।**

प्रकृति क्यों है?

भौतिक प्रकृति के अस्तित्व का उद्देश्य क्या है?

भौतिक अस्तित्व का उद्देश्य,
हमारी **इच्छाओं को शुद्ध करके हमें शुद्ध करना** और हमें **भगवान के सेवक के रूप में हमारे मूलभूत स्वभाव की अनुभूति कराना है।**
जो की हम वर्तमान में प्रकृति के भोक्ता होने के भ्रम में जी रहे है।

जैसे ही हम ये परम सत्य को समझ जाते हैं,
हम **माया के सभी प्रभावों से मुक्त** हो जाते हैं और **भगवान के साथ अपने शाश्वत संबंध को फिर से स्थापित कर** हमारे शाश्वत घर, अध्यात्म जगत को **वापस लौटकर, भगवान के पास वापस लौटकर,**
पुनः सदैव के लिए सुखी हो सकते हैं।

जीवन के इस अंतिम ध्येय को प्राप्त करने की प्रक्रिया को केहते है...

योग

तो क्या है योग?

उसके बारे में जाने उससे पेहले,
ये जान लेते है की,
योग क्या नहि है!

सर के बल खड़े रेहना,
हाथ पैरो को मरोड़ना,
शरीर की **स्ट्रेचिंग करना,**
या ऐसे **और कोई भी शारीरिक व्यायाम,**

..योग नहि है।

इनको **अंग मर्दन** केहते है।
जो की अष्टांग योग के आठ अंगो के
तीसरे अंग, **'आसन'** का बस एक भाग है।

और आँखे बंद करके **शून्य पर**
ध्यान धरते हुए सो जाना **भी** कोई,

..योग नहि है।

तदुपरांत **ऐसे वे सारे सेंकडो व्यायाम** जिनमें लड़के लड़कियाँ ऐथ्लेटिक
कपड़े पेहनकर अपनी योगा मैट्स पे अलग अलग तरीक़े से स्ट्रेचिंग करते है,
उन्मे से **भी** कोई..

..योग नहि है।

तो फिर,
आख़िर **योग है क्या?**

योग का अर्थ इन **शारीरिक** जिम्नास्टिक **कसरतों,**
(जिन्हें हम योग मानते हैं) **उनसे कहीं ज़्यादा बड़ा है।**

परंतु फिर भी अगर सरल शब्दों में बताएँ तो....

'**योग**' शब्द संस्कृत के '**युज**' धातु से बना है,
जिसका अर्थ होता है '**जुड़ना**', '**जोड़ना**' या '**मिलना**'।

तो **योग का अर्थ** होता **है,**
आत्मा को परमात्मा से जोड़ने
या मिलाने की आध्यात्मिक प्रक्रिया।

इस योग की **मुख्य पांच पद्धतियां** हैं,

1. **अष्टांग योग,**
2. **ध्यान योग,**
3. **कर्म योग,**
4. **ज्ञान योग,**
5. **और भक्ति योग**

और इनमे से कोई भी **योग अभ्यास** करने **के** लिए साधक
में प्राथमिक **पाँच आवश्यकताएं** होना झरूरी है,

1. **उत्साह,**
2. **धैर्य,**
3. **निश्चय** (दृढ़ संकल्प)
4. **साहस,**
5. **और त्याग** (एकांतवृत्ति)

तो आइए,
इनमे से प्रथम समझते है,

अष्टांग योग

(हठ योग)

अष्ट+अंग : आठ अंग
हठ : बल करना, सख्ती करना

हठ योग प्रणाली में साधक अपने **शरीर, श्वास और मन को बल पूर्वक नियंत्रित करके** अपनी चेतना को अपने शरीर से अलग से अनुभव करता है। फिर उस **चेतना को** नियंत्रित करके उसे **मोक्ष के स्तर पे ले जाता है।**

इस अष्टांग योग प्रणाली के कुल **आठ अंग** (चरण) हैं :

1. **यम**
2. **नियम**
3. **आसन**
4. **प्राणायाम**
5. **प्रत्याहार**
6. **धारणा**
7. **ध्यान**
8. **समाधि**

इन अंगों के अभ्यास से साधक धीरे-धीरे अपने जीवन के सारे पेहलू को नियंत्रित करता हैं, जिससे फिर वो **अपनी भौतिक इंद्रियों, सूक्ष्म इंद्रियों, मन, तथा** अंतमें अपनी **चेतना को नियंत्रित करने में सक्षम बनता है।**

इन आठ अंगो में से हर एक अंग **का अभ्यास** अपने आप में अत्यंत विस्तृत प्रक्रियाएं हैं जिनका अभ्यास **सख्त मार्गदर्शन में किया जाता है।**

जिनमे से प्रथम है,

1. यम (Dont's)

शांडिल्य उपनिषद के अनुसार कुल **10 यम** है,
जिनके पालन **से योग विधि की शुरुआत की जाती है।**

1. अहिंसा :

- किसिको घायल न करें।
- किसीको कर्म से कष्ट न दें।
- वाणी से भी कष्ट न दें, और न ही विचार से।
  (यहाँ तक कि स्वप्न में भी नहीं)
- भय (Fear) और मानसिक अस्थिरता (Insecurity) को त्याग दें, जो की दुष्कर्म का मुख्य स्रोत हैं।
- आतंक का स्रोत न बने।
- औरों को दुःख न दें।
- तथा मात्र शाकाहारी भोजन ही स्वीकारें।

2. सत्य :

- सत्य निष्ठा का पालन करें।
- झूठ बोलने से बचें।
- अपनी असफलताओं को स्वीकारें।
- अपने वचनो का पालन करें।
- झूठी गवाही न दें।
- वही बोलें जो सच हो, आवश्यक हो, संवेंदनशील हो और सहायक हो।
- जानिए कि छल कपट से सम्बंध में दूरी बनती है,
  इसलिए परिवार और प्रियजनों से कोई भी बात गुप्त न रखें।
- किसिकी बदनामी या गपशप न करे।
- पीठ पीछे बुराई ना करें, और अगर कहीं हो रही है तो उसमें हिस्सा न लें।

3. अस्तेय :

- चोरी, तस्करी तथा डकैत न करें।
- जुआ न खेलें।
- दूसरों को धोखा न दें।
- वादों से न मुकरें।
- अपना कर्ज चुकाना कभी न चूकें।
- अपनी इच्छाओं पर नियंत्रण रखें।
- तथा अपनी ज़रूरतों के भीतर ही जिएँ।
- उधार के संसाधनों का उपयोग न करें।
- बिना अनुमति और स्वीकृति के दूसरों के नाम, शब्दों, संसाधनों या अधिकारों का उपयोग न करें।

4. ब्रह्मचर्य : शुद्धता, यौन संयम

- आदर्श आध्यात्मिक दिनचर्या का आचरण करें।
- मन की कामवासना को नियंत्रित करें।
- अविवाहित हो तब तक ब्रह्मचारी रहें।
- विवाह के बाद अपने पति या पत्नी से निष्ठावान रहें।
- विवाह से पेहले ऊर्जा को पढ़ाई, स्वास्थ्य और आत्म विकास में लगाएँ।
- विवाह के बाद उस ऊर्जा का उपयोग पारिवारिक सफलता बनाने में करें।
- अपने वीर्य का व्यय ना करें, न विचार से, न वचन से और न ही कर्म से।
- पर-स्त्री, पर-पुरुष के साथ संयम से रहें।
- बुरी संगत का त्याग कर, मात्र अच्छी संगत में रहें।
- पेहनावा और बोल चाल विनम्र रखें।
- अश्लील तथा कामुक साहित्य (Pornographic/Erotic Content) का तत्कालीन त्याग करें।
- यौन शोषण (Sexual Violence) और यौन हास्य (Sexual Humour) में भाग ना लें।

5. क्षमा : धैर्य, माफ़ करना

- धैर्यशील बने।
- सहनशील बनें।
- सहमत चरित्र बनाएँ।
- व्यर्थ में बहस न करें।
- दूसरों को अपने हिसाब से ढालने का प्रयास ना करें, अपितु उनको उनके स्वभाव के अनुसार व्यवहार करने दें।
- बातचीत में अपना प्राबल्य दिखाने का प्रयास न करें।
- दूसरों को बाधित न करें।
- हड़बड़ाहट में न रहें।
- बच्चों के साथ धैर्य रखें।
- बुजुर्ग लोगों के साथ धैर्य रखें।
- चिंताओं को दूर करके तनाव कम करें।
- अच्छे और बुरे समय में स्थिर रहें।

6. धृति : दृढ़ता

- निष्ठावान बने।
- दृढ़ रहें।
- निडर, निर्णायक और दृढ़ रेहकर अपनी धर्म आस्था को बनाए रखे।
- योजना, दृढ़ता, प्रार्थना और उचित उद्देश्य के साथ अपने लक्ष्य प्राप्त करें।
- काम में विलंब (Procrastination) और आलस्य न करें।
- इच्छाशक्ति (Will power) बढ़ाएँ।
- साहसी बनें।
- मेहनती बनें।
- बाधाओं को पार करें।
- व्यर्थ झगड़ा न करें।
- दुखड़ा रोना और शिकायतें करना बंद करें।
- असफलता के या विरोधी के डर से अपनी रणनीति में बदलाव ना लाएँ।

7. दया : करुणा

- दयावान बने।
- दूसरों के प्रति असंवेदनशील न रहें।
- हर जगह भगवान को देखें।
- लोगों, जानवरों, पौधों और पृथ्वी के प्रति दयालु रहें।
- माफ़ी माँगने वालों को क्षमा करें।
- गलती के लिए हृदय से पश्चाताप करें।
- दूसरों की जरूरतों और दुखों के प्रति सहानुभूति रखें।
- कमजोर, गरीब, वृद्ध या जो दुःख में हैं उनकी सहायता करें।
- पारिवारिक दुर्व्यवहार और अन्य क्रूरताओं का विरोध करें।

8. आर्जव : पाखंडहीनता, शिष्टता

- शिष्टता बनाए रखें।
- छल कपट का त्याग करें।
- गलत कामों से बचें।
- कठिन समय में भी आदरपूर्वक कार्य करें।
- अपने देश और स्थानीय कानूनों का पालन करें।
- अपने करों (Tax) का भुगतान करें।
- व्यापार में एकदम स्पष्ट रहें।
- दिन के कर्म निष्ठा से करें।
- रिश्वत न दें और न लें।
- धोखा न दें, और अंत समय में पलायन न हो जाएँ।
- स्वयं से निष्ठावान रहें।
- अपने दोषों का स्वीकार करें।
- अपने दोषों को दूसरों पर आरोपित न करें।

9. मिताहार : माप आहार

- बहुत ज्यादा न खाएँ।
- बहुत कम न खाएँ।
- मांस, मछली, घोंघे, मुर्गी या अंडे का सेवन न करें।
- ताजा, स्वस्थ शाकाहारी भोजन लें।
- ऐसा भोजन करें जो शरीर को जीवंत करे।
- जंक फूड से दूर रहें।
- नियमित समय पर खाएं।
- भूख न लगे तो न खाएं।
- मध्यम गति से खाएं।
- भोजन के समयों के बीच के समय में ना खाएं।
- अशांत वातावरण में भोजन न करें।
- परेशान होने पर न खाएं।
- साधारण आहार खाएँ, अमीर या फैंसी तरह से खाना ना खाएँ।

10. सौच : पवित्रता

- शुद्धता व नैतिकता बनाए रखें।
- मन, शरीर और वाणी को शुद्ध रखें।
- शरीर को स्वच्छ व स्वस्थ बनाए रखें।
- घर और कार्यस्थल को शुद्ध व साफ-सुथरा रखें।
- सदाचारी व्यवहार रखें।
- अच्छी संगति रखें।
- मिलावटखोरों, चोरों और अन्य अशुद्ध मन के लोग से दूर रहें।
- अश्लीलता और हिंसा से दूर रहें।
- कठोर और क्रोधित भाषा का प्रयोग न करें।
- अभद्र भाषा का प्रयोग ना करें।
- भक्तिपूर्वक पूजा करें।
- प्रतिदिन ध्यान करें।

2. नियम (Do's)

10 यम के पालन की पुष्टि करके,
हठ योग प्रदीपिका के अनुसार **10 नियम का पालन करना चाहिए।**
जो की **कर्तव्य, व्यवहार** और अनुशासन **के नियम बताएँ गए है।**

1. तपस् : दृढ़ता, तपस्या

- तपस्या और गंभीर आत्मसंयम का अभ्यास करें।
- त्याग और तप का अभ्यास करें।
- पूजा, ध्यान और तीर्थयात्रा में उत्साह से भाग लें।
- अपने पापों का प्रायश्चित तपस्या से करें।
- इच्छा निवृत्ति का अभ्यास करें। यानी की भगवान और धर्म के लिए अपनी प्रिय वस्तुओं जैसे कि सम्पत्ति, समय या धन का त्याग कीजिए।
- गुरु के मार्गदर्शन में आत्म-परिवर्तन के लिए घोर तपस्या करें।

2. सन्तोष : स्वीकृति

- संतोषी रहें।
- जीवन को आनंद और शांति से जीये।
- खुश रहें, मुस्कुराएँ और दूसरों को भी खुश रखें।
- अपने स्वास्थ्य, मित्र और सम्पत्ति के लिए हमेशा कृतज्ञ रहें।
- जो आपके पास नहीं है उसके बारे में शिकायत न करें।
- स्वयं को शरीर, मन या भावनाओं के बजाय आत्मा के रूप में पेहचाने।
- जीवन को विस्तृत दृष्टि से देखिए और जानिए की अंततः जीवन हमारे आध्यात्मिक विकास के लिए है।
- हमेशा वर्तमान में जिएँ।

3. आस्तिक्य : आस्था, ईश्वर और वेदों में विश्वास

- अतूट श्रद्धा का विकास कीजिए।
- ईश्वर, गुरु और अपने आध्यात्मिक मार्ग पर दृढ़ विश्वास रखें।
- गुरु, साधु और शास्त्र की बातों पर भरोसा रखें।
- भक्ति और साधना का अभ्यास करें।
- अपने वंश और गुरु परम्परा के प्रति निष्ठावान रहें।
- जो तर्क वितर्क से आपके विश्वास को तोड़ने का प्रयास करते हैं उन लोगों से दूर रहें।
- संदेह, शंका और निराशा में ना पड़ें।

4. दान : उदारता

- औरों की गलतीयों को माफ़ करें।
- किसी प्रकार के प्रतिफल की आशा के बिना उदारता से दान दें।
- अपनी आमदनी का दसवां हिस्सा (दशांश) भगवान की सम्पत्ति स्वरूप मंदिरों और आश्रमों को दान करें।
- मंदिर में हमेशा कुछ चढ़ावा (फूल, फल, भोग, आदि) लेकर जाएँ।
- गुरु के दर्शन को हमेशा हाथ में कुछ उपहार लेकर करें।
- धर्म ग्रंथों का दान करें।
- जरूरतमंदों को खिलाएं और दान दें।
- प्रशंसा की अपेक्षा के बिना अपना समय और कौशल प्रदान करें।
- मेहमानों को भगवान समझें।

5. मति : विरोधी विचारों को निष्पक्ष रूप से समझना

- आध्यात्मिक बुद्धि और इच्छा शक्ति विकसित करें।
- हमेशा गुरु के मार्गदर्शन में कार्य करें।
- हमेशा भगवद ज्ञान की प्राप्ति के लिए प्रयास करें।
- प्रत्येक अनुभव में छिपे हुई शिक्षा की खोज करें।
- जीवन और आत्म के बारे में गेहरी समझ विकसित करें।
- परमात्मा की आवाझ को सुनकर अंतर्ज्ञान विकसित करें।

6. ईश्वरपूजन : भगवान की पूजा

- हृदय में भगवान के लिए भक्ति विकसित करें।
- प्रतिदिन पूजा और ध्यान करें।
- अपने घर का एक कमरा या कोना भगवान के मंदिर के रूप में रखें।
- उन्हें प्रतिदिन फल, फूल या भोजन अर्पित करें।
- कम से कम मुख्य मुख्य पूजा विधि और मंत्रो को जानें।
- प्रत्येक पूजा के बाद ध्यान करें।
- घर से निकलने से पेहले और बाद में अपने मंदिर के दर्शन करें।
- पूजा पूरे हृदय से करें, जिससे भगवान और गुरु की कृपा आप और आपके अपनो तक एकदम आसानी से आए।

7. सिद्धान्त श्रवण : प्राचीन शास्त्रों का श्रवण

- शास्त्रों को उत्सुकता से सुनें।
- शिक्षाओं का अध्ययन करें।
- अपने बुद्धिमान और ज्ञानी वंशजो की सुने।
- एक मात्र गुरु चुनें और उनके मार्ग पर निसंदेह चलें तथा अन्य तरीकों की खोज में समय बर्बाद न करें।
- उनकी शिक्षाओं को पढ़िए, लिखीए और जीवन में उतारीए।
- हिंसा का प्रचार करने वाले ग्रंथों से दूर रहें।
- वैदिक शास्त्रों का सम्मान करें और उनका अध्ययन करें।

8. ह्री : अतीत स्वीकृति, नम्रता

- अपने आप को पश्चाताप करने की अनुमति दें।
- विनम्र बने और कुकर्मों के लिए हृदय से शर्मिंदगी दिखाएं।
- अपनी गलतियों और बुरी आदतों को पेहचानें, स्वीकारें और उन्हें सुधारें।
- आप से कष्ट पाए लोगों से हृदय से माफी मांगें।
- सोने से पेहले सारे विवाद सुलझा लें।
- अपने आप को बेहतर बनाने वाली आलोचनाओ का स्वागत करें।
- अभिमान ना करें, तथा दिखावा करना छोड़ दें।

9. जप : मंत्रों और प्रार्थनाओं का पाठ

- प्रतिदिन पवित्र मंत्र का जाप करें।
- अपने गुरु द्वारा दिए गए पवित्र ध्वनि, शब्द या मंत्र का पाठ करें।
- जप का सम्पूर्ण फ़ायदा उठाने और उससे हृदय शुद्धि के लिए, पेहले नहाएँ, मन को शांत करें और फिर अच्छे से ध्यान लगाएँ।
- आपके निस्चित किये हुए जप को बिना किसी रुकावट या असफलता, या उनके भय के जप करें।
- क्रोध से दूर रहें।
- जप से अपने उच्च स्वभाव को मझबूत बनाएँ।
- जप से अपनी भावनाओं और विचार की धारा को शांत करें।

10. हुत : अनुष्ठान और यज्ञ
व्रत : धार्मिक मान्यताओ और नियमो की निष्ठासे पूर्ति

- धार्मिक मान्यताओ, प्रतिज्ञाओं, नियमों और पालनों को अपनाओ और उन्हें पूरा करने में कभी पीछे न हटें।
- अपनी प्रतिज्ञाओं को अपनी आत्मा, गुरु, भगवान और समाज को दिए गए वचन के रूप में पालन करें।
- अपने आदर्श स्वभाव में रेहने का संकल्प लें।
- एकादशी और अन्य आध्यात्मिक तिथियों पर उपवास करें।
- वार्षिक रूप से तीर्थ यात्रा करें।
- अपनी प्रतिज्ञाओं को सख्ती से निभाएँ,
  फिर वे विवाह के हो, सन्यास के, शाकाहार की हो,
  व्यसनबंधी की, या फिर वंश वफ़ादारी की।

यद्यपि यम और नियम प्रारंभिक चरण हैं,
दोनो को मिलाके उन्हें केहते है...

संयम: उत्तम अनुशासन या **उत्तम अभ्यास...**

3. आसन

पतंजलि योग सूत्र 2.46 के अनुसार,

स्थिरसुखमासनम् ॥४६॥

योग आसन वे **स्थिर और आरामदायक** ध्यान की **स्थिति** है, जिसमें एक योगी या साधक धीरे-धीरे **ध्यान के लिए अधिक समय तक बैठने** की अपनी क्षमता को विकसित कर सकता है।

तथा ऐसे मुख्य चार योग आसान प्रचलित है...

1. **सिद्धासन**
2. **पद्मासन**
3. **भद्रासन**
4. **सिंहासन**

परंतु कलियुगी मनुष्य की घटती शारीरिक क्षमता को देख 10 वीं शताब्दी के बाद **गोरक्ष शतक** और **हठयोग प्रदीपिका ने 84 नए आसन जोड़े।**

तथा 'गोरक्ष शतक' और 'घेरंडा संहिता' में बताया गया है की,
भगवान शिव ने 84 लाख योनियों के लिए 84 लाख आसन दिए थे।
फिर उन्होंने प्रति लाख योनियों पर 1 मुख्य आसान बनाया, जिससे **84 मुख्य आसन** आए, जिनमें से मात्र 32 ही इस भौतिक जगत में उपयोगी बताए गए।

जिनमें से केवल **दो ही** वास्तव में **अति आवश्यक** हैं,
इसलिए उनका सम्पूर्ण विस्तार से वर्णन किया गया है :
सिद्धासन और **पद्मासन**।

बाकी के आसान शरीर में लचक, क्षमता और संतुलन बढ़ा कर साधक को अपना शरीर स्वस्थ रखने में मदद करते है, जिससे वो **आध्यात्मिक प्रगति** के लिए अपना **शरीर रोग मुक्त और स्वस्थ** बना पाए।

4. प्राणायाम

प्राण : श्वास, सांस
आयाम : संयम, नियमन, नियंत्रण
प्राणायाम : श्वास को लगातार नियंत्रित करने की प्रक्रिया

तो एक उचित आसन स्थिति प्राप्त करने के बाद, अगला कदम आता है सचेत रूप से श्वास को नियंत्रित करने का अभ्यास, यानी की प्राणायाम। प्राणायाम अभ्यास तीन प्रकार की श्वास की गति से बनते हैं,

पूरक : श्वास अंदर लेना
कुम्भक : श्वास को भीतर रोके रखना
रेचक : श्वास को बाहर निकालना

प्राणायाम के कुछ तरीके है,

- साँस लेना, विराम देना, साँस छोड़ना, एक खाली विराम।
- साँस लेना और फिर कुछ समय के लिए साँस नहीं छोड़ना।
- साँस छोड़ना और फिर कुछ समय के लिए साँस को रोकना।
- साँस लेना और फिर धीरे धीरे साँस छोड़ना।
- सांस के समय और लंबाई को स्वयं से बदलना (गहरी, छोटी सांस)

कुछ अन्य प्राणायाम तकनीके,
- **उज्जयी श्वास** : विजयी श्वास
- **भस्त्रिका** : धौंकनी श्वास
- **कपालभाति** : कपोल चमकाती श्वास
- **षट्कर्म** : शुद्धि श्वास
- **सूर्य भेदन** : सूर्य भेदी श्वास
- **भ्रामरी** : मधुमक्खी की तरह भिनभिनाना

5. प्रत्याहार

प्रति : विरुद्ध, विपरीत, आहरण
आहार : इंद्रियो का आदान
प्रत्याहार : **साधक की इंद्रियों के आदान को वापस लेने की प्रक्रिया।**

ध्यान की प्रक्रिया **में सबसे बड़ी समस्या है विकर्षण** (Distraction) जो की हमारी इन्द्रिय वस्तुओ से आते हैं। **स्वाद, स्पर्श, दृष्टि, सुनना और गंध।**

प्रत्याहार की प्रक्रिया **में,**
साधक अपनी **इंद्रियों को** उनकी **संवेदनाओं से हटा लेता है** ताकि वो ध्यान की प्रक्रिया में विचलन न बने और साधक धारणा के लिए तैयार हो सकें।

जिसे करने के लिए पेहले **मानसिक वैराग्य** बनाया जाता है, फिर **शारीरिक उत्तेजनाओं को कम करके**, फिर **श्वास**, विशिष्ट **इंद्रियों** और विशिष्ट **चक्रों पर ध्यान केंद्रित करके इंद्रियो का** सफलता से **प्रत्याहार किया जाता है।**

6. धारणा

धृ : धारण करना, बनाए रखना
धारणा : एकाग्र होना, लक्ष्य साधना
अत: हमारे मन को किसी विशेष आंतरिक अवस्था, विषय या विषयवस्तु पर अटल रखने की प्रक्रिया को धारणा केहते है।

तथा उस वस्तु को **प्रत्यय** केहते हैं। जो की कोई मंत्र, श्वास, नाभि, जीभ का सिरा, स्थान, वस्तु या विचार हो सकता है। एक विषय से दूसरे विषय पर कूदे बिना, मन भटकाए बिना, एकाग्रचित्त होकर मन को स्थिर करना, धारणा है।

जो की **ध्यान का प्रारंभिक चरण** होता है।

7. ध्यान

ध्यान : चिंतन
ध्यान : धारणा ने जिस प्रत्यय पर मन केंद्रित किया है,
उसका एक चित्त चिंतन करना।
तो आख़िर क्या है ध्यान?
ध्यान, अबाध रूप से केंद्रित किया गया विचार है;
ध्यान, अनुभूति की अविरल धारा है;
ध्यान, निरंतर चलती जागरूकता का प्रवाह है।

यदि धारणा किसी **देवी या देवता** पर थी, तो ध्यान उनका **चिंतन** है।
यदि धारणा किसी **वस्तु** पर थी, तो ध्यान उस वस्तु का बिन-आलोचनात्मक, अभिमान रहित, निष्पक्ष **अवलोकन** है।
यदि धारणा किसी **विचार** पर थी, तो ध्यान उस विचार पर उसके सभी **पेहलुओं**, **रूपों** और **परिणामों** पर किया गया **चिंतन** है।

ध्यान और धारणा में क्या अंतर है?
आदि शंकराचार्य बताते हैं,
धारणा में, 'एक वस्तु पर ध्यान केंद्रित किया जाता है, लेकिन एक ही वस्तु के बारे में इसके कई पेहलुओं और विचारों पर भी ध्यान रेहता है।'
ध्यान में, 'मात्र एक वस्तु के विचार की निरंतर धारा बेहती है, जिसमें उसी वस्तु के अन्य प्रकार के विचार का विचलन नहि होता है।'

उदाहरण के लिए,
एक योगी सुबह के समय धारणा की स्थिति में सूर्य की चमक, रंग और कक्षा से अवगत हो सकते है; परंतु ध्यान अवस्था में योगी सूर्य के रंग, प्रतिभा या अन्य विचार पर ध्यान दिए बिना केवल सूर्य की कक्षा पर विचार करते है।

तो ये भगवान कृष्ण द्वारा भगवद् गीता में दिए गए पूर्णता पाने के चार तरीकों में से भी एक है। **ध्यान योग मतलब** की **निरंतर भगवान पर ध्यान धरना।**

8. समाधि

समाधि अष्टांग योग प्रक्रिया का **अंतिम चरण** है।

जिसमें एक योगी लंबे समय तक ध्यान की पूर्णता प्राप्त करके धीरे-धीरे अपनी **शारीरिक पेहचान को कम कर**ते है। फिर अपने शरीर से **चेतना के प्रवाह को** पेहचानने और नियंत्रित करने में सक्षम होते है, और उसे अपने शरीर के बाहर, **उच्च आयामों (Higher Dimensions) में** अपने प्रत्यय तक **ले जाते है** जिस पर उन्होंने ध्यान किया था।

ज्यादातर समय वे परमात्मा, **देवी-देवता**, या **ब्रह्म ज्योति** में जाते है। **इस** स्थिति **में** शारीरिक या **बाहरी अशांति** योगी को **परेशान नहीं करती** है।

इस अवस्था में **कभी-कभी शरीर** भी पूरी तरह से **नष्ट हो जाता है** परंतु फिर भी **आत्मा** शरीर को नहीं छोड़ती और **शरीर के अवशेषों में रेहती है**, यहाँ तक की कभी-कभी तो वो मात्र हड्डियों में भी रेह जाती है।

समाधि तीन प्रकार की होती है,

1. **सहज समाधि :** समाधि की अस्थायी अवस्था
   योगी अपनी इच्छा से समाधि में जाते और बाहर आते है।

2. **महा समाधि :** समाधि की स्थायी (Permanent) अवस्था
   योगी इच्छापूर्वक स्वयं से अपना शरीर छोड़ देते है।

3. **भाव समाधि :** उच्चतम परमानंद की प्राप्ति पर शरीर को छोड़ना
   जब व्यक्ति को उच्चतम स्तर के भक्ति के आनंद का अनुभव होता है तब वो अपने इष्ट की प्राप्ति के लिए अपने शरीर को स्वेच्छा पूर्वक छोड़कर अपने इष्ट के लोक चला जाता है।
   जैसे की **मीराबाई, नरसिंह मेहता, चैतन्य महाप्रभु**

कर्म योग

कर्म : कार्य, फलदायी क्रिया, निर्धारित कर्तव्य
योग : जोड़ना
कर्म योग : निर्धारित **कर्तव्यों का पालन करके भगवान से जुड़ना।**

सरल शब्दों में कर्म का अर्थ है कार्य करना,
जिसके अनुसार 3 **प्रकार के कर्म** होते हैं,

1. **कर्म,**
2. **विकर्म**
3. **अकर्म**

1. **कर्म** अपने **निर्धारित कर्तव्यों** तथा **पुण्यकर्म** के वे कार्य हैं, जो ज्ञानी लोग अपने परिवार, समुदाय और देश के हित के लिए करते है और अधिक से अधिक फलों का आनंद पाते हैं।

   यहां, इस दुनिया में अलग-अलग लोग अलग-अलग स्तर के फल पाने के लिए कर्म करते हैं। जैसे की :

- ज्यादातर लोग कुछ पैसे कमाने के लिए **पूरा दिन काम करते हैं।** जिससे फिर वे **इस जीवन में** तरह-तरह के **आनंद लेने** का प्रयास करते हैं।
- फिर जो लोग **दान और अन्य पवित्र कार्य करते हैं** वे **अगले जन्म में** अच्छे माता-पिता, अच्छी शिक्षा, तथा ऐश्वर्य प्राप्त करने और उच्चतर कक्षा का **आनंद प्राप्त करने** के लिए कर्म करते हैं।
- फिर वे लोग आते है जो **स्वर्ग वगैराह उच्च लोकों में** (जहां जीवन और आनंद का स्तर यहां से कहीं अधिक आरामदायक होता है) **पदोन्नति के लिए** उच्च गति के **कर्म करते हैं।**

2. **विकर्म** वे अनिर्धारित कर्म हैं जो अज्ञानी लोग अपनी **इंद्रियों** (आंख, कान, नाक, जीभ, त्वचा और जननांग जैसी भौतिक इंद्रियों) **के आनंद के लिए** और कुछ चंचल अस्थायी भोग की प्राप्ति के लिए **करते हैं।**

परंतु,
कर्म और विकर्म दोनों ही आखिर में
हमे इस भौतिक संसार से ही बांधते है।

विकर्म दुःख के रूप में **बंधन बनाता है**;
और **कर्म भोग** के रूप में **बंधन बनाता है।**

हमारे आचार्य वर्णन करते हैं की,
दुःख धातु की बेड़ियों के समान है,
और भोग सुख सोने की बेड़ियों के समान है।

पर दोनों ही आखिर में बेड़ियाँ ही हैं ,
क्योंकि दोनों का उद्देश्य आपको बांधना ही है।

दोनों हमें इस भौतिक दुनिया में तब तक रखेंगे जब तक हम
हमारे सारे अच्छे कर्म के फल का भोग नहि कर लेंगे और
बुरे कर्म की सजा प्राप्त नहि कर लेंगे।

और फिर उसके बाद वापस से हमें पुण्य कमाने हमें पृथ्वी पर
ही आएँगे, और ये चक्र ऐसे ही अनंत काल तक चलता रहेगा।

तो,
आख़िर इस अंतहीन चक्र का समाधान क्या है?

इसका समाधान श्रीकृष्ण गीता के 3.9 वे श्लोक में देते हैं:

यज्ञार्थात्कर्मणोऽन्यत्र लोकोऽयं कर्मबन्धनः ।
तदर्थं कर्म कौन्तेय मुक्तसङ्गः समाचर ॥९॥

'**श्रीविष्णु के लिए** यज्ञ रूप में ही **कर्म करना चाहिए**, नहीं तो कर्म व्यक्ति को इस भौतिक संसार से बांधता है। इसलिए, हे कुन्ती पुत्र, **उनकी संतुष्टि के लिए** अपने निर्धारित **कर्तव्यों का पालन करो**, **और** इस तरह तुम कर्मो के **बंधनो से सदा मुक्त रहो**गे।'

3. तो ऐसे जब आप अपने आप को **अपने व्यावसायिक कार्यों में लगाते हो,** परंतु उसके फल का उपयोग अपनी इन्द्रिय तृप्ति के बजाए **भगवान की संतुष्टि के लिए करते हो**, तब वो कर्म, कर्म योग बन जाता है; और **ऐसे कर्मो को अकर्म कहा जाता है।**

   ऐसे **अकर्म हमें भौतिक संसार से नहीं बांधते है।**
   तो **परम ज्ञानी** लोग इसे अच्छे से समझ कर **विशुद्ध रूप से मात्र भगवान विष्णु की प्रसन्नता के लिए** बिना किसी अपेक्षा या फल की आसक्ति के अपने निर्धारित **कर्तव्यों** का पालन **करते हैं।**

तो,
यदि कोई वर्णाश्रम प्रणाली के अनुसार काम करता है और फल की इच्छा नहीं रखता है, तो उसे धीरे-धीरे परम संतुष्टि प्राप्त होती है। तो हमें हमेशा अपने व्यवसायिक कर्तव्य को **ईश्वर की भक्ति** समझकर **करना चाहिए।**

भगवद् गीता इस प्रक्रिया को **कर्म-योग** का नाम देती है।
दूसरे शब्दों में, हमें **प्रभु की संतुष्टि और सेवा के लिए** ही कर्म करना चाहिए।

नहीं तो उनके परिणामों को भोगने हेतु हम
जन्म जन्मांतर के लिए इसी भौतिक जगत में फँसे रहेंगे।

ज्ञान योग

ज्ञान : साक्षात ज्ञान
योग : जोड़ना
ज्ञान योग : भगवान के बारे में जानकर उनसे जुड़ना।

ज्ञान योग की प्रक्रिया में एक योगी दार्शनिक चिंतन (Philosophical Speculation) द्वारा ईश्वर को समझने का प्रयास करता है।

भगवान को जानने के लिए अपने **मन और बुद्धि को समर्पित करना** भी भगवान को प्राप्त करने का एक तरीका है। बस समस्या ये है कि **ज्ञान योग से केवल भगवान के अवैयक्तिक** (Impersonal Aspect) (ब्राह्मण बोध) **स्वरूप को** ही **समझा जा सकता है।**

जैसा कि श्रीमद् भागवतम् 3.32.33 में बताया गया है,

यथेन्द्रियैः पृथग्द्वारैरर्थो बहुगुणाश्रयः ।
एको नानेयते तद्वद्भगवान्शास्त्रवर्त्मभिः ॥ ३३ ॥

'किसी एक वस्तु को उसके अलग-अलग गुणों के कारण अलग-अलग इंद्रियों द्वारा अलग-अलग तरीके से समझा जाता है। वैसे ही भगवान का सर्वोच्च व्यक्तित्व एक है, परंतु अलग अलग शास्त्रों के अनुसार वे अलग प्रतीत होते हैं।

सभी **दर्शन शास्त्र** इसी योग प्रक्रिया पर बने हैं, जहां योगी और आचार्य अपने अनुभव से **दार्शनिक (Philosophical) अनुमानों से भगवान को समझने का प्रयास** करते हैं।

हालाँकि ये सभी योग प्रक्रियाएं आपको भगवान की ओर ले जाती है, परंतु जैसे एक ही वस्तु अलग-अलग इन्द्रियों द्वारा अनुभव करने पर भिन्न प्रतीत होती है; वैसे ही ज्ञान योग में वही साकार भगवान मानसिक अनुमानों से योगी को निराकार प्रतीत होते है।

भक्ति योग

भक्ति : प्रेमपूर्ण भक्तिमय सेवा
योग : जोड़ना, जुड़ना

भक्ति योग : भगवान के प्रति प्रेम से समर्पण करके उनसे जुड़ना।

भक्ति सभी योगों का निष्कर्ष और अंतिम चरण **है।**
ये वो अंतिम प्रक्रिया है जिसे भगवान भी गीता में
अन्य योग प्रणालियों से ऊपर बताते है।

कर्म योग : अपने कार्य और कर्मों के फल को अर्पित करना
ज्ञान योग : भगवान को समझने के लिए बुद्धि अर्पित करना
भक्ति योग : भगवान और उनके भक्तों की सेवा के लिए अपना
मन, बुद्धि, वचन और कर्म सबकुछ अर्पित करना।

यदि हम ध्यान से समझे तो पता चलेगा की,
ये तीनो योग पद्धति योगिक उन्नति के प्रगतिशील स्तर हैं।

क्यूँकि,
कर्मयोग,
अपने आप में **कर्म करने और उनके परिणामों से
अलग होने की प्रक्रिया है।** जैसा कि गीता 2.47 में कृष्ण केहते हैं,
कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।
'आपको मात्र आपका निर्धारित **कर्म करने का अधिकार है,**
परंतु आप कर्म के **फल के हकदार नहीं हैं।**'

तो जब हम परिणाम से लगाव रखे बिना अपना कर्म करते हैं ,
वो है कर्म योग।

फिर आता है **ज्ञान योग** का चरण,

जहाँ व्यक्ति को समझ आता है की,
मैं इतनी मेहनत क्यों कर रहा हूँ?
पशु-पक्षी और पौधे, सभी को अपना भोजन मिलता है;
तो मैं इतनी मेहनत क्यों कर रहा हूँ?

तब वो **ज्ञान के माध्यम से सत्य की खोज** करना शुरू करता है, अनुमान लगाता है, और अपने निष्कर्ष तैयार करता है। फिर वो **मोक्ष प्राप्त करने** का प्रयास करता है, जिसे वो सामान्य रूप से ब्रह्म चरण, निर्वाण चरण को प्राप्त करता है, और भगवान के अव्यक्तिगत पेहलू में विलीन हो जाते हैं।

फिर आता है **भक्ति योग,**

जो की सब कुछ भगवान के लिए करने की कला है।
भक्ति में हम कर्म भी करते हैं और हम ज्ञान की खोज भी करते हैं।
परंतु अंतर ये है कि हम जो कर्म करते हैं, और जो भी ज्ञान प्राप्त करते हैं वो भगवान के लिए, भगवान के बारे में या भगवान और उनके भक्तों की सेवा के लिए होता है।

जैसा कि **कृष्ण गीता में** स्पष्ट करते हैं कि भक्ति के सिवा
उनको समझने का कोई और दूसरा रास्ता नहीं है,

भक्त्या मामभिजानाति यावान्यश्चास्मि तत्त्वतः ।
ततो मां तत्त्वतो ज्ञात्वा विशते तदनन्तरम् ॥५५॥

'केवल भक्ति से मुझ भगवान् को यथारूप में जाना जा सकता है। जब मनुष्य ऐसी भक्ति से मेरे में पूर्ण चेतना लगाता है, तो वो वैकुण्ठ जगत् में प्रवेश कर सकता है।'

जो की सभी योग प्रक्रियाओं का अंतिम लक्ष्य है।

परंतु फिर,

यदि **जीवन के अंतिम लक्ष्य**
के लिए **योग** ही आवश्यक है,

तो फिर भगवान ने क्यों बनाया....

ਧਰਮ

धर्म क्या है?

इससे पेहले कि हम ये जाने,
ये जानना ज़रूरी है की **धर्म क्या नहीं है!**

हिंदू धर्म नहीं है,
(जी नहीं, नहीं है)
इस्लाम धर्म नहीं है,

ईसाई (क्रिश्चानिटी) धर्म नहीं है,

और ऐसे दुनिया के कोई भी अन्य
संगठित Religion भी धर्म नहीं है।

ये सब Religion है,
और Religion का मतलब धर्म नहि होता है।

वास्तव में,
धर्म शब्द का कोई उचित **अंग्रेजी अनुवाद है ही नहीं।**

Religion का हिंदी में अर्थ होता है **संप्रदाय,**
यानी की **सामूहिक आस्था।**

और **आस्था** समय-समय पर **बदल सकती है,**
धर्म नहीं।

पर ऐसा क्यू?
धर्म क्यों नहीं बदल सकता?

क्योंकि,
धर्म शब्द **का अर्थ** ही होता है,
वो, जो वस्तु विशेष के साथ
हमेशा विद्यमान है।

यानी की,
किसी **वस्तु या व्यक्ति का वो आंतरिक गुण जो**
उससे कभी भी अलग नहीं हो सकता।

उदाहरण के लिए,
अग्नि का धर्म **ताप** और **प्रकाश** है।
आप कभी भी ऐसी आग नहीं बना सकते जो गर्म न हो और रोशनी न दे। इसलिए हम केहते हैं कि, गर्मी आग का गुण-धर्म है।

वैसे ही **चीनी का** धर्म **मिठास** है।
चीनी का एक रजकण भी मीठा होता है और उसका बड़ा सा पत्थर भी।
इसलिए मधुरता, चीनी का गुण-धर्म है।

वैसे ही, **समुद्र के पानी** को उसके किनारे से चखो,
उसके केंद्र से, या गहराई से, हर जगह उसका स्वाद **नमकीन** ही रहेगा।
क्यूँकि नमकीन (खारा) होना समुद्र के पानी का गुण-धर्म है।

और **आप** उसके उस **धर्म को नहीं बदल सकते**।

वैसे ही,
जीव का धर्म वो है,
जो **उससे अविभाज्य** है, जो **उसकी आवश्यक प्रकृति** है,
जो **उसका शाश्वत गुण** है, जो **उसके अस्तित्व का कारक है,**
और जो **उसके जीवन को अर्थ देता है।**

तो आख़िरकार,
जीवात्मा का वो धर्म है क्या?

हमारे शास्त्र केहते हैं कि हर एक **जीवात्मा का शाश्वत धर्म है, सेवा।**
और सेवा करने के लिए हमें सक्रियता की आवश्यकता होती है।
जीव के लिए एक क्षण के लिए भी कर्म न करना असम्भव है।
इसलिए **हमेशा सक्रिय रेहना आत्मा का स्वभाव है।**

और जीवों द्वारा किए गए **सभी कार्य अंततः सेवा ही हैं।**
वो फिर किसी व्यक्ति की हो, या वस्तु की, परिवार की हो, या मित्रों की;
मालिक की हो, या ग्राहक की; फिर या तो देश की, या तो नागरिकों की।
वो सब तो है ही, ऊपर से आजकल तो हम अपने पालतू कुत्ते और
बिल्लियों की भी सेवा करने लगे हैं।
(और वो भी कभी-कभी तो हमारे परिवारजनो से भी ज्यादा)

चलो यदि इनमें से कोई नहीं, तो आख़िर में **हम** निश्चित रूप से हमारी **इंद्रियों**
की **सेवा तो कर ही रहे हैं।** उनमें से कुछ ना कुछ सुख निचोडने के प्रयास में।
इन सब से इतना तो तय ही है कि हम **कभी भी सेवा के बिना नहि रेह
सकते।** वो संपूर्णतः असंभव है।

अत: **सेवा करना** सभी **जीवात्माओं की वो सहज प्रवृत्ति है,**
जिसे कभी उनसे **अलग नहीं किया जा सकता है।**

इसलिये, सेवा जीव की अविभाज्य प्रकृति और शाश्वत गुण
होने के कारण हम केह सकते है की,
जीव का सनातन धर्म 'सेवा' है।

अब,
हमारी **सेवा की शुद्धता निर्भर करती है** उसे करने की **प्रेरणा के ऊपर,**
जो की **मुख्यतः चार** भावनाओं से होती है,

1. **प्रेम**
2. **कर्तव्य**
3. **कामना**
4. **डर**

इनमे **सबसे ऊपर** है **प्रेम** और **सबसे नीचे, डर।**

हमारे इस भौतिक संसार में होती हुई सारी सेवाओं को इन चारों से प्रेरित हुए देखते हैं। हालाँकि ज़्यादातर सेवाएँ या तो कामना से या तो डर से होती है।
डर > इच्छा > कर्तव्य

परंतु **आध्यात्मिक जगत में,**
प्रत्येक **सेवा** का कार्य शुद्ध रूप से **मात्र प्रेम से** प्रेरित होता है।
और प्रेम ही है जो आध्यात्मिक दुनिया को आध्यात्मिक
बनाता और बनाए रखता है।

इसलिए शास्त्र बताते है कि,
आत्मा की शाश्वत आध्यात्मिक प्रकृति, **आत्मा का सनातन धर्म,**
अंततः **प्रेम करना और प्रेम पाना है।**

प्रेम ही वास्तव में ह्रदय को संतुषित करता है।
और प्रेम करने का अर्थ है, सेवा करना,
बिना किसी निजी हेतु : अहेतुकिय (Unconditional)
और बिना किसी विराम या अंत के : अप्रतिहता (Endlessly)
(इन दो गुणों के बिना उसे प्रेम नहीं कहा जा सकता)

जो की इस भौतिक संसार में वास्तव में संभव ही नहीं है।
हम हमेशा किसी से प्रेम करने से पेहले उनमे कुछ देखते हैं।
फिर वो **शारीरिक सौंदर्य हो, बौद्धिक सौंदर्य हो,**
या शक्ति, प्रसिद्धि, क्षमता, चरित्र, कुछ भी हो सकता है!

केवल मातृप्रेम को छोड़कर,
केवल एक माँ ही अपनी संतान को बिना किसी निजी हेतु के प्रेम करती है। जो की इस भौतिक संसार में शुद्ध प्रेम का सबसे नज़दीकी उदाहरण है। हम उस प्रेम की तुलना ब्रह्मांड के किसी अन्य प्रेम से नहीं कर सकते। क्योंकि **सांसारिक प्रेम** के अन्य सभी रूपों **में पूर्व कुछ हेतु या स्वार्थ होता ही** है।

परंतु, वो सर्वोत्तम मातृप्रेम भी अंततः अंतहीन नहीं हो सकता है। क्योंकि **समय और परिस्थितियों के साथ** उस **प्रेम** का स्वरूप **भी बदल जाता है** और साथ ही माँ को भी एक दिन अपना शरीर और उसके साथ जुड़े सारे सम्बंध छोड़कर दूसरा शरीर और दूसरे सम्बंध स्वीकारने ही पड़ते है। इसलिए वो अपनी संतान से अंतहीन (अप्रतिहता) प्रेम नहीं कर सकती।

और ये बात तो अलग ही है कि कलियुग के प्रभाव के कारण, जिस अहैतुकिय मातृप्रेम के हम बखान कर रहे है वो भी दिन-ब-दिन कम होता जा रहा है।

इसलिए,
भौतिक जगत में (नि:स्वार्थ और अंतहीन) **प्रेम करना संभव ही नहीं है।**

इसलिए भगवान से **प्रेम करने और प्रेम पाने की हमारी वो अनंत समय की ज़रूरत अधूरी रेह जाती है** और हम असंतुष्ट रेहते हैं।

उस असंतुष्ट **हृदय के ख़ाली स्थान को भरने के लिए,**
हम हमारे सबसे नज़दीक उपलब्ध सुख की इच्छा **करने लगते हैं**।
जो की है, **इन्द्रिय सुख।** उसके बाद उन इन्द्रिय सुखों पर विचार करते हुए, हम उनके प्रति आसक्त होने लगते है। उस **आसक्ति के कारण** फिर हममें **वासना** का विकास होता हैं।

यदि हम उस **वासना को पूरी करते है, तो वो और बढ़ जाती है।**
जितनी भी बार उसे पूरा करो, वो उतनी ही बढ़ती जाती है।
और यदि हम इसे **पूरा नहीं कर पाते** हैं,
तो फिर वो **क्रोध में बदल जाती है।**

उस **क्रोध** से **भ्रम उत्पन्न होता है,**
और **भ्रम से** स्मृति का विनाश होता है,
जिससे हमारी **बुद्धि भ्रष्ट** हो जाती है।

और **जब बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है,**
तो व्यक्ति फिर से भौतिक अस्तित्व के जाल में फँस जाता है
और फिर से ये सारा **माया का चक्र शुरू हो जाता है।**

अब सोचो,
ये सिर्फ़ एक बद्ध जीवात्मा का, एक माया चक्र है।
संसार में **ऐसी अनगिनत बद्ध जीवात्माओं के अनगिनत कामी, क्रोधी और लालची चक्र** आपस में टकरा रहे हैं। **इन सबके होने के बावजूद हम शांतिपूर्ण समाज की अपेक्षा कैसे कर सकते हैं?**

इन सभी सांसारिक, सामाजिक समस्याओं का **एकमात्र समाधान** ये है कि पेहले हम स्वयं को **आध्यात्मिकता** की ओर ले जाएँ और फिर अन्य जीवात्माओं को आध्यात्मिकता की ओर, धर्म की ओर,
ईश्वर की ओर वापस लाया जाए।

और यही है हमारा

सनातन धर्म।

भगवान के लिए प्रेमपूर्ण सेवा करना,
और दूसरों को भी उनके पास वापस लाने में मदद करना।

स वै पुंसां परो धर्मो यतो भक्तिरधोक्षजे ।
अहैतुक्यप्रतिहता ययात्मा सुप्रसीदति ॥ श्रीमद् भागवत महापुराण 1.2.6

जो आत्मा की शाश्वत ज़रूरत है,
भगवान की सेवा के बिना आत्मा कभी संतुष्ट नहीं हो सकती।

यदि वो किसी व्यक्ति या वस्तु की सेवा कर रहा है, एक सिमा तक उनकी सेवा करने के बाद, वो हमेशा सेवा और प्रेम करने के लिए किसी बड़े व्यक्ति की खोज करेगा। परंतु **आत्मा** यहाँ जिस भावना को **खोज रही है,**
वो वास्तव में **ईश्वर से अनंत प्रेम करने की भावना** है।
क्योंकि वही वो भावना है जो हम जीवात्माओं को परम संतुष्टि दे सकती है।

परंतु क्योंकि,

हर कोई इतनी शुद्ध चेतना के स्तर पर एक बार में नहि आ सकता,
और अपनी सभी भौतिक इच्छाओं से सीधे मुक्त नहीं हो सकता,
भगवान ने उनके लिए **कर्तव्यों और नियमों की**
एक **आदर्श प्रणाली** तैयार की है,
जिसे हम केहते है,

धर्म...

जिसका **पालन करने पर,**
समाज में प्रत्येक व्यक्ति की **भौतिक इच्छाएं** बिना एक-दूसरे की इच्छाओं से टकराए **पूरी की जा सकती है और साथ ही** साथ उन्हें आध्यात्मिक रूप से आगे बढ़ाते हुए, हर दिन **भगवान के और निकट लाया जा सकता है।**

कर्तव्य के रूप में धर्म

ज़रा सोचिए,
इस अलग-अलग स्वभाव, चेतनाओं, इच्छाओं, प्रवृत्तियों, क्षमताओं,
जरूरतों, आवश्यकताओ वाले जीवों से भरी हुई इस जटिल दुनिया में,
जीवन के परम लक्ष्य को प्राप्त करना आख़िर कैसे संभव है?

नहि है।
बिना भगवान की सहाय के, सच में सम्भव नहि है।
इसी लिए, **भगवान ने** हमारे लिए, **जीवन के विभिन्न चरणों** में पालन
करने **के लिए** कर्तव्यों, नियमों और प्रक्रियाओं को मिलाकर एक
आदर्श सामाजिक व्यवस्था प्रणाली बनाई है।
जिसे हम **सनातन धर्म** के नाम से जानते हैं।

हालांकि ये उस व्यवस्था का कोई मुख्य नाम नहीं है।
वास्तव में, उस व्यवस्था का कोई नाम ही नहीं है। क्योंकि **अनंत काल
से पृथ्वी पर यही एकमात्र सामाजिक व्यवस्था रही है।** इसकी
तुलना या स्पर्धा में कोई अन्य व्यवस्था रही ही नहीं।

नहीं। इस्लाम, क्रिस्चैनिटी या किसी अन्य सामाजिक संप्रदाय की तुलना भी
इससे नहीं की जा सकती, क्योंकि इनमें से किसीका भी अस्तित्व और
इतिहास 4000 वर्ष से अधिक पुराना नहीं है।

और यही कारण है कि हर कोई हमेशा से जानता और मानता था कि,
धर्म के नियम प्रकृति के नियमों के समान है।

इस सनातन **धार्मिक प्रणाली का प्राथमिक उद्देश्य,**
हर जीव को धीरे-धीरे भगवान के नज़दीक लाना, और साथ ही साथ पूरे
अस्तित्व को इस प्रकार से चलाना है कि जिससे योग्य जीवात्माओ की चेतना
को विकसित किया जा सके, और अयोग्य को धीरे धीरे योग्य बनाया जा सके।

और इस संपूर्ण व्यवस्था प्रणाली को हम केहते है

सनातन धर्म :

अनंत शाश्वत सामाजिक संवैधानिक व्यवस्था प्रणाली।

यहाँ से अब,
जब हम **धर्म** कहेंगे तब ध्यान दें,
कि हम **धार्मिक कर्तव्य** के बारे में बात कर रहे हैं,
जीव के अंदर के गुण-धर्म की नहीं।

तो,
कर्तव्य के रूप में **धर्म** के **दो भाग** हैं,

1. **शुद्ध धर्म : आत्म धर्म :** वो है जो **कभी नहीं बदलता :**
   शुद्ध धर्म **आत्मा का शाश्वत** आध्यात्मिक स्वभाव और **कर्तव्य** है।
   जो की है भगवान की प्रेममयी सेवा करना।

   शुद्ध धर्म को **नित्य धर्म** भी कहा जाता है,
   क्योंकि ये शाश्वत है और **कभी नहीं बदलता**।

2. **गौण धर्म : नैमित्तिक धर्म :** वो है जो समय आने पर **बदलता है :**
   गौण धर्म जीव को **भौतिक संसार में** रेहते हुए करना होता है।
   गौण धर्म की विभिन्न श्रेणियां हैं,
   जिनमें से सबसे प्रसिद्ध पाँच हैं...

   1. **साधरण धर्म** : जो की बदलता नहीं है।
   2. **मानसिक धर्म** : पद या उपाधि बदलने पर बदलता है।
   3. **शारिरिक धर्म** : शरीर बदलने पर बदलता है।
   4. **युग धर्म** : युग बदलने पर बदलता है।
   5. **आपद धर्म** : परिस्थिति बदलने पर बदलता है।

1. साधरण धर्म :

(बदलता नहीं है)

साधारण धर्म, मूल्यों के रूप में कर्तव्यों का वो समूह है, जो समाज में हमारे किसी भी पद के बावजूद **सभी के लिए समान (साधारण) हैं**।

विष्णुधर्मसूत्र 2.16-17 इनका वर्णन इस प्रकार करता है,

क्षमा सत्यं दमः शौचं दानमिन्द्रियसंयमः ।
अहिंसा गुरुशुश्रूषा तीर्थानुसरणं दया ।।
आर्जवं लोभशून्यत्वं देवब्राह्मणपूजनम् ।
अनभ्यसूया च तथा धर्मः सामान्य उच्यते ।।

सामान्य धर्म में आता है दया, सत्य, मन पर नियंत्रण, पवित्रता, इंद्रिय संयम, अहिंसा, गुरुसेवा, तीर्थयात्रा, करुणा, सत्यता, लालच से दूरी, देवताओं और ब्राह्मणों का सम्मान और किसी की आलोचना न करना।

2. मानसिक धर्म :

(पद बदलने पर बदलता है)

मानसिक धर्म, भौतिक संसार में हमें प्राप्त **उपाधि या पद के अनुसार** हमें मिले हुए **कर्तव्य** हैं। जो मुख्य रूप से **मन द्वारा संचालित** होने के कारण इन्हें मानसिक धर्म कहा जाता है।

उदाहरण के लिए,

मातृभूमि के प्रति कर्तव्य, शासित राजा के प्रति कर्तव्य,
स्वामी, शिक्षक, नियोक्ता के प्रति कर्तव्य,
कर्मचारी, नौकर के प्रति कर्तव्य,
सौंपे गए पद के प्रति कर्तव्य वगैराह...

3. शारीरिक धर्म :

(शरीर के बदलने पर बदलता है)

शारिरिक धर्म, व्यक्ति के **जन्म और** उससे मिले **शारीरिक संबंधों** तथा स्थितियों से प्राप्त हुए **कर्तव्य** हैं।

उदाहरण के लिए,
वर्णाश्रम धर्म,
पितृ धर्म, पुत्र धर्म,
पत्नी धर्म, पुत्री धर्म,
मातृ धर्म वगैराह...

4. युगधर्म :

(युग के बदलने पर बदलता है)

युगधर्म उस **युग** में रेहने वाले मनुष्यों **के आत्म-साक्षात्कार के** लिए बनाए गए **आध्यात्मिक कर्तव्य** हैं। जो उस विशेष युग में मनुष्य की क्षमताओं और गुणों के अनुसार तय लिए गए होते हैं।

सतयुग का युगधर्म था,
हजारों वर्षों तक तप के साथ कठोर **ध्यान करना।**
क्योंकि मनुष्य की आयु सरेराश 1,00,000 वर्ष रेहती थी
तथा अधिकांश लोग सत्वगुणी थे।

त्रेतायुग का युगधर्म था,
ऐश्वर्य से भरपूर **महान यज्ञ करना।** क्योंकि उस समय के लोग,
धरती और स्वयं वो समय भी अत्यंत ऐश्वर्यवान होता था।
और मनुष्य की सरेराश आयु 10,000 वर्ष हुआ करती थी।

अब यहाँ से लोगों में धार्मिक गुण घटने लगे,
इसलिए यहाँ से वर्ण-आश्रम-धर्म का आरम्भ किया गया था।

द्वापरयुग का युगधर्म था,
बड़े बड़े मंदिरों का निर्माण करना और उन मंदिरों में ऐश्वर्यवान रूप से **भगवान की पूजा करना। क्योंकि युग के हिसाब से मनुष्यों के** धार्मिक गुण आधे हो गए थे। और सरेराश आयु 1000 वर्ष रेह गयी थी।

फिर आया **कलियुग,**
जो की पाखंड और झगड़े का युग होने से इस युग में सरेराश आयु 100 वर्ष और फिर घोर कलियुग में 20 वर्ष ही रेह जाती है।

इसलिए,
इस पतित समय में उपरोक्त तीन में से किसी भी प्रक्रिया को प्रभावी रूप से करना असंभव होने के कारण, इस युग का युगधर्म और **आत्म-साक्षात्कार का एकमात्र मार्ग है हरिनाम संकीर्तन,** यानी की भगवान के पवित्र नामों का जप।

5. आपद धर्म :
(परिस्थितियाँ के बदलने पर बदलता है)

आपदि कर्तव्यो धर्मः।
विपत्ति के समय में पालन की जाने वाला धर्म है आपद धर्म।

उदाहरण के लिए,
अक्सर दैवीय या सांसारिक संकटों जैसे अनपेक्षित कारणों, जैसे कि क्रांतियों, अकाल, जबरन देशान्तरण आदि के कारण, लोग अपने निर्धारित कर्तव्यों का पालन करने में सक्षम नहि हो सकते हैं।

तो ऐसी परिस्थितियों में,
एक व्यक्ति या व्यक्तियों का समूह दूसरे वर्ण का धर्म अपना सकता है, और विपत्ति के समय की स्थिति को सम्भाल सकता है।

वर्णाश्रम धर्म

वर्णाश्रम धर्म स्वयं **भगवान द्वारा बनाई गई** दिव्य व्यवस्था है। जो की लोगों को **चार वर्गों (4 वर्ण)** और उनके जीवन को **चार चरणो (4 आश्रम)** में विभाजित करके बनाया गया है।

चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः।

'भौतिक प्रकृति के **तीन गुणों** और उनसे जुड़े **कार्य के अनुसार**, मानव समाज के **चार विभाजन मेरे (भगवान) द्वारा बनाए गए हैं।**'

4 वर्ण :
ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और क्षुद्र।

4 आश्रम :
ब्रह्मचारी, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास।

वर्ण धर्म :

पिंडे पिंडे मतिभिन्ना:
हर एक व्यक्ति अपने अलग अलग प्राकृतिक गुणों, प्रवृत्तियों तथा शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक क्षमताओं के साथ पैदा होता है। उसके अनुसार वो समाज की **अलग अलग जवाबदारियों को उठाने के लिए उचित होता हैं।**

व्यक्ति का वर्ण उसके **गुण और कर्म** (गुणकर्मविभागशः) के अनुसार निर्धारित होते हैं, और उसके गुण और कर्म उसके **प्रारब्ध, जन्म, प्रवृत्ति, संस्कार** और **व्यक्ति के प्राकृतिक गुण** के अनुसार ही बनते है।

कलियुग से पेहले जब संस्कारों और कर्तव्यों का कठोरता से पालन किया जाता था और महिलाएं अपनी पवित्रता और शील अपने वर्णों में बनाए रखती थीं, तब **परिवारों में उचित वर्णों के संतान पैदा होते थे, जो** स्वयं ही प्रारब्ध, कर्म, प्रवृत्तियों, प्राकृतिक गुणों और **संस्कारों का पालन करते थे।**

परंतु जैसे-जैसे **कलयुग** बढ़ा,
वो व्यवस्था अब पेहले जैसी भरोसेमंद नहीं रही,
क्योंकि वर्णयुक्त परिवारों की संरचनाएँ अब टूट चुकी हैं।
और वर्ण और गोत्र आपस में मिलकर **बस वर्ण शंकर पैदा कर रहे हैं।**

तो अब,
हम जन्म मात्र से ब्राह्मण, क्षत्रिय या कोई वर्ण को नहीं ले सकते।
शास्त्रों में वर्णित गुणों से मेल खाने के लिए उनका **पारंपरिक गुरु द्वारा प्रशिक्षण** और परीक्षण **करना ज़रूरी होगा।** जिसके बाद जो भी उसके गुण स्पष्ट होते है उसके अनुसार कर्तव्यों को सौंपना उचित है।

चार वर्णों के प्राकृतिक गुण :

1. ब्राह्मण : सात्त्विक प्रभुत्व

ब्रह्म जानाती ब्राह्मणः।
जो परम सत्य को समझता है वो ब्राह्मण है।

तथा महाभारत शांति पर्व के अनुसार,
येन सर्वमिदं बुद्धम प्रकृतिर्विकृतिश्च या,
गतिज्ञः सर्वभूतानां नं देवा ब्राह्मणा विदुः।।

'जिसको इस सम्पूर्ण जगत की नश्वरता का ज्ञान है, जो प्रकृति और विकृति से परिचित है तथा जिसे सम्पूर्ण प्राणियों की गति का ज्ञान है उसे देवता लोग ब्राह्मण जानते हैं।'

तदुपरांत,
स्कंद पुराण के अनुसार,
जन्मना जायते शुद्रः संस्कारात् द्विज् उच्यते।

'हर कोई जन्म से क्षुद्र ही होता है, केवल उचित प्रशिक्षण
और संस्कारों से ही व्यक्ति द्विज (ब्राह्मण) बनता है।'

और ब्राह्मण का चरित्र कितना महत्वपूर्ण है
इसपर ज़ोर देते हुए पद्म पुराण के सृष्टि खंड में कहा गया है की,
समाचारस्थमपि चाण्डालम तं देवा ब्राह्मणं विदुः।।

'यहां तक कि एक चरित्रवान चांडाल को भी देवता ब्राह्मण मानते है।'

ब्राह्मणों के गुण :

शमो दमस्तपः शौचं सन्तोषः क्षान्तिरार्जवम्।
मद्भक्तिश्च दया सत्यं ब्रह्मप्रकृतयस्त्विमाः॥ श्रीमद् भागवतम् 11.17.16

शमो दमस्तपः शौचं क्षान्तिरार्जवमेव च।
ज्ञानं विज्ञानमास्तिक्यं ब्रह्मकर्म स्वभावजम्॥ भगवद् गीता 18.42

- **शांति** और **तपस्या**
- **मन** और **इंद्रियों पर नियंत्रण**
- **सत्य** और **स्वच्छता**
- **ज्ञान** और **बुद्धि**
- **संतुष्टि** और **सहनशीलता**
- **सादगी** और **सीधापन**
- **श्री भगवान की भक्ति**
- **दूसरों** के दुख **के लिए करुणा**
- **कंचन** (सोना, धन) **कामिनी (मोहक** महिला) **और कीर्ति** (प्रसिद्धि) **से दूरी**

ब्राह्मणों के कर्तव्य :

अध्यापनमध्ययनं यजनं याजनं तथा।
दानं प्रतिग्रहश्चैव षट् कर्माण्यग्रजन्मनः॥ मनुस्मृति 10.75

- **पठन और पाठन :** शास्त्र पढ़ें और पढ़ाएं
- **यज्ञ :** यज्ञ करें
- **याजन :** दूसरों के लिए यज्ञ करें
- **दान :** दूसरों से दान स्वीकार करें
- **प्रतिग्रह :** उस धन का उपयोग मंदिर पूजा, देवता पूजा और प्रसाद वितरण के लिए करें।

2. क्षत्रिय : राजसिक प्रभुत्व

क्षतात त्राय ते इति क्षत्रियः।
'**क्षत्रिय** वो है जो **क्षतियों से समाज की रक्षा** करता है।'
वे पाँच मुख्य क्षतियां है पाप, अधर्म, पीड़ा, दुष्ट और शत्रु।

क्षत्रियों के गुण :

तेजो बलं धृतिः शौर्यं तितिक्षौदार्यमुद्यमः। स्थैर्यं ब्रह्मण्यमैश्वर्यं क्षत्रप्रकृतयस्त्विमाः॥
शौर्यं तेजो धृतिर्दाक्ष्यं युद्धे चाप्यपलायनम्। दानमीश्वरभावश्च क्षात्रं कर्म स्वभावजम्॥
- श्रीमद् भागवतम् 11.17.17 और श्रीमद् भगवद् गीता 18.43

- **पराक्रम** और **वीरता**
- **वीरता** और **सहिष्णुता**
- **उदारता (दान में बड़ा हृदय)**
- **लड़ाई से कभी पीछे न हटना**
- **ब्राह्मणों** की **भक्ति**
- **शारीरिक शक्ति** और **दृढ़ता**
- **नेतृत्व** की **क्षमता**
- **महान दृढ़ता** और **हथियार कौशल**
- **संप्रभुता** और **स्थिरता**

क्षत्रियों के कर्तव्य :

- **समाज** का **पोषण** करना (प्रजापालन)
- **पांचों कमजोर (अबला) की** अपने **प्राणों से रक्षा करें,**
    - **संत :** ब्राह्मण, भिक्षु, शिक्षक और पुजारी की रक्षा होनी चाहिए।
    - **औरतें :** स्त्रियों पे अत्याचार करने वालें कभी दण्डरहित ना छूटे।
    - **बच्चे :** गुरुकुलों में उन्हें सम्पूर्ण रूप से रक्षा, शिक्षा और भरण-पोषण सही रूप से मिलता रहे।
    - **वृद्ध :** उनका आदर हो और वे कभी आश्रय और सेवा विहीन न हो।
    - **गाय :** गौधन हमेशा सम्मानित और पोषित रहे।
- **नागरिकों को न्याय दें** और **दुष्टों** और **अपराधियों को सजा** दें।
- **सुनिश्चित करें कि हर कोई** अपना **कर्त्तव्य पालन सही से कर रहा है।**
- हर नागरिक को जिम्मेदारी और रोजगार बांटकर सबको उचित रूप से व्यस्त रखें ताकि किसिको अपराध करने की फ़ुरसत भी ना मिले।

3. वैश्य : राजसिक प्रभुत्व + तमस

विश : प्रजा
वैश्य : प्रजा पोषक

वैश्यों के गुण :

आस्तिक्यं दाननिष्ठा च अदम्भो ब्रह्मसेवनम्।
अतुष्टिरर्थोपचयैर्वैश्यप्रकृतयस्त्विमाः॥ - श्रीमद् भागवतम् 11.17.18

- वेदों और ईश्वर में आस्था
- परोपकारी हृदय
- जरूरतमंदों के लिए करुणा,
- अभिमान से मुक्त,
- ब्राह्मणों की सेवा,
- धन संचय करने की अतृप्त इच्छा।

वैश्यों के कर्तव्य :

कृषिगौरक्ष्यवाणिज्यं वैश्यकर्म स्वभावजम्। - भगवद् गीता 18.44

- कृषि
- गायों का पालन-पोषण
- दूध उद्योग
- व्यापार और वाणिज्य
- जितना हो सके उतना धन अर्जित करना
- धर्म के लिए नियमित दान करना
- जरूरतमंदों के लिए नियमित दान करना

4. शूद्र : तामसिक प्रभुत्व + रजस

शूद्रों के कर्तव्य :

शुश्रूषणं द्विजगवां देवानां चाप्यमायया।
तत्र लब्धेन सन्तोष: शूद्रप्रकृतयस्त्विमा:॥
- श्रीमद् भागवतम् 11.17.19

- देवताओं की निष्ठा से सेवा
- ब्राह्मणों की सेवा
- गायों की सेवा
- इन सेवा से प्राप्त धन से संतुष्टि।

परिचर्यात्मकं कर्म शूद्रस्यापि स्वभावजम् ॥
- भगवद् गीता 18.44

शूद्र सुयोग्य लोगों की सेवा करते हैं और अपने विभिन्न कौशल और व्यवसायों के साथ आजीविका अर्जित करते हैं जैसे की,

- कारीगर,
- तकनीशियन,
- नौकरी करने वाले,
- दर्जी,
- शिल्पकार,
- नाई, आदि।

शूद्रों के अंदर इस प्रकार का नैतिक अहंकार भी होता है कि वे सिर्फ़ धर्मी व्यक्ति की ही सेवा करेगा। यदि कोई **अपने गुरु, धर्म या वेदों के विरुद्ध कुछ** कर रहा है तो वो उनकी सेवा कितने भी धन के लिए **नहीं करेगा।**

इनके उपरांत ऐसे लोग भी हैं **जिनके पास** वर्णाश्रम
के चार वर्गों में से किसी वर्ण की **कोई योग्यता नहीं है**।
और वो लोग भी जिन लोगों ने **अपने वर्ण के नियमो को तोड़ा है,**
या फिर कपट किया है
तो **वो बनता हैं..**

अंत्यज (बहिष्कृत) : तामसिक प्रभुत्व

अशौचमनृतं स्तेयं नास्तिक्यं शुष्कविग्रह:।
काम: क्रोधश्च तर्षश्च स भावोऽन्त्यावसायिनाम्॥
- श्रीमद् भागवतम् 11.17.20

जो निम्नतम वर्ग में हैं, और जो वर्णाश्रम व्यवस्था से विमुख हैं,
उनकी प्राकृतिक विशेषताएं हैं : **अशुद्धता, कपट, चोरी,**
वैदिक धर्म में विश्वास की कमी, व्यर्थ झगड़ा, काम,
क्रोध और भौतिक वस्तुओं के लिए **लालच।**

तथा इन **सभी चार वर्णों के लिए**
सामान्य कर्तव्य है :

- अहिंसा
- सत्य
- चोरी मे भाग न लेना
- काम, क्रोध और लोभ से मुक्ति
- सभी जीवों का कल्याण के लिए हमेशा प्रयत्नशील रेहना

ऐसे हर व्यक्ति अपने वर्ण के विशिष्ट **कर्तव्य मात्र को पूरा करके** अपने जीवन में, समाज में और आध्यात्मिक **चेतना में उच्च स्तर पर जाता** है।

यद्यपि,
हमें समझना चाहिए की,
केवल जन्म ही नहि,
परंतु **संस्कार भी निश्चितता नहि देते की,**
व्यक्ति उस वर्ण में हमेशा स्थित रहेगा।

यदि संस्कार करने और उचित प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद भी,
जीवन के किसी मोड़ पर किसी परिस्थितिजन्य कारण से किसी के
कर्म और आचरण में परिवर्तन होता है, तो भी **वो** अपने
वर्ण समाज में अपने पद से गिर जाता है।

शूद्रों ब्राह्मणतां एति ब्राह्मणश्चैति शूद्रताम् ।
क्षत्रियाज्जातं एवं तु विध्या द्वैश्यात्तथैव च।
- मनुस्मृति 10.65

'जैसे शूद्र ब्राह्मणत्व को और ब्राह्मण शूद्रता को प्राप्त होते हैं, उसी प्रकार क्षत्रिय और वैश्य से उत्पन्न शूद्र भी क्षत्रियत्व और वैश्यत्व प्राप्त होते हैं।'

इसलिए किसिको ये नहि सोचना चाहिए कि एक बार वो एक निश्चित वर्ण की स्थिति प्राप्त कर लेता है, तो वो हमेशा के लिए वहां रहेगा। वो तब तक ही वहाँ रहेगा जब तक उसका आचरण वर्ण नियमों आधारित रेहता है।

अब,
चारों वर्णों में भी,
जीवन के चरणों के अनुसार **चार विभाजन** हैं,
जो की **आश्रम** केहलाते हैं और इनमें से प्रत्येक आश्रम
में बांटे गए कर्तव्यों को केहते है...

आश्रम धर्म :

आश्रम व्यवस्था को **ऐसे** बनाया गया है की **व्यक्ति अपने** सभी चार पुरुषार्थों, धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की प्राप्ति करने के साथ साथ अपने समाज की सेवा और **आध्यात्मिक लक्ष्य की प्राप्ति** भी **कर सकता है।**

उसके लिए,
जीवन की सरेराश 100 वर्ष की आयु **को चार चरणों में** ऐसे **बांटा गया है, जिससे** एक **व्यक्ति** अपनी **आध्यात्मिक उन्नति** करने **के साथ साथ** अपनी क्षमताओं के अनुसार **समाज की** उत्तम रूप से **सेवा** भी **कर पाता है।**

उन चार चरणो में से पेहला चरण है,

ब्रह्मचारी : 25 वर्ष तक

ब्रह्म : आदर्श (इस विषय में)

आचारण : व्यवहार, शिष्टाचार

- जीवन के इस प्रथम चरण का उपयोग **चरित्र और आध्यात्मिक गुणों के विकास** के लिए किया जाता है।
- बच्चे को गुरु के मार्गदर्शन में **गुरुकुल में आदर्श आध्यात्मिक जीवन जीना** सिखाया जाता है।
- **ब्रह्मचारी** रेहकर विद्यार्थी अपने **गुरु** का दास बनके **सेवा** करता है।
- अपनी ऊर्जा का उपयोग वो अपनी और समाज की उन्नति के लिए अपने **शरीर, मन** और **आत्मा को प्रशिक्षित** करने के लिए **करता है।**
- यही वो चरण है जहां **समाज के लिए आदर्श नागरिक बनाए जाते हैं,** जो समाज का नेतृत्व करके उसे आगे बढ़ाते हैं।

फिर आता है दूसरा चरण,

गृहस्थ : 50 वर्ष तक

गृह : पारिवारिक घर

स्थ : स्थापित करना

- दूसरे चरण में व्यक्ति एक **पत्नी को स्वीकार** करके, **धार्मिक बच्चों** को **जन्म देकर, परिवार की स्थापना** करते हुए **समाज की सेवा** करता है।
- ऐसे **कर्तव्यों की पूर्ति से** उसकी **इच्छाएं** भी स्वयं ही **पूरी हो जाती हैं।**
- बिना धार्मिक लक्ष्यों के **मात्र यौन आकर्षण** से **विवाह** करने वाला **गृहमेधी** बनता है। जिनके **बच्चे अराजक** और **आत्मकेंद्रित जन्मते** हैं।
- एक गृहस्थ को ऐसे **धार्मिक बच्चे** पैदा करने चाहिए जो ईश्वर और समाज के लिए कर्तव्यों का निर्वाह कर सकें। **नहीं तो विवाह** और बच्चे दोनो ही उसके और **समाज दोनो के लिए बोझ ही** बनके रेह जाते हैं।
- यदि कोई **पुरुष** अपनी **पत्नी और बच्चों के मोक्ष का** उत्तरदायित्व नहीं ले सकता, तो उसे **विवाह नहीं करना चाहिए।**

फिर आता है तीसरा चरण,

वानप्रस्थ : 75 वर्ष तक

वन : जंगल

प्रस्थान : छोड़ कर जाना

- वानप्रस्थ को **संन्यास का प्रारंभिक चरण** माना जाता है।
- अपने परिवार और समाज के प्रति अपने सभी **अनिवार्य कर्तव्यों** को **पूरा करते ही,** पुरुष अपने **गृहस्थ जीवन से सेवानिवृत्त** हो जाते है।
- फिर वे पुरुष अपनी **अगली पीढ़ी** को **सभी जवाबदारियां सौंपते हुए वन के लिए प्रस्थान** करते है।
- जिसमें वो एकदम सादा जीवन जीते हुए ज़मीन पर सोते हैं और केवल फल और सब्जियां खाते हैं।
- तथा स्वयं को सभी **सामाजिक संबंधों से अलग करते है**।
- और **मुक्ति की** ओर अपनी अंतिम यात्रा की **तैयारी** करते है।

फिर अंत में आता है..

संन्यास जीवन : मृत्यु तक

सं : साथ में, सब कुछ **नी** : नीचे **सा** : फेंकना, डालना

ज्ञेयः स नित्यसंन्यासी यो न द्वेष्टि न काङ् क्षति ।
निर्द्वन्द्वो हि महाबाहो सुखं बन्धात्प्रमुच्यते॥ - भगवद् गीता 5.3

'वो कर्मयोगी जो **न तो कोई कामना करते हैं** और **न ही किसी से घृणा करते हैं उन्हें** नित्य **संन्यासी मानना चाहिए**। हे अर्जुन! सभी प्रकार के द्वन्द्वों से मुक्त होने के कारण **वे** माया के बंधनों से **सरलता से मुक्ति** पा लेते हैं।'

- वानप्रस्थ में समाज से वैराग्य के अभ्यास के बाद, पुरुष संन्यास ले लेता है और **शारीरिक धारणा** से स्वयं को पूरी तरह **से अलग** कर लेता है।
- अपने आध्यात्मिक लक्ष्यों और **परमात्मा से** अपने **संबंध** को **बढ़ाता है।**
- जिससे **समाज और** अपने **शरीर के प्रति लगाव के बिना,** वो **खुले हाथों से मृत्यु का खुशी-खुशी स्वागत कर सकते है।**

यहाँ,
एक ब्राह्मण इन **चारों आश्रमों** से होकर गुजरता है,
क्षत्रिय मुख्यतः **पेहले तीन** से होकर गुजरता है,
वैश्य पेहले दो से ,
और **क्षुद्र केवल एक, गृहस्थ।**

हालांकि,
वर्तमान युग में,
वानप्रस्थ जीवन के लिए कोई **उचित वन नहीं बचा** है,
ना ही कोई उचित आश्रम व्यवस्था बची है,
अपितु **कलियुग में सन्यास भी वर्जित है।**

इसलिए कलियुग के लिए शास्त्रों ने
युक्त वैराग्य का सुझाव दिया **है।**

जिसका अर्थ है **सब कुछ छोड़ना नहीं है,**
परंतु सब कुछ स्वीकार करना है,
परंतु अपने लिए नहीं,
मात्र और मात्र **धर्म और भगवान की सेवा के लिए।**

अब धर्म के बाद समय है
समझने का **धर्म के सूक्ष्मतम पेहलू** को, जो की है..

कर्म

तो,

कर्म वास्तव में क्या है?

कर्म शब्द,
धर्म शब्द की तरह ही,
हमारी संस्कृति में हमेशा से ही अलग अलग
स्थिति के अनुसार **कई अर्थों** के लिए प्रयोग किया गया है।

जैसे की,
क्रिया, कार्य, कर्तव्य, प्रतिक्रिया, परिणाम,
विहित कर्म, कर्म योग, पुण्य, प्रारब्ध वगैराह वगैराह।

परंतु मुख्य रूप से कर्म शब्द का प्रयोग दो अर्थों के लिए किया जाता है,

1. **कार्य** (Actions)
2. **बाध्य कर्तव्य** (Obligatory Duties)

कार्य के रूप में कर्म :

हमारे **शरीर की हर एक छोटी से छोटी हलचल** और यहाँ तक की **मन में किया गया छोटे से छोटा सा विचार भी हमारे द्वारा किया गया एक कर्म है**। फिर चाहे वे कितने भी छोटे क्यों न हो, परंतु हर उन कर्मों का परिणाम होता है।

ऐसे सभी **कर्म** के **दो स्वभाव** होते हैं,

पुण्य कर्म :

जिन कर्म से हम किसी के जीवन में उनके सुख दु:ख के हिस्से में जाकर, शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, या आध्यात्मिक, किसी भी रूप में उनका **सुख बढ़ाते है, या** फिर **दु:ख कम करते है,**
ऐसे कर्मो को **पुण्य कर्म केहते है।**

पाप कर्म :

जिन कर्म से हम किसी के जीवन में उनके सुख दु:ख के हिस्से में जाकर, शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, या आध्यात्मिक, किसी भी रूप में उनका **दु:ख बढ़ाते है, या** फिर **सुख कम करते है,** ऐसे कर्मो को **पाप कर्म केहते है।**

यहाँ ये जाना ज़रूरी है की, जब हम किसिको सुख या दु:ख देते है, तो वही सुख या दु:ख उतनी या **ज़्यादा मात्रा में हमारे ही पास** वापिस आता है। और ज्यादातर समय में ज़्यादा मात्रा में ही **आता है।**

कर्म का द्वंद्व : Duality of Karma

संसार में हमारी सारी गतिविधियों में कुछ मात्रा में **पुण्य और** कुछ मात्रा में **पाप होते ही हैं**। हमारे ज्यादातर कर्म कभी सम्पूर्ण रूप से पुण्य या पाप नहीं होते हैं। हमेशा ही मिले हुए ही होते है। भौतिक **अस्तित्व के जटिल स्वभाव के कारण उन्हें अलग किया ही नहीं जा सकता है।**

तो हमारी नीयत कितनी भी अच्छी क्यों न हो, हमारे कार्यों के कुछ तो ऐसे परिणाम होंगे ही जो हम समझ या समझा नहि पाएँगे।

इसलिए भगवान श्री कृष्ण भी अर्जुन को सुझाव देते हैं कि कभी भी **कार्मिक प्रतिक्रियाओं की जटिलताओं को समझने का प्रयास नहि करना चाहिए,** और सीखना चाहिए कि कर्म, विकर्म और अकर्म क्या हैं?

कर्मणो ह्यपि बोद्धव्यं बोद्धव्यं च विकर्मण: ।
अकर्मणश्च बोद्धव्यं गहना कर्मणो गति: ।।

यहाँ कर्म का अर्थ है,
शास्त्रों में निर्धारित हमारे कर्तव्य,
जो मुख्य रूप से हमारे **पुण्य कर्मो का कारण बनता है।**

विकर्म का अर्थ है,
शास्त्रों में निर्धारित हमारे कर्तव्यों के विरुद्ध किये गए कर्तव्य, जो प्रमुख रूप से हमारे **पाप कर्म का कारण बनते है।**

और अकर्म का अर्थ है,
शुद्ध रूप से **भगवान की** संतुष्टि या सेवा मे किए गए कर्तव्य,
यही वो कर्म है जो **किसी भी प्रकार के बंधन का कारण नहीं बनते हैं।**

'इनके बारे में हमने छट्ठे अध्याय 'धर्म' में और गेहराई में समझाया है।'

बाध्य कर्तव्य के रूप में कर्म :

अब पेहले ये समझते है,
इस भौतिक दुनिया में रेहने के लिए,
हम सब जीवों को हमारे पूर्वजों, देवों, ऋषियों, और स्वयं भगवान के द्वारा वायु, जल, भोजन, सूर्य प्रकाश, शिक्षा, भौतिक संसाधनों, आशीर्वाद, सम्मान, कर्म और कई अन्य स्थूल और सूक्ष्म स्वरूप में अनेक **सुविधाएँ** बहोत ही सहज़रूप से **दी गई है** और लगातार दि जा रही हैं।

और हम इन सब सुविधाओं का कर चुकाने के लिए बाध्य हैं।
उन सारे असीमित करो को चुकाना लगभग असम्भव होने के बावजूद, हमारे साधु और शास्त्रों ने हमारे लिए कुछ ऐसे कर्म बनाएँ है जिनसे हम उन करो को चुका सकते है। इन कर्तव्यों को बाध्य कर्म केहते है। और प्रत्येक मनुष्य के लिए उन कर्तव्यों को पूरा करना अत्यंत ही अनिवार्य है।

ये बाध्य कर्म दो प्रकार के होते हैं,

1. **लौकिक कर्म** : शारिरिक कर्म :

लौकिक कर्म वे अनिवार्य कर्म है जो हमें इस भौतिक शरीर में रेहकर इस भौतिक जगत में करने होते हैं। इसलिए इन कर्मो को शारिरिक कर्म कहा जाता है। जैसे कि व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक कर्तव्य।

2. **अलोकिक कर्म** : आत्मिक कर्म :

अलोकिक कर्म वे अनिवार्य कर्म है जो सिर्फ़ शरीर तक सीमित नहि है परंतु हम सब जीवात्माओ का सनातन कर्तव्य हैं। जो हमें भगवान के अंश होने के नाते हमेशा के **लिए करना है**। और जो हमारे अस्तित्व का उच्चतम हेतु है।
जैसे कि भगवद भक्ति, ज्ञान अर्चन, ध्यान, प्रेममयी सेवा।

इन लौकिक कर्मों को आगे पाँच मुख्य प्रकारों में वर्गीकृत किया गया है :

1. **नित्य कर्म** : दैनिक अनिवार्य कर्तव्य
2. **नैमित्तिक कर्म** : प्रासंगिक अनिवार्य कर्तव्य (केवल आवश्यक होने पर)
3. **काम्य कर्म** : मनोवांछित फल की प्राप्ति के लिए किए जाने वाले कर्म
4. **प्रायश्चित कर्म** : पापों के निवारण के लिए की गए कर्म
5. **निष्काम कर्म** : बिना किसी फल की इच्छा के किए गए कर्म
6. **निषिद्ध कर्म** : शास्त्र वर्जित पाप और अपराध कर्म, निषिद्ध कर्म बाध्य कर्म नहि है, इसे वंचित लौकिक कर्म कहा जाता है, जो की करना नहि चाहिए परंतु इस लोक में होता है।

1. नित्य कर्म

हम जन्म से ही वायु, जल, भोजन, सूर्यप्रकाश, शिक्षा, भौतिक संसाधनों, आशीर्वाद, सम्मान, कर्म और कई अन्य स्थूल और सूक्ष्म स्वरूप में अनेक सुविधाओं और **विशेषाधिकारों** का आनंद लेते हैं, जो की हमारे ऊपर ऋण बनके बढ़ता रेहता है।

परंतु ये शास्त्रोक्त **दैनिक नित्य कर्म,**
ना ही केवल उन **ऋणों को चुकाते हैं** परंतु हमें **नि:स्वार्थ और विनम्र** भी **बनाते** हैं। इन कर्म के लिए किसी पुजारी की आवश्यकता नहीं होती है।

गृहस्थों के दैनिक नित्य कर्मों में से कुछ मुख्य **नित्य कर्म** हैं :

1. प्रातः संध्या वंदन (प्रभात)
2. समितादान (ब्रह्मचारी के लिए)
3. औपसना
4. अग्निहोत्र (अग्निहोत्रियों के लिए)
5. अग्नि संधान
6. देव-ऋषि-पितृ तर्पण
7. ब्रह्म यज्ञ
8. वैश्व देवमी
9. भगवद आराधना
10. मध्यनिक (दोपहर)
11. सायम संध्या वंदन (संध्या)
12. प्रत्याब्दिका श्राद्ध (वार्षिक समारोह)
13. एकादशी व्रत (सभी के लिए)
14. अमावस्या
15. महालय

नित्य कर्म न करने से शरीर और मन के दोष तथा अवगुण बढ़ते है,
अपितु कभी-कभी उससे **पाप** भी होता है।

2. नैमित्तिक कर्म

नैमित्तिक कर्म प्रासंगिक अनिवार्य कर्तव्य या संस्कार **है** जो किसी व्यक्ति को विशेष अवसरों पर करने की आवश्यकता होती है।

इस कर्म में अनुष्ठान करने के लिए शास्त्रों में दिए गए जप, होम या दान के उचित संचालन के लिए **पुजारी की आवश्यकता होती है**।
इन **कर्म को न करने से** व्यक्ति पर **दोष उत्पन्न** होते हैं।

गृहस्थ के लिए नैमित्तिक कर्मों में मुख्य रूप से निम्नलिखित
16 संस्कार और अन्य पितृ कर्म आते हैं :

16 संस्कार

1. **गर्भदान** - गर्भाधान संस्कार
2. **पुमसावन** - जन्म से पेहले का संस्कार
3. **सिमन्तोन्नया**- जन्म से पेहले का संस्कार
4. **जातककर्म** - जन्म के समय
5. **नामकरणम** - नामकरण संस्कार
6. **निश्क्रमण** - बच्चे की पेहली सैर, सूर्य को देखना
7. **कर्ण वेदना** – कान छिदवाने का संस्कार
8. **अन्नप्राशन** - खिलाना
9. **चौला** - मुंडन
10. **विद्यारंभ** - अध्ययन का आरम्भ
11. **उपनयन** - पवित्र जनेयु सूत्र
12. **वेदारम्भ** - वेदों के अध्ययन का आरम्भ
13. **केशंथा** - दाढ़ी का शौर कर्म (Shaving)
14. **संवर्तन** - अध्ययन समाप्ति
15. **विवाह** – विवाह
16. **अंत्यष्टि** - मृत्यु अंतिम संस्कार

(हालाँकि शास्त्रों में इनको गिनके कुल 40 संस्कारों का उल्लेख है)

6 पितृ कर्म

1. प्रेत श्राद्ध
2. सपिंडीकरण
3. संक्रमण श्राद्ध (मासिक)
4. ग्रहण श्राद्ध (सूर्य / चंद्र ग्रहण)
5. षोडकुंभम
6. नंदी श्राद्ध

अन्य नैमित्तिक कर्म

1. उपकर्म (अवनि अवित्त)
2. गायत्री जप

3. काम्य कर्म :

अपनी निजी **मनोकामनाओ को पूर्ण करने के लिए किए जाने वाले** यज्ञ, तप और व्रत आदि **कर्मों को काम्य कर्म केहते हैं।** और क्यूँकि ये व्यक्तिगत इच्छाओं के लिए किए जाते हैं, ये वैकल्पिक हैं और **अनिवार्य नहीं हैं।**

अपितु फिर भी अगर कोई इन्हें करना चाहता है तो उन्हें करते वक्त साधक को आचार संहिता अनुसार धर्म के नियमो का पालन करना चाहिए।

काम्य कर्म के मुख्य उदाहरण हैं,

- **पुत्रकामेष्टि यज्ञ** : संतान प्राप्ति के लिए
- **वरुण यज्ञ** : बंजर भूमि में वर्षा प्राप्त करने के लिए
- **अग्निस्तोमा** और
- **अग्नियान** वगैराह वगैराह..

अपितु ये अच्छे कार्य हैं, परंतु व्यक्तिगत इच्छाओं से प्रेरित हैं।
और क्यूँकि ये **कर्म राजसिक आवेग और लगाव से प्रेरित होते है,**
इन कर्म का परिणाम घोर रूप से सकारात्मक या नकारात्मक हो सकता है।

और क्यूँकि काम्य कर्म पूरी तरह से स्व-प्रेरित है और भौतिक इच्छाओं को बढ़ाने वाला है, इसलिए इसे सत्य और ज्ञान के मार्ग पर चलने वालों तथा **साधुओं के लिए अवांछनीय** कहा जाता है।

4. प्रायश्चित कर्म :

जब किसी व्यक्ति को पता चलता है कि उसने जाने या अनजाने में कुछ पाप या अपराध किया हैं, और **स्वयं की इच्छा से प्रायश्चित** करने के लिए तैयार होते हैं, तो **शुद्ध मानसिकता** और उचित अनुष्ठान संस्कार **से** प्रायश्चित कर्म करके वे उन **पाप कर्म के परिणामों से छुटकारा पा सकता है**।

प्रायश्चित कर्म अलग अलग रूप में हो सकते है,

1. **प्रार्थना,**
2. **तीर्थ यात्रा,**
3. **दान,**
4. **यज्ञ,**
5. **उपवास,**
6. **तप,**
7. **साधना ओर**
8. **स्व-अनुशासनात्मक कार्य** (Self-disciplinary actions)

व्यक्ति को अपने पाप कर्म के बारे में अपने गुरु को सब बताना चाहिए और **गुरु जिस भी प्रायश्चित कर्म की सलाह दे उस पर कार्य करना चाहिए।**

क्यूँकि **प्रायश्चित कर्म का उद्देश्य पाप करने वृत्तियों को दूर करना है** जो की सभी **पापों की जड़ हैं।** और अपितु उन पाप कृत्यों द्वारा मन पर छोड़े गए प्रभाव के कारण, हमारा मन उन पाप कार्यों को फिरसे करने कि लिए तरसता रेहता है, जो की हमें फिरसे नरक की ओर ही ले जाएगा, जब तक कि उस पाप करने की वृत्तियों को हम प्रार्थना और प्रायश्चित कर्मो से दूर नहीं करते।

सच्चा प्रायश्चित मात्र तभी प्राप्त होता है जब **हृदय में शुद्धता** और मन में **सद्भावना जागती है।** और ये **प्रायश्चित कर्म** भी वैकल्पिक हैं, क्योंकि ये भी व्यक्ति के अपराध पर हुए पछतावे और उसके अपने हृदय **को शुद्ध और पवित्र बनाने के संकल्प की दृढ़ता पर निर्भर करता है।**

5. निष्काम कर्म :

निष्काम कर्म, वे कार्य है जो **बिना** किसी **फल कि अपेक्षा के किए गए** होते हैं। ये निस्वार्थ और इच्छाहीन होने के कारण **कर्म योग का मूल संदेश** भी हैं।

बिना किसी उद्देश्य या अपेक्षाओं के कार्य करना तभी संभव हो सकता है जब अनासक्ति (Detachment) का अभ्यास किया जाए। **आशक्ति सभी दुखों का मूल कारण है** इसलिए सभी कार्यों को समाज और अंत में प्रभु के प्रति समर्पण की भावना के साथ किया जाना चाहिए।

क्यूँकि हमारे सारे कर्मो के परिणाम तत्काल नहि होते हैं,
जैसे कि आम काटने पर गुटली तुरंत निकलती है, परंतु उसी गुटली को आज बोने पर उसको पेड़ बनने और उसपर आम आने में कई साल लगते हैं। इसलिए अगर समाज निष्काम रूप से गुटली बोना छोड़ दे तो भविष्य में किसिको आम खाने को ही नहि मिलेंगे।

तदुपरांत निष्काम कर्म बंधन में नहीं बांधता है और **मनुष्य को बंधन से मुक्त कर**के उसे मुक्ति का मार्ग की ओर ले जाता **है।**

जिस प्रकार द्रौपदी ने कृष्ण की खून से बेह रही उंगली को बांधने के लिए अपनी साड़ी का एक टुकड़ा फाड़ दिया था, और जो कि सालों बाद उनकी मर्यादा और सम्मान बचाने के लिए भगवान ने एक लंबी साड़ी बनाकर उसे एक हजार गुना रूप में दिया था।

इस प्रकार हमें कर्मों को **बिना किसी परिणाम की अपेक्षा के** केवल **निस्वार्थ और शुद्ध भाव** और पूर्ण विश्वास के साथ करना चाहिए। और समझना चाहिए की 'हम जैसा बोते है, वैसा ही पाते है।'

6. निषिद्ध कर्म :

निषिद्ध कर्म वे कर्म हैं जो शास्त्रों द्वारा **प्रतिबंधित हैं।**
हर एक व्यक्ति को इनसे पूरी तरह बच कर रेहना चाहिए।

उनमें से कुछ हैं :

1. **हत्या,**
2. **चोरी,**
3. **जुआ,**
4. **नशा,**
5. **अवैध सम्बंध वग़ैरह...**

इन छः प्रकार के कर्मो के उपरांत,
अलग अलग कारकों के अनुसार कर्मो के अन्य कई प्रकार है।

जैसे की,
सात्विक कर्म, राजसिक कर्म, तामसिक कर्म,
कायिक कर्म, मानसिक कर्म, संघिक कर्म, कार्तव्य कर्म, नीति कर्म, श्रौत कर्म,
स्मार्त कर्म, पुराणिक कर्म, विधायक कर्म, श्रेयस कर्म,
प्रियस कर्म वगैराह...

अब,

इन सभी **कर्मों के अनुसार,**

जीवात्मा इस पूरे विशाल ब्रह्मांड में अनंत काल तक घूमते रेहते हैं।

उन्मे से कुछ को उनकी चेतना के स्तर और कार्मिक योग्यता के अनुसार ऊपरी लोकों और कुछ को नीचे के लोकों में भेजा जाता है।

उन सभी लोकों के बारे में समझने के लिए,
आइए पेहले समझते है...

ब्रह्मांड

यदि

आपने कभी किसी यज्ञ में भाग लिया है,
तो आप ने ये श्लोक वहाँ ज़रूर सुना होगा,
अगर नहीं तो रामायण सीरियल में तो अचूक सुना ही होगा...

...जम्बूद्वीपे भरतखण्डे आर्यवर्ते भारतवर्षे...

क्या आप जानते हैं ये कौन सा श्लोक है?
और हर यज्ञ समारोह में इसका पाठ क्यों किया जाता है?

चलीए हम बताते है,
इसे **संकल्प मंत्र** केहते हैं,
हर एक यज्ञ समारोह की शुरुआत में इसका पाठ किया जाता है,
स्वर्गीय देवों के लिए **ब्रह्मांड में हमारे यज्ञ के**
स्थल और समय की घोषणा करने के लिए।

जिससे वो यज्ञ देवताओं के लेखों में दर्ज हो सके,
और वे ये सुनिश्चित कर सके कि **यज्ञ कहां** और **कब हो रहा है।**

हालाँकि,
हमें इस श्लोक को समझने के लिए,
अपने **ब्रह्मांड की संरचना** को समझने की जरूरत होगी।

तो आइए समझते है,

परंतु, इससे पेहले कि हम शुरू करें, पेहले सीखते है

वैदिक ब्रह्मांड के विज्ञान का कुछ मूल ज्ञान...

- हम मनुष्य सम्पूर्ण ब्रह्मांड के अस्तित्व में से उतने ही भाग को देख और समझ सकते है जितना हमारी भौतिक इंद्रियों द्वारा देख और समझने के लिए बनाया गया है। और उसको भी हम ठीक वैसे ही देखेंगे और समझेंगे जैसे देवी देवता हमें दिखाना चाहते हैं।

- हमारी **भौतिक इंद्रियां** अस्तित्व को **केवल तीन डाइमेंशन्स (आयाम) में देख सकती हैं**। बाकि के डाइमेंशन्स को हमारी सीमित इंद्रियों के माध्यम से नहीं देखा जा सकता। कुछ विद्वानो के मुताबिक़ कुल 64 डाइमेंशन्स हैं, हालाँकि हमें शास्त्रों में अभी इसका प्रमाण नहि दिखा।

- **मनुष्य दृष्टि** केवल अस्तित्व के **स्थूल पेहलूओं को देख सकती है**, जो की दिव्य दृष्टि की तुलना में ब्रह्मांड का बहोत ही कम विवरण (Details) दे पाती है। जब की **दिव्य दृष्टि** ब्रह्मांड के ज़्यादातर डाइमेंशन्स और उसके **शुक्ष्म पेहलूओं को तक देख पाती है।**

- उन **डायमेंशनल सीमाओ** को सामान्य मनुष्य पार नहीं कर सकता। परंतु ऐसे **दो तरीके** हैं जिनसे मनुष्य उन डायमेंशनल सीमाओं को पार कर ब्रह्मांड के अन्य भागो तक पहुंच सकता है।
  1. आवश्यक **कार्मिक योग्यता प्राप्त करके।**
  2. किसी ऐसे व्यक्ति का **आशीर्वाद प्राप्त करके** जिसके पास पेहले से ही वो कार्मिक योग्यता हो। जैसे की **देवता, पूज्य ऋषि इत्यादि।**

- इस सम्पूर्ण अस्तित्व को शास्त्रों में '**अचिन्त्य**' प्रकृति का बताया गया है। जिसका अर्थ है कि उसे पूरी तरह से **समझा नहीं जा सकता है,** ब्रह्मा द्वारा भी नहि।

- परंतु शास्त्रों ने हमारे लिए इस ब्रह्मांड का विवरण **मनुष्यों के लिए तीन डाइमेंशन्स में सरल करके दिया** है, जहां हम पृथ्वी को मात्र एक गोले के रूप में देखते हैं, परंतु अगर उसे मल्टी डाइमेंशनल दिव्य दृष्टि से सम्पूर्ण रूप से देखा जाए तो वो एक गोले से कहीं ज़्यादा अधिक है।

तो,

जानिए की,

वैदिक ब्रह्माण्ड विज्ञान का विषय इतना विशाल है,
की अगर पूरा पुस्तकालय भरकर भी उसके ऊपर साहित्य लिख दें,
फिर भी उसे पूर्ण न्याय नहीं दे पाएँगे।

जरा सोचिए,
हम यहां पर हमारे महान 'अचिंत्य ब्रह्मांड' के बारे में बात कर रहे हैं!
क्या सच में हम इतने मुर्ख है, जो ये सोच रहे है की,
हम, जो उस महान ब्रह्मांड की धूल रज के दस लाखवें हिस्से के बराबर भी नहि है, हम उस 'अचिंत्य ब्रह्मांड' को सम्पूर्णता से समझ सकेंगे?

हालांकि इस अध्याय में हम उस सम्पूर्ण ब्रह्मांड ज्ञान के,

0.00000000000000000000000000001%

हिस्से का मुख्य मुख्य ज्ञान, हो सके इतनी सरलता से जानने का प्रयास करेंगे।

तो,
भारत वर्ष जिसे हम आज इंडिया समझते हैं,
वो शास्त्रों के अनुसार **सम्पूर्ण भारतवर्ष नहीं है।**

ये भारत खंड भी नहीं है।
भारत खंड वर्तमान **इजरायल से लेकर**
इंडोनेशिया तक प्रसारित **है।**

जो कुल **9 खंडो** में से मात्र एक है :

1. **ऐंद्र खंड**
2. **कसेरू खंड**
3. **ताम्रपर्ण खंड**
4. **गभस्तीमत खंड**
5. **नाग खंड**
6. **सौम्य खंड**
7. **वरुण खंड**
8. **गंधर्व खंड**
9. **भारत (कुमारिका) खंड**

इस नौ खंडो को मिलकर बनता है भारतवर्ष,
जो की वो पूरी पृथ्वी है जिसे हम देख सकते हैं।
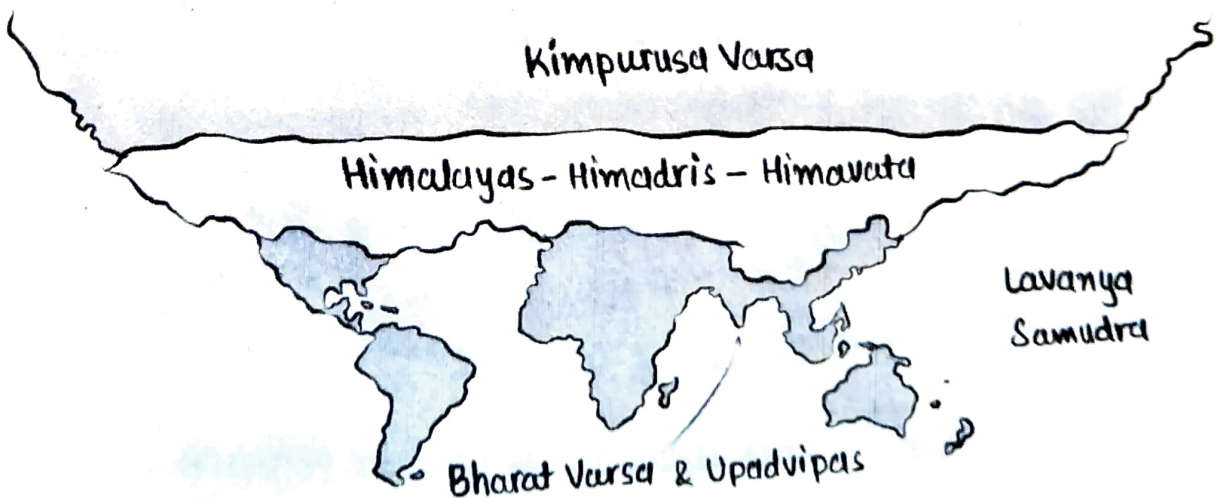
अब,

ये भारतवर्ष,

जम्बूद्वीप पर 8 **पर्वत श्रृंखलाओं** द्वारा अलग किए गए
कुल 9 **वर्षों** में से **मात्र एक वर्ष है।**

और वो भी **जम्बूद्वीप के सबसे दक्षिणी छोर** पर **सबसे छोटा वर्ष।**

JAMBŪDVĪPA
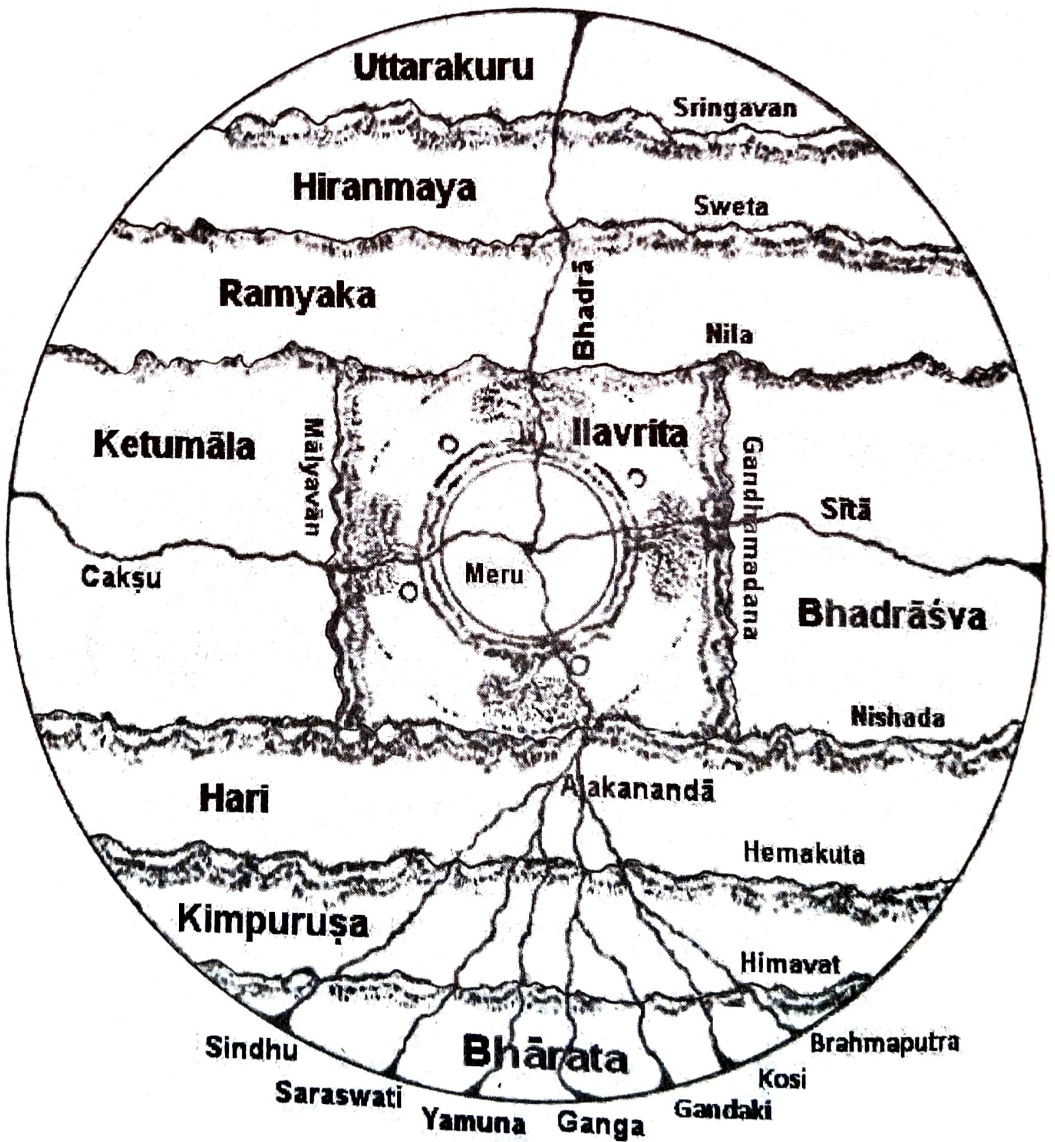
9 Varṣas, 9 Mountains & Major Rivers

हाँ, जम्बूद्वीप के **सबसे दक्षिणी छोर** पर **हिमालय** पर्वत श्रृंखलाओं द्वारा अलग किया गया वो **सबसे छोटा** वर्ष हमारा **भारतवर्ष (हमारी संपूर्ण पृथ्वी**) है।

अन्य 8 वर्षों में **अर्ध-दिव्य लोग** रेहते हैं जो उनके उस वर्ष के अध्यक्ष देवता के रूप में **भगवान नारायण** के एक रूप **की पूजा करते हैं। जैसे कि...**

1. **केतुमूल वर्ष** : भगवान प्रद्युम्न (कामदेव)
2. **हरि वर्ष** : भगवान नरसिंह
   (प्रहलाद महाराज यहाँ रेहते हैं)
3. **इलावृत वर्ष** : भगवान संकर्षण
   (यहां भगवान शिव माता पार्वती के साथ रेहते हैं)
   (असली कैलाश यहां इलावृत वर्ष में स्थित है)
4. **उत्तर कुरु वर्ष** : भगवान वराह
5. **हिरण्यक वर्ष** : भगवान कूर्म
6. **रम्यक वर्ष** : भगवान मत्स्य
7. **किमपुरुष वर्ष** : भगवान राम
   (यहां हनुमानजी अपनी वानरसेना के साथ रेहते हैं)
8. **भद्रस्व वर्ष** : भगवान हयग्रीव
9. **भरतवर्ष** : भगवान नर-नारायण

ये आठ वर्ष **आठ पर्वत श्रींखलाओ (L*W*H)** से अलग होते है :

1. **श्रृंगवन** पर्वत : 60,000 * 2,000 * 10,000 योजन
2. **श्वेत** पर्वत : 81,500 * 2,000 * 10,000 योजन
3. **नील** पर्वत : 93,300 * 2,000 * 10,000 योजन
4. **माल्यवन** पर्वत : 34,000 * 2,000 * 10,000 योजन
5. **गंधमादन** पर्वत। : 34,000 * 2,000 * 10,000 योजन
6. **निषाद** पर्वत : 93,300 * 2,000 * 10,000 योजन
7. **हेमकुट** पर्वत : 81,500 * 2,000 * 10,000 योजन
8. **हिमालय** पर्वत : 60,000 * 2,000 * 10,000 योजन

1 योजन को कभी-कभी 8 किमी के रूप में लिया जाता है, तो कभी-कभी 14 किमी. सटीक नाप की पुष्टि अभी नहीं हुई है।

इलावृत वर्ष के **मध्य में,**
जम्बूद्वीप के केंद्रीय धुरी के रूप में,
खड़े है **पर्वतों के सम्राट** ,

सुमेरु : सुवर्ण पर्वत

- सुमेरु **अतीशुद्ध दिव्य सोने** से बना है। जो की उल्टे **शंकु के आकार में कमल के बीज**-कोष की तरह स्थित है। और **संपूर्ण ब्रह्मांड के केंद्र में ब्रह्मांड का अक्ष** (Cosmic Axis) बनके खड़ा है।
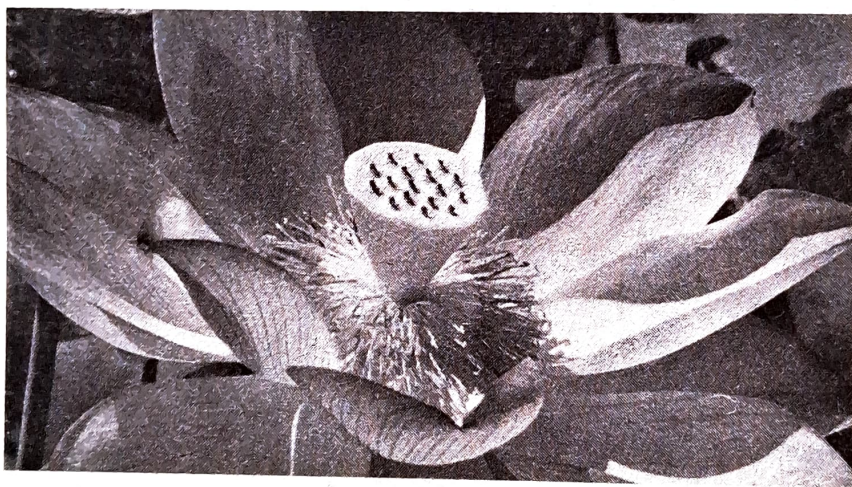
- गीता 10.23 में **कृष्ण** केहते हैं,
  मेरु: शिखरिणामहम्।।
  'शिखर पर्वतों में **मैं मेरु हूँ।'**
  अब तो समज ही लीजिए की ब्रह्मांड का केंद्र हम नहीं, भगवान विष्णु हैं।
- **सुमेरुके स्थान से ही दिशाएं तय की जाती हैं।** हम जहां भी खड़े होते है, वहाँ से सुमेरु जिस दिशा में होता है, वो उत्तर दिशा है। और उसी हिसाब से अन्य नौ दिशाएँ बनती है।
- सुमेरु ही **स्वर्ग** जैसे और उच्च लोकों तक जाने **का मार्ग है।**
- सुमेरु की कुल आठ ऊँचाई 1,00,000 योजन है।
- जिसमें से पृथ्वी तल के ऊपर 84,000 और नीचे 16,000 योजन है।
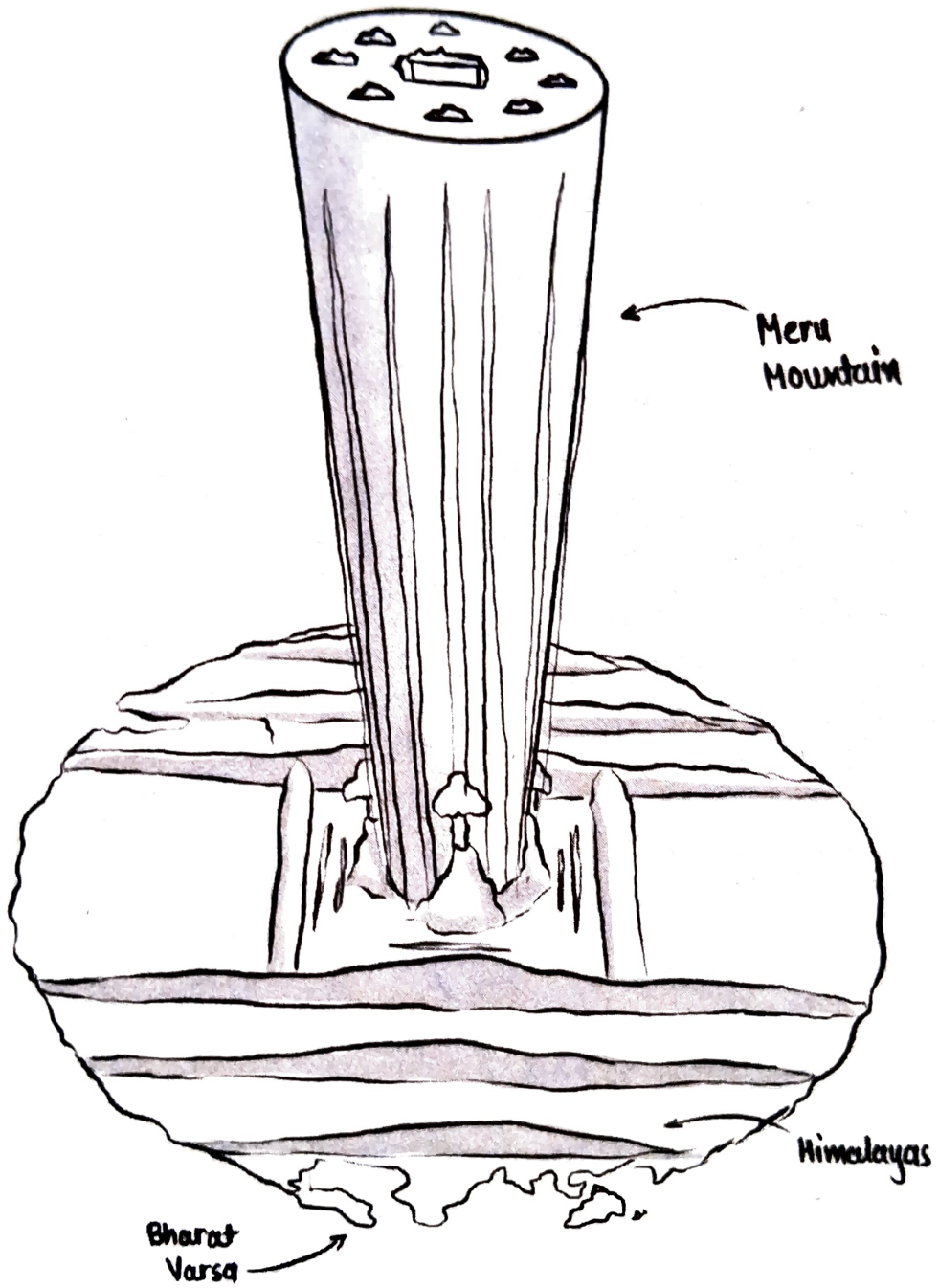
जंबूद्वीप पर मेरु पर्वत

मेरु पर्वत की चोटी पर,
भगवान ब्रह्मा का विशाल नगर है, जिसे **ब्रह्मपुरी** के नाम से जाना जाता है।

ब्रह्मपुरी के चारों ओर **आठ** मुख्य **लोकपालों** के **आठ नगर** हैं
जो अपनी-अपनी उन दिशाओं में स्थित है जिनके वे शासक हैं।

अष्ट-दिक्पाल : 8 लोकपाल

आठ दिशाओं के संरक्षक और उनके नगर के नाम

1.**कुवेर** (उत्तर) - महोदय
2. **यम** (दक्षिण) - संयमी
3. **इंद्र** (पूर्व) - अमरावती
4. **वरुण** (पश्चिम) - श्रद्धावती
5. **ईशान** - शिव (पूर्वोत्तर) - यशोवती
6. **अग्नि** (दक्षिणपूर्व) - तेजोवत
7. **वायु** (उत्तर पश्चिम) - गंधवती
8. **नृत्ती** (दक्षिण-पश्चिम) - कृष्णगण
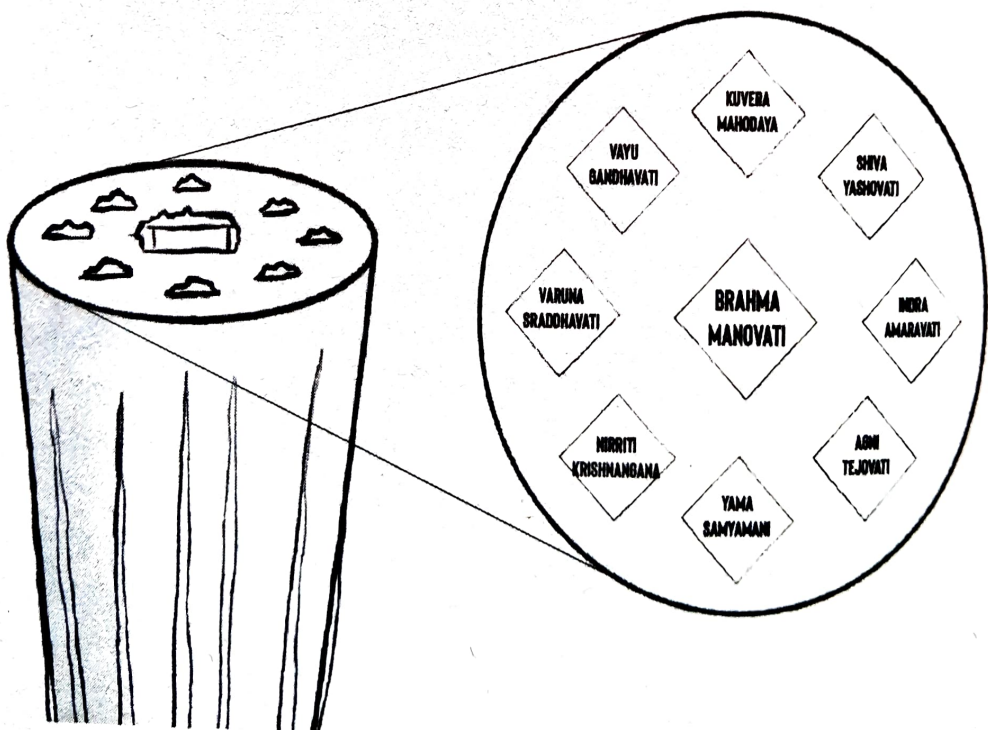
अब,
हमारा ये जम्बूद्वीप **खारे पानी के महासागर** से घिरा हुआ है, जिसे **लावण्य समुद्र** कहा जाता है। वो **प्लक्षद्वीप** नामक वर्तुलाकार द्वीप से घिरा हुआ है। जो की एक और वर्तुलाकार **दिव्य गन्ने के रस के सागर** से घिरा हुआ है।

इसी तरह कुल 7 **वर्तुलाकार द्वीप** हैं जो अलग अलग अलौकिक तरल पदार्थों के 7 **वर्तुलाकार महासागरों** से घिरे हैं। जहा हर एक वर्तुल **पिछले वाले के आकार से दो गुना बड़ा है।**

7 द्वीप : 7 महासागर : योजन में उनकी चौड़ाई

1. **जम्बू द्वीप** : खारा पानी : **1,00,000** योजन
2. **प्लक्स द्वीप** : गन्ने का रस : **2,00,000** योजन
3. **सलमाली द्वीप** : मदिरा : **4,00,000** योजन
   यहाँ गरुड़ देव 1100 योजन ऊँचे सलमाली वृक्ष पर रेहते हैं
4. **कुश द्वीप** : शुद्ध मक्खन : **8,00,000** योजन
5. **क्रौंच द्वीप** : दूध : **16,00,000** योजन
6. **शाक द्वीप** : दही : **32,00,000** योजन
7. **पुष्कर द्वीप** : मीठा पानी : **64,00,000** योजन
   यहाँ ब्रह्माजी का एक और दिव्य कमल है जहां वे बिराजमान है।
   साथ ही वरुणदेव का निम लोक और इंद्रदेव का देव लोक भी यहीं है।

फिर शुरू होता है,
मनसोत्तर पर्वत : **10,000** योजन
लोक वर्ष (स्वर्ण भूमि) : **157,50,000** योजन
लोकालोक पर्वत : **822,00,000** योजन
आलोक वर्ष : **12,33,00,000** योजन

ये सभी द्वीप, महासागर और पर्वत मिलकर बनाते है
1 बिलियन माईल त्रिज्या का,
भूमंडल, जिसे **भूलोक** भी कहा जाता है।
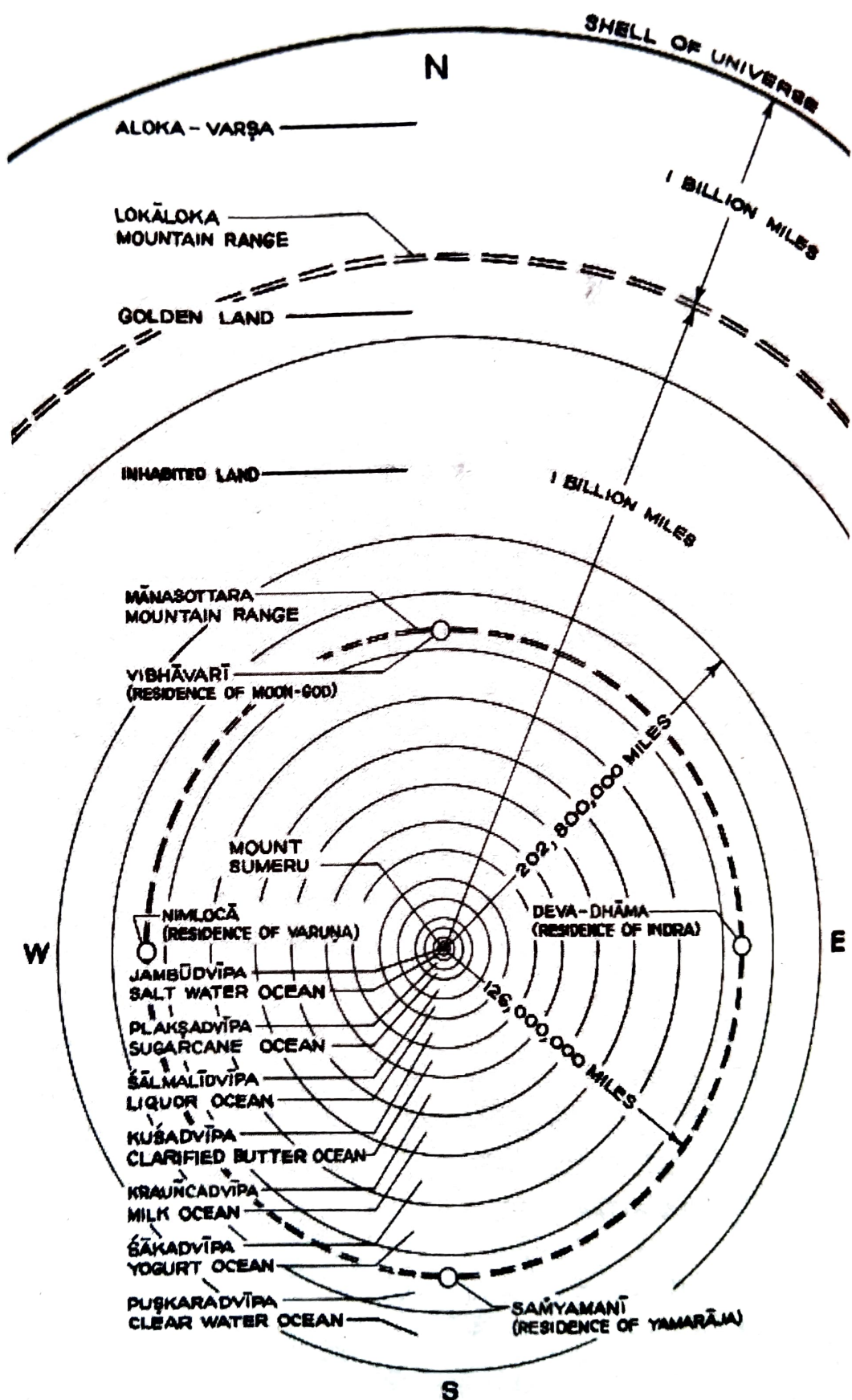
7 वर्तुलाकार द्वीप और 7 दिव्य समुद्रों से बना भूमंडल

हमारा ये भुममंडल,

एक के ऊपर एक स्थित कुल **14 लोकों** में से सिर्फ़ एक है,

6 ऊपरी लोक :

सत्य लोक : ब्रह्म लोक :
ब्रह्माजी और माता सरस्वती का घर।
इसके ऊपर ब्रह्मांड का अंत और वैकुंठ की शुरुआत होती है।

तप लोक :
ब्रह्माजी के मनस पुत्र और सनत कुमार (सनत, सनक, सनंद, सनातन) यहां रेहते हैं।

जन लोक :
वर्तमान और भूतपूर्व सप्तर्षि अपनी पत्नियों के साथ यहां रेहते हैं।

महर लोक :
भविष्य के सप्तर्षि, ब्रह्मर्षि और महर्षि, जिन्होंने घोर तपस्या की है वो यहाँ रेहते हैं। उदाहरण के लिए ऋषि कण्व, ऋषि रिचिका, ऋषि मार्कंडेय, ऋषि व्यास वगैरह।

स्वर लोक : स्वर्ग लोक : इंद्र लोक :
भगवान इंद्र और अन्य देवताओं का घर यहाँ है। इंद्रदेव यहां अपनी पत्नी, भाइयों, सौतेले भाइयों और उनकी पत्नियों के साथ रेहते हैं। आदित्य, गंधर्व, मरुत, रुद्र और वसु भी यहाँ रेहतें है।

भुवर लोक :
भुलोक और स्वर्ग लोक के बीच के स्थान को अन्तरिक्ष या भुवर लोक कहा जाता है। यहां यक्ष, राक्षस, भूत और प्रेत रेहते हैं। नवग्रह ग्रह, **सूर्य, चंद्र, मंगल, बुद्ध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु** और **केतु**, सभी के घूमने की धुरी भी भुवर लोक में हैं।
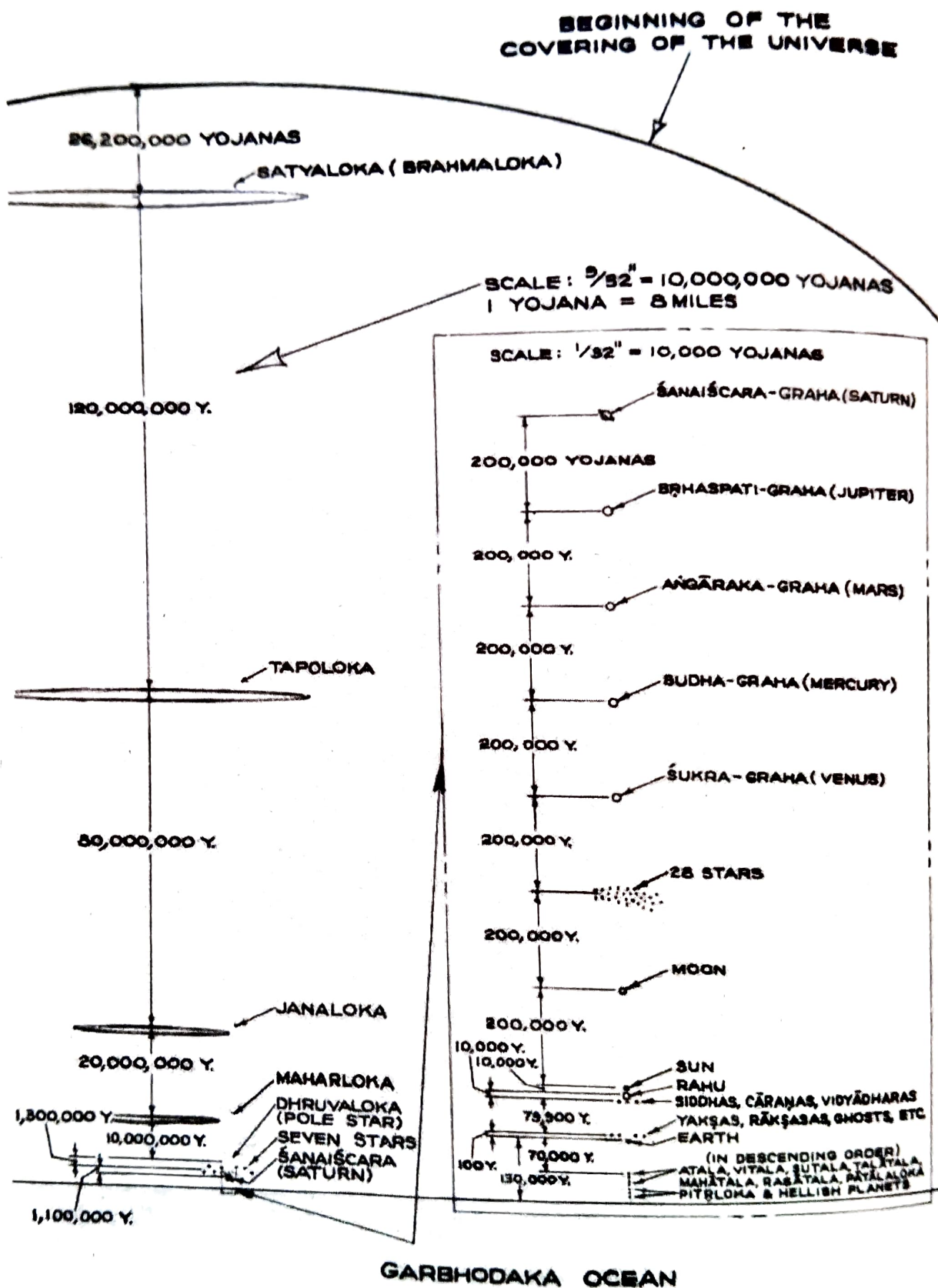
6 ऊपरके लोकों और 9 ग्रहों का स्थान

फिर आता है हमारा अपना,

भु लोक :

मृत्यु लोक : पृथ्वी लोक : पृथ्वी :

यहाँ रेहते हैं, हम, नश्वर **मनुष्य** और जानवर।
पूरे विस्तृत ब्रह्मांड में ये एकमात्र स्थान है
जहां **भारतवर्ष नामक कर्मभूमि** अस्तित्व धारण करे हुए **है।**

ये कर्मभूमि पूरे ब्रह्मांड में **एकमात्र स्थान** है **जहां** एक **व्यक्ति** उच्च लोकों में आनंद लेने के लिए **कर्म या तप कर सकता है** और फल कमा सकता है।

या फिर,
वो उसी जन्म में **योग करके** भौतिक जगत से ही बाहर निकल सकता है, **मोक्ष प्राप्त कर सकता है** और पुनः आध्यात्मिक जगत में जा सकता है। **जो की स्वर्ग लोक में भी** कर पाना **असंभव है।** इसी लिए देवतागण भी भारत की सौभाग्य भूमि में जन्म लेने के लिए तत्पर रेहते है।

पूरे ब्रह्मांड में अन्य सभी स्थान या तो भोग भूमि हैं,
जहां लोग उच्चतम स्तर के सुखों का आनंद लेते हैं; **या पापभूमि** हैं,
जहां उन्हें उनके पापपूर्ण कार्यों के लिए दंडित किया जाता है।

भारतवर्ष के सिवाह अन्य भूमि और लोकों में किसी को भी अपनी आजीविका के लिए कोई मेहनत नहीं करनी पड़ती है। वे ज्ञान, आयु, रंग, बल, धन और वंश के कारण होने वाले **परिवर्तनों के अधीन नहीं हैं।**

अन्य सभी स्थानों पर ये सभी चीजें केवल इच्छा से ही प्राप् हो जाती हैं। वे बीमारियों, थकान और बुढ़ापे से पीड़ित नहीं होते हैं। उनका जीवन विभिन्न प्रकार के सुखों का आनंद लेने के लिए है।

तथापि, भारतवर्ष में ही चार युगों के चक्र का **प्रभाव** होता है।
पूरे भूमण्डल में **हर जगह** केवल **त्रेता युग** ही चलता है और
लोग औसतन 10,000 साल जीते हैं।

7 निम्नतर लोक : पातालादी सप्तलोक

अतल लोक :
यहाँ दानवों का शासन मय दानव के पुत्र बल द्वारा किया जाता है।
अतल लोक अतिसुंदर प्रलोभिकाओं का निवास भी है।

वितल लोक :
यहां भव (शिव) भवानी द्वारा शासित भूत गण रेहते हैं।
वे अपना भव्य जीवन सोने का खनन और एकत्रीकरण करते हुए जीते हैं।

सुतल लोक :
यहाँ बली महाराज द्वारा शासित असुर रेहते हैं जिन्हें वामन देव ने हराकर इस लोक का शासन दिया था। वामन देव आज भी स्वयं बली के द्वार रक्षक है।

तलातल लोक :
यहाँ प्रसिद्ध दानव वास्तुकार माया दानव और उनका परिवार रेहता है। जो रावण की पत्नी मंदोदरी के पिता थे। शिवजी ने त्रिपुरा के तीन शहरों को नष्ट कर के तलातल माया दानव को देकर उसकी रक्षा का वचन दिया था। बल मयदानव का सबसे बड़ा पुत्र है जो अतल लोक पर शासन कर रहा है।

महातल लोक :
यहाँ कई मस्तक वाले नाग अपने दुश्मन गरुड़ से बहुत दूर शांतिपूर्ण सुखी जीवन जीते हैं। जीनका नेतृत्व तक्षक, कालिया, सुषेन और कुहका करते हैं।

रसातल लोक :
यहां दावन और दैत्य रेहते हैं। जो देवों के हमेशा के शत्रु हैं।
वे नागों की ही तरह सुरंगो और गुफाओं में रेहते हैं।

पाताल लोक : नाग लोक :
यहां वासुकी (जो शिवजी के गले पे रेहते है) के नेतृत्व में कई मस्तक वाले नाग अपने मस्तक पे नागमणि के साथ रेहते है जिससे वो नीचे के सारे लोकों के अंधेरे को प्रकाशित करते है।

अब उस पाताल लोक के नीचे, दक्षिण में स्थित है,

नरक लोक : The Hell

उसके पास में **पितृलोक** है, जहां हमारे पितृ, (मृत पूर्वज) **अग्निश्वत्ता** के नेतृत्व में रेहते हैं। यमराज यहीं पर न्याय देते हैं। यहाँ **28 नरकीय लोक** हैं :

1. **तमिश्र** : अँधेरे का नरक
2. **अन्धतमिश्र** : अंधा करने वाले अँधेरेका नरक
3. **रौरव** : रूरू का नर्क
4. **महारौरव** : विशाल रूरू का नर्क
5. **कुम्भीपाकम** : बर्तन में पकाने वाला नरक
6. **कालसूत्र** : मृत्यु के धागे सा नरक
7. **असिपत्रवन** : पत्तों के समान तलवार का वन
8. **सुकरमुख** : सुकर के मुंह सा नरक
9. **अंधकुपम** : कुएं में अंधा करने का नरक
10. **कृमिभोजन** : कीड़ों के भोजन का नरक
11. **संदंसा** : सांडसी जैसे चिड़ियों का नर्क
12. **तप्तसुरमी** : लाल गर्म लोहे की मूर्ति का नरक
13. **वज्रकंटक-सलमाली** : वज्र जैसे कांटों वाले वृक्ष का नरक
14. **वैतरणी** : नरकीय नदी
15. **पुयोद** : पस के जल का नरक
16. **प्राणरोध** : बाधा जीवन का नरक
17. **विशासन** : जानलेवा नरक
18. **लालभक्ष** : थूक के भोजन का नरक
19. **सरमायदान** : घातक सरमा कुत्तों का नरक
20. **अविचि** : निर्जल और तरंगरहित नरक
21. **अयाहपन** : पिघला हुआ लौह पिलाने का नरक
22. **क्षरकार्डमा** : एसिडिक ज्वलित मिट्टी का नरक
23. **रक्षागण-भोजन** : राक्षसों के भोजन का नरक
24. **सुलाप्रोटा** : भालों द्वारा छेदने वालों का नरक
25. **दंडसुका** : नागों से भरा नरक
26. **अवतार-निरोधन** : विषैली अग्नि का नरक
27. **पर्यावरणवर्तन** : आंख फोड़ने वाले घातक पक्षियों का नर्क
28. **सुचिमुखा** : शरीर के सिलाई करने वालों का नरक

अभी,

14 लोकों की ये **पूरी सृष्टि अनंत शेष (शेषनाग)** के फन के **उपर टिकी** हुई **है, जो** की हमारे **कूर्म देव की पीठ पर बैठे** बैठे चार सनत कुमारों को भगवान विष्णु की अनंत लीलाओं को गा कर सुना रहे **हैं।**

वे कूर्मदेव **गर्भोदक महासागर** में **तैर रहें है**, जो की **गर्भोदक्षायी विष्णु** के शरीर के **दिव्य जल** से बना है जिससे आधा **ब्रह्माण्ड भरा हुआ है।**

जीसके ऊपर **गर्भोदक्षायी विष्णु** विश्राम कर रहे हैं,
और उन**की नाभि से** एक दिव्य **कमल निकला है।**
जिसकी दंडी पर ब्रह्माजी ने 14 लोकों का निर्माण किया है।

जिनमें से सबसे **ऊपर सत्यलोक** है,
जहां ब्रह्माजी उस दिव्य कमल के उपर बैठे हैं जिसमें उनका जन्म हुआ था।

Scales constrained
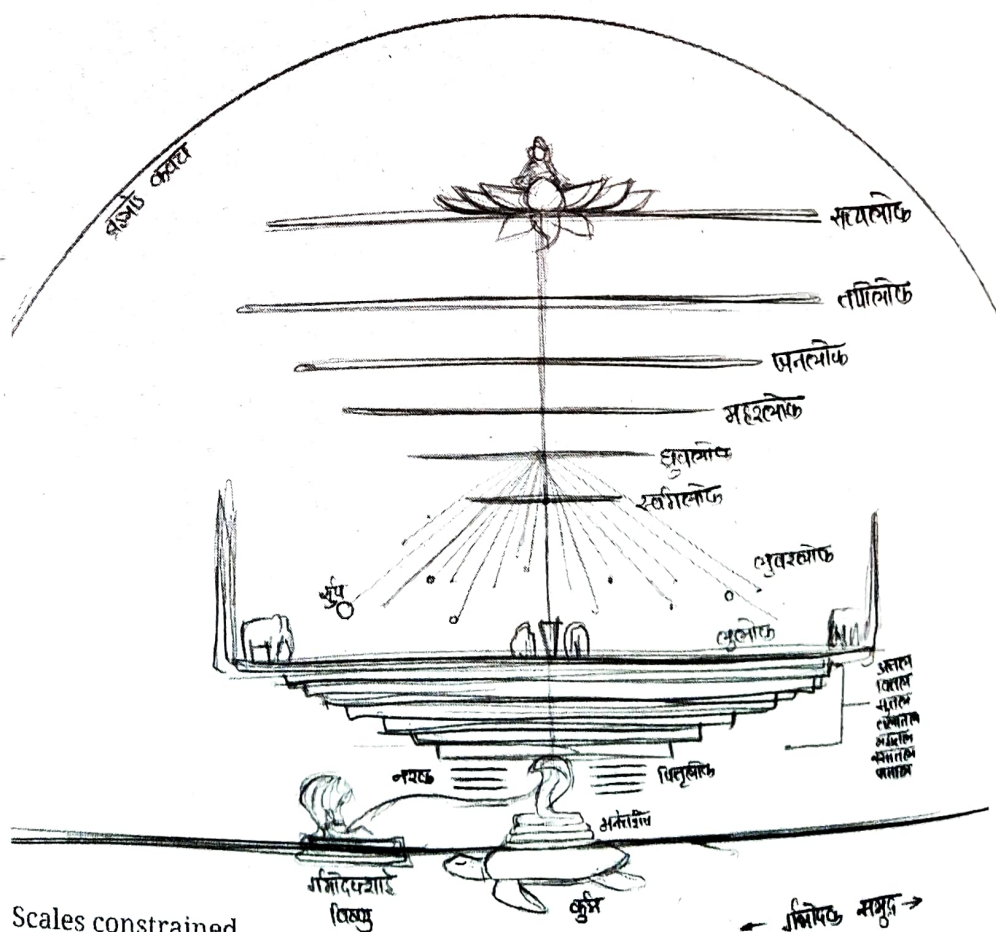
और ये सबकूछ बसा है ,

ब्रह्माण्ड : ब्रह्म+अंड

के अंदर, जो की अंदर से एक अंडे की तरह ख़ाली है और
जिसके बाहर 7 **विभिन्न तत्वों** के 7 **विशाल आवरण** हैं।

प्रत्येक आवरण **पिछले वाले से 10 गुना बड़ा है।**
सप्तभीर दस-गुणोत्तरैर अंड-कोश:

1. **पृथ्वी** : 40 अरब मील
2. **पानी** : 400 अरब मील
3. **आग** : 4 ट्रिलियन मील
4. **वायु** : 40 ट्रिलियन मील
5. **आकाश** : 400 ट्रिलियन मील
6. **झूठा अहंकार** : 4 क्वाड्रिलियन मील
7. **महत तत्त्व** : 40 क्वाड्रिलियन मील

ये 7 आवरण का कुल विस्तार

44 क्वाड्रिलियन 444 ट्रिलियन 444 बिलियन मील है।

अब **इस** ब्रह्माण्ड नामक 7 परतों वाले सुवर्ण **अंडे के भीतर**,
हमारे छोटे **14 लोक** लोक स्थित है, जिसके मध्य में नन्हा सा **भूमण्डल** है,
जिसके केंद्र में सुवर्ण पर्वत मेरु के साथ सबसे नन्हा द्वीप **जम्बूद्वीप** है,
जिसके 9 वर्षों में से दक्षिणमें बसा सबसे छोटा वर्ष है **भारतवर्ष (पृथ्वी)**,
जिसके 10 खण्डों में से एक **है भारत खण्ड**,
जिसमें

आप,

एक **अत्यंत भाग्यशाली आत्मा,** जो B.O.S.S का अमूल्य ज्ञान ले रही है,
जो की उसी ब्रह्मांड के रचयिता परमेश्वर के सेवक के सेवक के.... सेवक (मेरे)
द्वारा लिखे गए इस ब्रह्माण्ड के दिव्य ज्ञान को ले रही है, जिसे पढ़ने मात्र से
आप इतने अचंबित हो रहें हो।
सोचो किसी दिन ये सब देखने को मिले तो क्या ही अनुभव होगा!

परंतु रुकिए,
ये अभी **समाप्त** नहीं हुआ है।
अभी यहाँ तक मात्र **एक ही ब्रह्माण्ड** की बात की हमने,
हमारा ब्रह्मांड, **जो** की वास्तव में **सबसे छोटा है**।

अभी यहाँ से सफ़र और दिलचस्प होता है,
क्योंकि यहाँ से शुरू होता है,
मल्टीवर्स!!
यानी अनेक ब्रह्मण्डो के अस्तित्व का सिद्धांत

हां,
हमारा ब्रह्मांड एकमात्र ब्रह्माण्ड नहीं हैं।
कारण सागर में ऐसे अरबों खरबो ब्रह्मांड एकसाथ तैर रहे हैं।

उनमें से **कुछ** हमसे **10 गुना बड़े हैं,**
कुछ 1000 गुना, तो **कुछ 10,00,000** और **कुछ उससे भी अधिक।**

और **उन सभी ब्रह्माण्ड में उतने ही बड़े लोक**, भुममंडल, सुमेरु, जम्बूद्वीप,
और वैसे ही उनके उतने ही **अनंत ब्रह्मा, विष्णु, शिव, देवी देवता हैं** जो
मिलकर हमारे जैसे अनंत मनुष्यों और अन्य जीवों का ध्यान रखते हैं।

ब्रह्माण्ड जितना बड़ा,
उसके **ब्रह्मा के सिरों की संख्या उतनी ही अधिक।**
जैसे की हमारा ब्रह्माण्ड सबसे छोटा है, हमारे ब्रह्मा के 4 सिर हैं,
कुछ ऐसे ब्रह्मांड हैं जिनके ब्रह्मा के पास 100, तो किसी के पास 1000,
किसी के पास 10,000 तो किसी के पास तो 10,00,000 भी हैं।
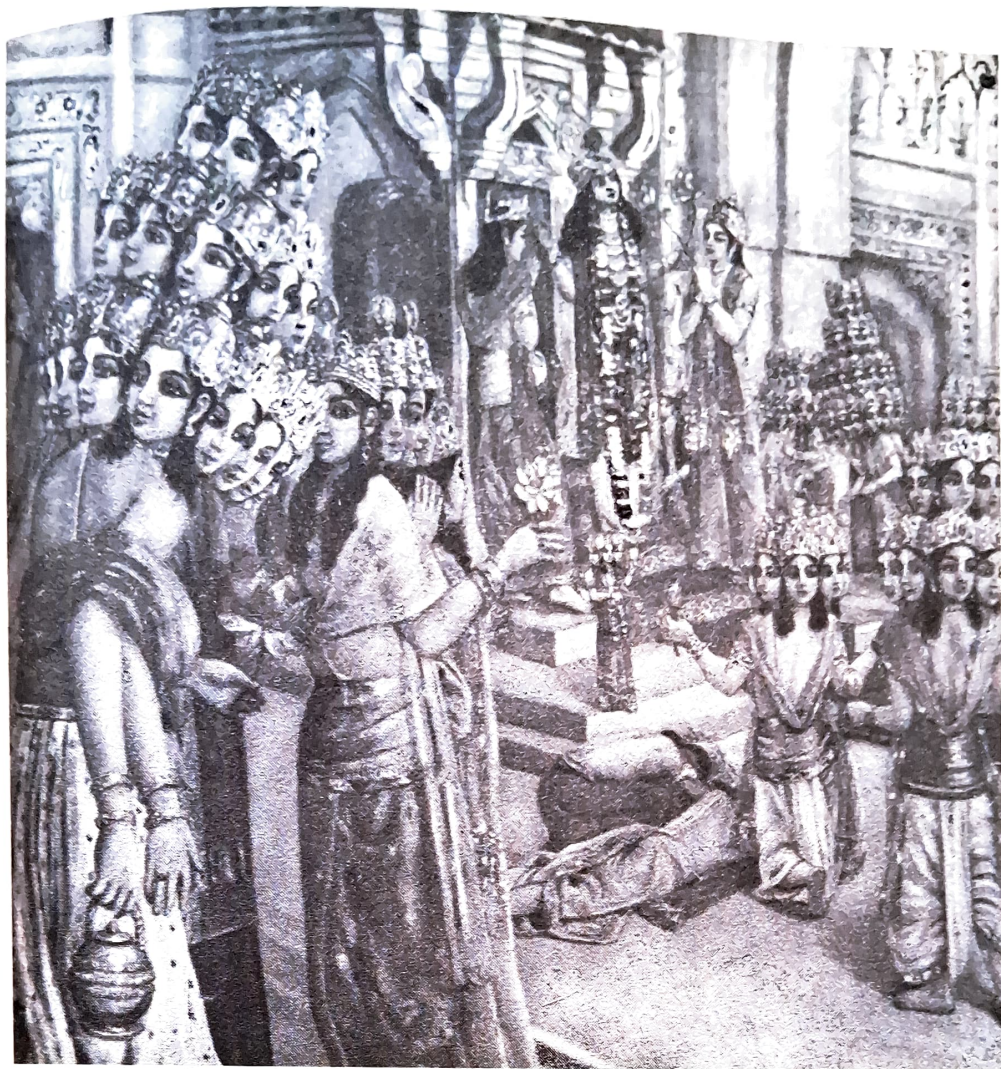
द्वारिका लीला से इसके बारे में हम जान सकते है...

द्वारिका में जब ब्रह्माजी श्री कृष्ण से मिलने आए,
उन्होंने द्वारपाल से पूछा कि कौनसे ब्रह्मा आएं है?

तो ब्रह्माजी ने आकर उनसे प्रश्न किया,
'आपने ये क्यों पूछा कि कोनसे ब्रह्मा आएं है? क्या मेरे सिवाय और भी ब्रह्मा है?'

ये सुनकर श्रीकृष्ण मुस्कुराए और अपनी आँखें बंद कर लीं और क्षण भर में ही करोड़ों ब्रह्मा वहाँ पहुँच गए। किसी के दस सिर थे, किसी के बीस, किसी के सौ, किसी के हजार, किसी के दस हजार, किसी के सौ हजार, किसी के दस लाख तो किसी के दस करोड़। उनके चेहरों की संख्या कोई नहीं गिन सकता था।

ये देख के ब्रह्माजी को समझ आया की वो तो कई हाथियों के बीच में
सिर्फ एक खरगोश के बराबर है।

ये सभी असंख्य **ब्रह्माण्ड,**
कारण सागर में योग निद्रा में विश्राम कर रहें **कारणोदक्षायी विष्णु** के शरीर के छिद्रों **से** एक साथ **बाहर निकले हैं**।

हर बार जब **वो साँस छोड़ते हैं, असंख्य ब्रह्माण्ड बाहर आते हैं** और हर बार जब वे **साँस लेते हैं** सब **उनके शरीर में वापस चले जाते हैं।** और जैसे ही सभी ब्रह्माण्ड वापस अंदर जाते हैं, वो फिर से साँस छोड़ते हैं और असंख्य और ब्रह्माण्ड निर्मित होकर उनके शरीर से बाहर आते हैं।

और वे अनंत काल से इसी तरह सांस लेते आ रहे है,
और भौतिक अस्तित्व का ये अनंत चक्र यूं ही चलता आ रहा है।

ब्रह्माण्ड के अनुसार मल्टीवर्स इस प्रकार कार्य करता है।
और एक और प्रकार का मल्टीवर्स काल के अनुसार कार्य करता है।
कैसे? इसके बारे में हम 'अध्याय 9 : काल (समय)' में बात करेंगे।

अभी आगे बढ़ते है,
तो **ये सारा जो हमने बताया वो** मिला कर बनता है
हमारा भौतिक अस्तित्व, जो की सम्पूर्ण **अस्तित्व का मात्र** 25% है।
अब यहाँ से शुरुआत होती है **आध्यात्मिक अस्तित्व** की ,
जो की पूर्ण **अस्तित्व का अधिक** 75% **है**।

अध्यात्म जगत की शुरुआत अत्यंत उज्ज्वल रोशनी से होती है
जिसे केहते है,
ब्रह्म ज्योति,
जो की स्वयं **अध्यात्म जगत का दिव्य तेज** है।
इसमें तीन आध्यात्मिक गुणों में से एक, सत (अनंतता) है,
परंतु शेष दो नहीं हैं, चित (चेतना) और सबसे महत्वपूर्ण, आनंद।

ब्रह्म ज्योति **उन लोगों का मोक्ष स्थान है जो शून्यता पर ध्यान करते हैं** (नास्तिक दर्शनिक) और जो **भगवान के हाथों मरकर मुक्ति प्राप्त करता है**।

ये पार करते हुए पेहला ही धाम है हमारा अपना
नित्य कैलाश :
हमारे भगवान **सदा शिव का निवास**,
भगवान **शिव का शाश्वत रूप**, उनसे सभी ब्रह्मांडों में रुद्र और शंकर का अंश आता है। यहां वो **हमेशा मां जगदंबा उमा पार्वती** और उनके प्रिय भक्तों **के साथ रेहते हैं।**

वो पार करने के बाद आता है,
अयोध्या धाम : साकेत लोक :
जहां **मां सीता के साथ भगवान राम शाश्वत रूप में रेहते है।**
इस अयोध्या धाम के चारों ओर भगवान नारायण के सभी अनंत विस्तारों के **असंख्य धाम हैं**। जिसमें **नरसिंह देव**, वराह देव, मत्स्य देव, कुर्म देव आदि सबके धाम समाहित हैं। और इन सभी धामों के समूह से बनता है,
वैकुंठ लोक...

उसके बाद शुरू होता है,

द्वारिका धाम :

जहां **भगवान श्रीकृष्ण ऐश्वर्य भाव में** उन भक्त आत्माओं के साथ रेहते हैं जो उन्हें उस रूप में प्रेम करते हैं।

द्वारिका के बाद आता है,

मथुरा धाम;

और अंत में,

गोलोक वृंदावन धाम।

इन सभी धामों को मिलाकर बनता है,

माधुर्य धाम;

यहीं पर भगवान अपने सबसे व्यक्तिगत रूप में **अपने** सब **भक्तों के साथ** उनके ख़ास सम्बंध में **प्रेम का आदान प्रदान करते हैं।**

यहाँ कोई उनके बचपन के **दोस्त** के रूप में यमुना के तट पर हर तरह के खेल खेलते है। या एक **प्रेमी** के रूप में रास लीला खेलते है, या **पिता** के रूप में पिता समान प्रेम करते है, या फिर एक **माँ** जो उन्हें अपना मातृ प्रेम देना चाहती है (पूतना को ये मोक्ष मिला था जब उसने भगवान को अपने जहरीले स्तनों से मारने का प्रयास किया, अब वो वास्तव में उन्हें प्रेम से खिलाती है) या एक **बेटे** के रूप में, एक **बेटी** के रूप में, एक **पत्नी** के रूप में **या** अपनी नगरी में एक **नागरिक के रूप में,** जो बिना नज़ारे हटाए भगवान को हर दिन सबसे सुन्दर लीला करते हुए देखते है।

इन सभी रूपों में **भगवान** उनके भक्तों के साथ **निरंतर प्रेम का आदान-प्रदान करते रेहते है।**

ये वो परम सुख है,
जो की **हर आत्मा के**

जीवन का अंतिम ध्येय है।

आध्यात्मिक दुनिया कैसी है?

भारत में ज़्यादातर लोग जानते हैं कि,
आध्यात्मिक दुनिया को हम **वैकुंठ** के नाम से संबोधित करते है।
परंतु क्या है वैकुंठ?

कुंठ का अर्थ है **चिंता का स्थान**।
इसलिए **भौतिक संसार** को **कुंठ जगत** कहा जाता है,
क्योंकि ये **चिंताओं और दुखों से भरा हुआ जगत है**।
यहां हम **जन्म, मृत्यु, वृद्धावस्था और रोगों** के प्रभाव से बंधे हुए हैं।

परंतु **आध्यात्मिक जगत** में, उन चार दुःखो का कोई प्रश्न ही नहीं उठता।
वो **चिंताओं और दुखों से** पूरी तरह **मुक्त है,** इसलिए इसे **वैकुंठ** कहा जाता है, **अर्थात** चिंता और दुख से मुक्त; बस **आनंद और उल्लास से भरा हुआ**।

आध्यात्मिक दुनिया की सुंदरता का वर्णन करते हुए शास्त्र केहते है की,
'इस **भौतिक दुनिया** में हमने जो कुछ भी सुंदर या महान देखा है,
अनुभव किया है, वो सब **आध्यात्मिक अस्तित्व का मात्र छाया रूप है।**
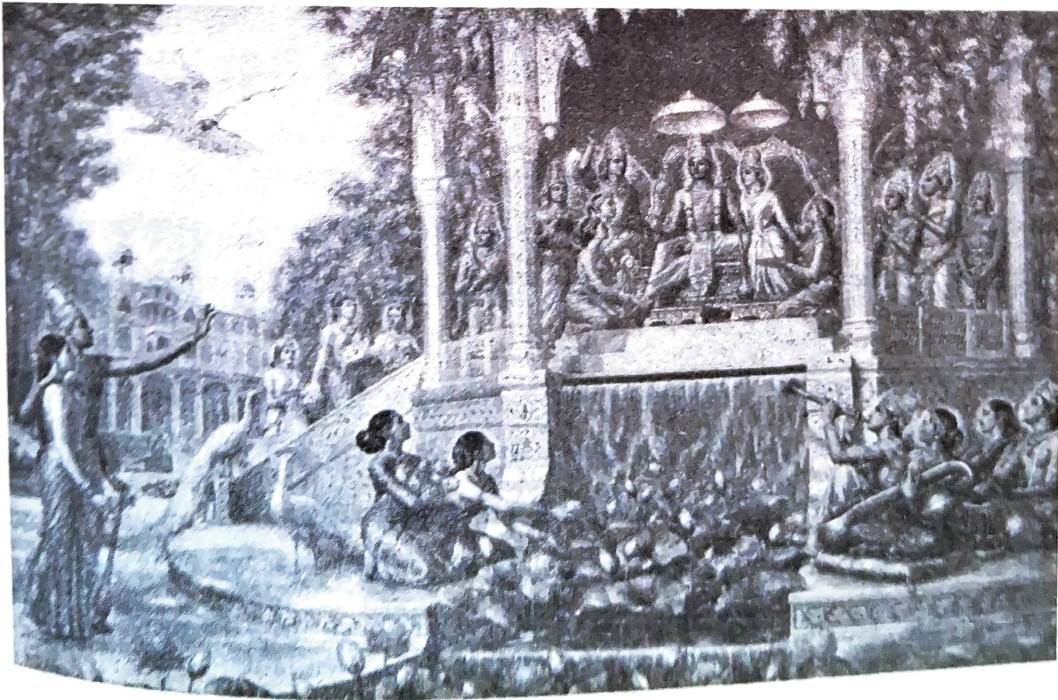
वैकुंठ में लक्ष्मी नारायण की पूजा करते चतुर्भुज श्रद्धालु

वैकुंठ में सब कुछ और **हर कोई** सर्वोच्च रूप से **सुंदर, शक्तिशाली और कुशल है**, और इन क्षमताओं का उपयोग वे सभी **भगवान की सेवा में** करते हैं; क्योंकि उसके सिवा उनको कोई और कार्य में रूचि होती ही नहीं है।

उनके पास **भोग के लिए अनंत ऐश्वर्य** है और उसे प्राप्त करने के लिए कोई श्रम भी नहीं करना पड़ता। उन्हें जो चाहिए वो **कल्प-तरु नामक इच्छा पूर्ण करने वाले वृक्षों द्वारा सिर्फ़ इच्छा करने से सब प्रदान किया जाता है।**

हालाँकि, वे फिर भी इसका उपयोग अपने निजी आनंद के लिए नहीं करते हैं। क्योंकि **उन्होंने भगवद प्रेम का उच्चतम आनंद का स्वाद चखा है**, इसलिए वे किसी भी **इंद्रिय तृप्ति** के आनंद **में ज़रा भी रुचि नहीं** रखते **हैं।**

और चूंकि **वे काम, क्रोध, लोभ, ईर्ष्या** आदि अनर्थों **से पूरी तरह मुक्त** हैं, वहाँ कोई भी दोगली प्रकृति का नहीं है। **वे सभी** एक दूसरे के प्रति व्यवहार में **निष्ठावान, सहज, शुद्ध और अत्यंत प्रेम से भरे हुए हैं।**

और **यही हमारा अपना शाश्वत घर है।**

ये वो जगह है **जहां हम हमेशा से थे।**
जाने-अनजाने **यही वो अनुभव है जिसे हम** भौतिक दुनिया में
आँख बंद करके जन्मो जन्मो से हर चीज़ और हर कार्य में **खोज रहे हैं।**

और क्योंकि हम इसे खोजने में असफल हो रहे हैं, हम हमेशा असंतुष्ट रेहते हैं। किन्तु हम जानते हैं कि ऐसी भावना वास्तव में है, इसलिए हम इसे पाने के लिए भौतिक दुनिया में हर तरह की चीजें करने की लालसा नहीं छोड़ते हैं।

हालाँकि **साधु, गुरु** और **शास्त्र हमारी आँखें खोलते हैं** और **हमें वास्तविकता दिखाते हैं** ताकि हम माया के दिए इस **मायावी सुख की लालसा करना बंद कर दें** और भगवान द्वारा दीए इस **वास्तविक सुख की ओर काम करना शुरू कर दें।**

नित्यो नित्यानां चेतनश्चेतनानाम्
एको बहूनां यो विदधाति कामान्।

परंतु,
यदि हमारे पास इतना सुंदर जीवन था, तो
हम इस भयानक भौतिक दुनिया में आख़िर कैसे पहुँचे?

कारण है ,
हमारा अहंकार।
जी हाँ, **भगवान को** एक **प्रेम करने वाले धनी पिता** के रूप में **समझीए,** जो **अपने बेटे से बस इतना ही चाहते है कि वो** उनके परिवार के साथ **खुशी से रहे** और उनके पास जो संपत्ति है उसका साथ में मिलकर आनंद लें।

परंतु **अहंकारी पुत्र अकेले ही आनंद लेना चाहता है**। जहां वो भूल जाता है कि **उसकी खुशी का स्रोत उसके पिता और परिवार हैं।**

इसलिए एक दिन वो अपने पिता से केहता है कि वो उसे **अपनी संपत्ति का एक हिस्सा दे** और उसे अलग से आनंद लेने दे। पिता केहते हैं, 'एक हिस्सा क्यों? ये सब तुम्हारा है। हमारे साथ रहो और परिवार के साथ हर चीज का आनंद लो।'

परंतु **नहीं**। उसे अपने **पिता का पैसा चाहिए है, परंतु पिता नहीं**।
(जैसे दुर्योधन नारायणी सेना चाहता था, परंतु स्वयं नारायण को नहीं)

वो अपना घर छोड़ बाहरी दुनिया में चला जाता है और रास्ते में मिले नए दोस्त बनाके **ऐश और आराम करने में सारी मिलकत खर्च कर देता है**; और अंत में सारे पैसे खत्म होने पर उसके सभी दोस्त भी चले जाते है।

अब, हमेशा अपने पिता के मेहेल की सबसे भव्य सुविधाओं में पले-बढ़े उस पुत्र को आज किसी कसाई से पूछना पड़ा कि क्या वो उसे आश्रय देगा? कसाई ने कहा, 'ठीक है, मैं तुम्हें अपने खेत में रेहने दूँगा, परंतु तुम्हें तबेले में रेहना होगा और जो कुछ बचा कुचा हम खाने के लिए दें वो खा कर रेहना होगा।'

उसने मान लिया।

उसे **गंदे** सुअरो के **तबेलों में रेहना पड़ता था,**
गंदे फर्श पर सोना पड़ता था और सुअर का **बचा हुआ भोजन खाना पड़ता** था, जिसके कारण वो कई प्रकार की **बीमारियों से ग्रसित होने लगा** था।

फिर सालो वहाँ रेह कर संघर्ष करने के बाद, उसने सीखा कि यदि वो किसी तरह कसाई को अपनी **दिन-रात की मेहनत से** प्रभावित करता है, तो कसाई उस दिन उसे **दो मूंगफली** देता है। वो दो मूँगफली उसके लिए सबसे बड़ी **खुशी** बन जाती है।

इसलिए वो उन **दो मूँगफियों को पाने के लिए हर प्रकार का प्रयास करके** और उसे एक बैग में तबेले के कोने में इकट्ठा करने लगा, ये सोचकर कि एक बार मुट्ठी भर मूँगफली इकट्ठा होने पर वो **एक साथ सभी का आनंद लेगा।**

परंतु **महीनों तक इकट्ठा करने के बाद,** या तो कोई **सुअर उन्हें** ढूंढ कर **खा जाता था,** या कोई **गिलहरी उन्हें छीन लेती,** या वे **कीचड़ में गिर जाते** और सूअर उन्हें कीचड़ में कुचल देते। और वो **फिर से शुरू से उन्हें संग्रह करना शुरू कर देता।**

एक दिन जब वो **मूंगफली के पूरे बैग को** भरने में सफल रहा परंतु एक **सुअर ने उसे छीन लिया** और भागने लगा। वो उसके पीछे दौड़ा और उस सुअर से **मूंगफली का अपना बैग हथियाने के लिए लड़ने लगा।**

वहां से गुजर रहे उसके **पिता ने अपने बेटे को इस दयनीय स्थिति में देखा।** वो उसके पास गए और उससे **अनुरोध किया कि वो मुट्ठी भर मूंगफली के लिए लड़ना बंद कर दे, और उस दयनीय जगह को छोड़ घर वापस आ जाए;** और वो **सुखी, समृद्ध जीवन जीये जिसके लिए तुम बने हो।**

परंतु वो उन **मूंगफली से** अपना **मोह नहीं छोड़ रहा था,** ये सोचकर कि उसने उन मूंगफली को इकट्ठा करने के लिए इतना कुछ किया है, अब वो वो सब नहीं छोड़ सकता जो उसने अपनी महीनों की मेहनत से कमाया है।

परंतु अगर वो अपनी उन मुट्ठीभर मूंगफली **के प्रति मोह त्याग दे; और अपने अहंकार तथा अपने आपको नियंत्रक बनाने की इच्छा को त्याग कर** बस **अपने पिता की शरण ले लेता है,** तो वो पिता **अपने बेटे का खुले हाथों से स्वागत करेंगे** और बेटे को उस बचे कूचे भोजन और मुट्ठी भर मूंगफली के सूखे सूखो से ऊपर उठाकर **लाखों गुना बेहतर आनंद की ओर ले जाएँगे।**

परंतु उसे अपने उस आनंदमय घर वापस लौटने के लिए,
बस एक ही चीज़ लेनी है,

एक निर्णय।

वही उसे **यहाँ लाया** है,
वही उसे **वापस ले जाएगा।**

परंतु क्या वो जाएगा? क्या वो अपने **झूठे अहंकार और अस्थायी मोह को छोड़,** अपने **दयालु पिता की ओर बढ़ेगा?**
खैर, असली सवाल ये नहीं है कि वो क्या करेगा?
असली सवाल ये है की,

हम क्या करेंगे?

हाँ, उस बेटे की भांति,
हर एक आत्मा को स्वतंत्रता दी जाती है कि वो **या तो भगवान्** (पिता) **से प्रेम करे,** उनकी सेवा करे और **उनके साथ आनंदित रहें,** या **भगवान् से दूर होकर** तथाकथित मायावी भोग के लिए **इस भौतिक संसार में (कसाई के तबेले में) संघर्ष करके** स्वयं ही तुच्छ सूखो (मूँगफली) के पीछे दौड़े।

खैर, अभी के लिए तो **हमने** पक्का ही मूँगफलियों (तुच्छ सुखों) **को चुना है,** इसलिए हम **अनादि काल से** इस ब्रह्मांड में जन्म और मृत्यु के चक्र को दोहराते हुए **संघर्ष कर रहे हैं।**

परंतु निर्णय **कभी भी बदला जा सकता है** और हम अपने **सनातन पिता की शरण** लेने मामेकं शरणं व्रज का **विकल्प चुन** कर **अपने शाश्वत घर वापस जा सकते हैं, भगवान के पास,** किसी भी **समय!**

समय की बात करें तो,

समय क्या है?

समय क्यों है?

और आखिर समय काम कैसे करता है?

तो आइए ,

अब समय आ गया है समय को समझने का!

काल

समय

समय क्या है?

समय **ईश्वर की अनगिनत सहायक शक्तीयो में से एक** है, जो की उनकी इच्छा के अनुसार **अस्तित्व में बदलाव लाने का काम** करता है। **समय भौतिक और आध्यात्मिक दुनिया में अलग तरह से काम करता है।**

आत्मा और परमात्मा की ही तरह,
समय का भी कभी निर्माण नहि हुआ ना ही कभी उसका विनाश होगा।
बल्कि देखें तो **समय का प्रमुख कार्य** ही इस भौतिक अस्तित्व का **निर्माण और विनाश** करना है।

इसलिए समय को
काल
कहा जाता है।

काल कौन है?

कालोऽस्मि लोकक्षयकृत्प्रवृद्धो ।। भगवद् गीता 11.32
समस्त जगतों को विनाश करने वाला **काल मैं (कृष्ण) हूँ।**

काल का काम क्या है?

काल का दोनों जगत में **मुख्य कार्य** समान है,
'अस्तित्व में होने वाली घटनाओं को क्रम देना।'

काल (समय) के दो विशेष **स्वभाव** हैं :

1. **विषमता :** Non-Linearity
2. **चक्रियता :** Cyclicity

विषम स्वभाव :

समय का अनुभव अलग-अलग परिस्थितियों में अलग-अलग लोगों को **अलग अलग लगता है**। एक ही मात्रा का समय किसिको छोटा और किसिको लम्बा लगता है।

उदाहरण के लिए,
40 मिनट का गणित की क्लास रुचि वाले विध्यार्थी को **4 मिनट की तरह लगती है**, जब की वही **40 मिनट** और विध्यार्थीओ को **4 महीने की तरह लगती है** जिन्हें गणित सीखने में कोई रुचि ही नहि है।

चक्रीय स्वभाव :

समय का प्रवाह **चक्रीय है**।
इसलिए, उसे **काल चक्र कहा जाता है।**
परंतु,
समय की **आधुनिक गणना** उसके **चक्रीय स्वभाव को दर्शाने में विफल हुई है।** उदाहरण के लिए,

हर एक सेकेंड अपने आपको हर 60 सेकेंड में दोहराता है।
60 सेकंड = 1 मिनट
हर मिनट हर 60 मिनट में स्वयं को दोहराता है।
60 मिनट = 1 घंटा
हर घंटा हर 24 घंटे में स्वयं को दोहराता है।
24 घंटे = 1 दिन
हर दिन हर 365 दिन में स्वयं को दोहराता है।
365 दिन = 1 वर्ष
हर वर्ष स्वयं को दोहराता है ?? ...किस में..??

यहाँ मॉडर्न गणना विफल हो जाती है।
परंतु **वैदिक गणना बख़ूबी इसका निष्कर्ष** निकालती **है!**

आइए देखेंते है कैसे ,

समय की आण्विक (Quantum) स्तर पर वेदिक गणना

1 कृति = एक सेकंड का 34000 वां भाग
1 त्रुटि = एक सेकंड का 300 वां भाग
2 त्रुटि = 1 लव,
1 लव = 1 क्षण,
30 क्षण = 1 विपल,
60 विपल = 1 पल ,
60 पल = 1 घड़ी (24 मिनट),
2.5 घड़ी = 1 होरा, (जिससे अंग्रेजी का Hour शब्द आया)
24 होरा = 1 दिन (दिवस, दिन या वार),

हमारा हर एक **दिन 8 चौघड़ियों में** और **रात भी 8 चौघड़ियों में** विभाजित है। जो की **अलग अलग प्रकार के कार्यों के लिए उत्तम समय को दर्शाता है।** इन्ही के आधार पर विभिन्न कार्यों के लिए मुहूर्त तय किया जाता है।

प्रत्येक चौघड़िया का नेतृत्व एक ग्रह करता है,
वो चौघड़िया उस ग्रह के दिन की शुरुआत करता है।

अमृत : चंद्रमा : सोमवार :
सभी प्रकार के कार्य (विशेषकर दुग्ध उत्पाद संबंधित)
रोग : मंगल : मंगलवार :
वाद-विवाद, प्रतियोगिता, विवाद समाधान
लाभ : बुध : बुधवर :
एक नया व्यवसाय या कोई नयी शिक्षा ग्रहण करना शुरू करें,
शुभ (पवित्र) : बृहस्पति : गुरुवर :
विवाह, धार्मिक गतिविधियाँ, शिक्षा गतिविधियाँ
चार/चान-चल (अस्थिर) : शुक्र : शुक्रवार :
यात्रा, सौंदर्य, नृत्य, सांस्कृतिक गतिविधियाँ
काल (नश्वर) : शनि : शनिवार :
मशीनरी, निर्माण और कृषि गतिविधियाँ
उदवेग (चिंता) : सूर्य : रविवर :
सरकार से संबंधित कार्य

दिवस के 8 चौघड़ियों की शुरुआत वहाँ के **सूर्योदय के साथ** सामान्य रूप में सुबह 6:00 बजे से **शुरू होता है**, **रात्रि** के 8 चौघड़ियों की **शुरुआत वहाँ के सूर्यास्त के साथ** सामान्य रूप में शाम 6:01 बजे से **होती है**।

यहाँ 4 घडी के स्थान पर
2.5 घडी को जोड़ने पर 1 होरा मिलता है।
जिससे अंग्रेजी शब्द ऑवर (Hour) आया है।

इसलिए,
2.5 **घड़ी** = 1 होरा,
24 **होरा** = 1 दिन (दिवस, दिन या वार),

हर एक दिन एक ग्रह द्वारा दर्शाया गया है।

रवि-वार : सूर्य (रवि) : **सूर्य दिवस** : भानुवासरः
सोम-वार : चंद्र (सोम) : **चन्द्र दिवस** : चन्द्रमा : इन्दुवासरः
मंगल-वार : मंगल : **मंगल दिवस** : भौमवासरः
बुध-वार : बुध : **बुध दिवस** : सौम्यवासरः
गुरु-वार : गुरु : **गुरु दिवस** : बृहस्पति : गुरुवासरः
शुक्र-वार : शुक्र : **शुक्र दिवस** : शुक्रवासरः
शनि-वार : शनि : **शनि दिवस** : शनिवासरः
राहु केतु राक्षस ग्रह हैं, उनके पास **ग्रहण के दिन** हैं।

7 **दिन** = 1 सप्ताह,
15 **दिन** तिथि = 1 पक्ष,

पक्ष दो प्रकार के होते हैं।

शुक्ल पक्ष : गौर पक्ष : बढ़ते चंद्रमा : **अमावस्या से पूर्णिमा तक**
कृष्ण पक्ष : वध्य पक्ष : घटते चन्द्रमा : **पूर्णिमा से अमावस्या तक**

शुक्ल पक्ष के दिन

1. **प्रथम**, एकमी
2. **द्वितीय**, बीज, दूजू
3. **तृतीय**, त्रीज
4. **चतुर्थी**, चौथ
5. **पंचमी**, पाँचम
6. **षष्ठी**, छठ
7. **सप्तमी**, सातम
8. **अष्टमी**, आठम
9. **नवमी**, नौम
10. **दशमी**, दशम
11. **एकादशी**, अग्यारस
12. **द्वादशी**, बारस
13. **त्रयोदशी**, तेरस
14. **चतुर्दशी**, चौदस
15. **पूर्णिमा**, पूनम

कृष्ण पक्ष के दिन

1. **प्रथम**, एकमी
2. **द्वितीय**, बीज, दूजू
3. **तृतीय**, त्रीज
4. **चतुर्थी**, चौथ
5. **पंचमी**, पाँचम
6. **षष्ठी**, छठ
7. **सप्तमी**, सातम
8. **अष्टमी**, आठम
9. **नवमी**, नौम
10. **दशमी**, दशम
11. **एकादशी**, अग्यारस
12. **द्वादशी**, बारस
13. **त्रयोदशी**, तेरस
14. **चतुर्दशी**, चौदस
15. **अमावस्या**, औसी, अमावस

सूर्य सिद्धांत समय गणना :
निमेष : एक आँख झपकने का समय

6 अनु = 1 त्रिशरेणु
3 त्रिशरेनु = 1 त्रुटि
100 त्रुटि (अनु) = 1 तत्पर ~ बिन्दु
30 तत्पर = 1 निमेश ~ पलक
18 निमेश = 1 काष्ठ ~ अंश
30 काष्ठ = 1 कला ~ 8 सेकंड
30 कला = 1 क्षण ~ 4 मिनट
12 केशन = 1 मुहूर्त ~ 48 मिनट
30 मुहूर्त = 1 अहोरात्र ~ 1 दिन

वेदों में समय की गणना :
प्राण : 1 श्वास का समय

1 परमानु = एक सेकंड का 60,750 वाँ भाग
1 त्रुटि = 29.6296 माइक्रोसेकंड
1 तत्पर = 2.96296 मिलीसेकंड
1 निमेश = 88.889 मिलीसेकंड
45 निमेश = 1 प्राण = 4 सेकंड
6 प्राण = 1 विनादि = 24 सेकंड
60 विनादि = 1 नाड़ी = 24 मिनट
60 नाड़ी = 1 अहोरात्र = 24 घंटे
1 अहोरात्र = 1 दिन

2 पक्ष = 1 महीना माह,

1. **चैत्र** : मार्च-अप्रैल
2. **वैशाख** : अप्रैल-मई
3. **ज्येष्ठ** : मई-जून
4. **अषाढ** : जून-जुलाई
5. **श्रावण** : जुलाई-अगस्त
6. **भाद्रपद** : अगस्त-सितंबर
7. **अश्विन** : सितंबर-अक्टूबर
8. **कार्तिक** : अक्टूबर-नवंबर
9. **मार्गशीर्ष** : नवंबर-दिसंबर
10. **पौष** : दिसंबर-जनवरी
11. **माघ** : जनवरी-फरवरी
12. **फाल्गुन** : फरवरी-मार्च

2 महीने माह = 1 ऋतु

मार्च-अप्रैल : **वसंत**
मई-जून : गर्मी : **ग्रीष्म**
जुलाई-अगस्त : **वर्षा**
सितंबर-अक्टूबर : पतझड़ : **शरद**
नवंबर-दिसंबर : सर्दी की शुरुआत : **हेंमत**
जनवरी-फरवरी : सर्दी के अंतिम दिन : **शीत / शिशिर**

6 ऋतुएँ = 1 वर्ष संवत्सर

ऐसे ही **60 संवत्सर** होते हैं।

प्रथम 20 : प्रभाव से व्यय तक **ब्रह्मा** उत्तरदायी है।
अगले 20 : सर्वजीत से पराभव तक **विष्णु** उत्तरदायी है।
अंतिम 20 : प्लवंग से अक्षय तक **शिव** उत्तरदायी है।

60 संवत्सर हैं :

1. प्रभव
2. विभव:
3. शुक्ला
4. प्रमोद
5. प्रजापति
6. अंगिरसा:
7. श्रीमुख:
8. भाव
9. युवा
10. धाता
11. ईश्वर
12. बहुधान्य
13. प्रमाथी
14. विक्रम:
15. वृष
16. चित्रभानु:
17. सुभानु
18. तारण
19. पार्थिव
20. अव्यय
21. सर्वजीत
22. सर्वधारी
23. विरोधी
24. विकृति
25. खर
26. नंदन
27. विजय
28. जय
29. मन्मथ
30. दुर्मुख
31. हेमलंबी
32. विलंबी
33. विकारी
34. शार्वरी
35. प्लव
36. शुभकृत
37. शोभकृत
38. क्रोधी
39. विश्वावसु
40. पराभव
41. प्ल्वंग
42. कीलक
43. सौम्य
44. साधरण
45. विरोधकृत
46. परीतापिन
47. प्रमादी
48. आनंद
49. राक्षस
50. आनल
51. पिंगल
52. कालयुक्त
53. सिद्धार्थी
54. रौद्र
55. दुर्मति
56. दुन्दुभी
57. रूधिरोद्गारी
58. रक्ताक्षी
59. क्रोधन
60. क्षय

मनुष्य का **1 वर्ष** = देवी देवताओं का 1 दिन।

एक बार जब **60 संवत्सर** समाप्त हो जाते हैं, तो अगले वर्ष फिर से पेहले नाम से शुरू होता है। और ऐसे ही चक्र चलता रेहता है।

100 वर्ष = 1 शताब्दी (सदी-शतक)
10 शताब्दी = 1 सहस्त्राब्दी (मिलेनियम),
432 सहस्त्राब्दी = 1 युग

1 युग = **1 कलियुग** = 432,000 वर्ष
2 युग = **1 द्वापरयुग** = 864,000 वर्ष
3 युग = **1 त्रेतायुग** = 1,296,000 वर्ष
4 युग = **1 कृतयुग/ सतयुग** = 1,728,000 वर्ष

तो,

कैसे थे ये तीनों युग?

आइए देखते हैं...

सत्य युग :

(लगभग 3,893,121 वर्ष पेहले)

- **हर कोई धार्मिक** और **सुखी** था।
- **वृद्धावस्था या बीमारी** के कोई लक्षण **नहीं** थे।
- **हर कोई नारायण** के **ध्यान** में लगा हुआ था।
- भोजन, आश्रय और **सभी जरूरतें कल्प तरु** (इच्छा पूर्ण करने वाले वृक्ष) **प्रदान** करते थे।
- **सब कुछ** लगभग **स्वर्ग** जितना अच्छा **था।**
- **कोई राक्षस नहि** थे, इसलिए कोई अशांति भी नहि थी।
- **वर्ण व्यवस्था नहीं** थी।
- किसी भी वस्तु पर **कोई कानून या स्वामित्व नहीं** था।
- कोई **शहर नहीं** था, लोग जंगलों में रेहते थे।
- **मृत्यु**/मोक्ष का **समय इच्छा** अनुसार **तय** किया जाता था।
- अधिकतर **मनुष्य** स्वभाव से **सात्विक** थे।
- सामान्य तौर पे एक व्यक्ति का **जीवन काल 100,000 वर्ष था।**
- **सामान्य कद 21** हस्त या हाथ, **32 फीट था।**
- **धर्मी** और **अधर्मी विभिन्न लोकों** में रेहते **थे।** (भूलोक पृथ्वी के सामने अन्य लोक)

त्रेता युग :

(लगभग 2,165,121 वर्ष पेहले)

- समाज के लिए **वर्णाश्रम व्यवस्था का निर्माण** हुआ।
- **कृषि, कला, शिल्प, विज्ञान, राजाशाह, व्यापार, परिवहन बना।**
- महाराज पृथु और राम जैसे राजाओं ने **शहर** और **गांव बनवाए।**
- **ईश्वर प्राप्ति का मार्ग यज्ञ** और **कर्मकांड बने।**
- चारों वेदों का ज्ञान समूह में **एक वेद के रूप में** सिर्फ़ वाणी के माध्यम से गुरु शिष्य परम्परा से आगे ले ज़ाया जाता था।
- **अधर्म** और अन्य राज्यों पर आक्रमण धीरे-धीरे **बढ़ने लगा।**
- अधिकतर मनुष्य स्वभाव से **राजसिक** थे।
- सामान्य तौर पे एक व्यक्ति का **जीवन काल 10,000 वर्ष** था।
- सामान्य **कद** 14 हस्त या हाथ, **21 फीट** था।
- **धर्मी** और **अधर्मी विभिन्न महाद्वीपों** में रेहते थे।

द्वापर युग :

(लगभग 869,112 वर्ष पेहले)

- **लोग प्रसिद्धि, महिमा** और **बड़प्पन में रुचि** रखने लगे।
- राज्यों के बीच, और **देवता** तथा **राक्षसो** के **बीच लड़ाई** होने लगी।
- **बुरी आदतें, रोग, असत्यता** और **जूठा ज्ञान बढ़ने लगा।**
- **ईश्वर प्राप्ति का मार्ग मंदिर और विग्रह पूजा** बनी।
- **राजा** ज़्यादा कर वसूलने लगे।
- **राजा** और प्रशासन **प्रजा की रक्षा** करने **में विफल** होने लगे।
- **वेदों को** अलग अलग प्रकृति के लोगों के लिए **विभाजित** किया गया।
- **भाषाएं** और **संप्रदाय अलग होने लगे** और संप्रदायिकता फैलने लगे।
- केवल **शारीरिक** और **पारिवारिक पालन-पोषण** के लिए भी **अत्यंत** ज़्यादा ही **प्रयास** की आवश्यकता होने लगी।
- अधिकतर **मनुष्य** स्वभाव से **राजसिक** और **तामसिक** बन गए।
- सामान्य **जीवन काल 1,000 वर्ष** हो गया।
- सामान्य **कद** 7 हस्त या हाथ, **11 फीट** हो गया।
- **धर्मी** और **अधर्मी एक ही परिवार में** जन्म लेने लगे।

कलियुग :

(2022 के हिसाब से 5,124 **वर्ष पेहले** शुरू हुआ)

- समाज में लगभग **कोई तपस्या, पवित्रता, सच्चाई, करुणा या स्वच्छता नहीं रेह गई।**
- **आयु, शारीरिक शक्ति** और **स्मरण शक्ति** दिन-ब-दिन **कम होती गई।**
- **ईश्वर प्राप्ति का एकमात्र मार्ग हरिनाम संकीर्तन** ही रेह गया।
- तब **वेद विकृत होते गए,** और **भविष्य में** पूरी तरह से **नष्ट** हो जाएंगे।
- **शासक क्रूर, लालची** और **स्वार्थी** रहे हैं।
- **विवाद, अज्ञानता, द्वेष, नशा, कामवासना** और **गौहत्या** सब **बढ़** कर पृथ्वी को कष्ट देने लगे है।
- **मनुष्य** अधिकतर **तामसिक** स्वभाव के रहेंगे।
- ज़्यादा से ज़्यादा **जीवनकाल 100 वर्ष** ही होगा।
- सामान्य **कद** 3.5 हस्त या हाथ, **5.5 फीट** होगा।
- **कलियुग के अंत तक, पुरुष** क्रूर बौने होंगे जो **अधिकतम** 25 **वर्षों तक जीवित रहेंगे।**
- **धर्मी** और **अधर्मी एक ही शरीर में रेहते हैं** (सभी में आसुरी और दैविक दोनों गुण होंगे)

सतयुग + **त्रेतायुग** + **द्वापरयुग** + **कलियुग** = 1 चतुर्युग

1 चतुर्युग = 1 महायुग
71 महायुग = 1 मन्वन्तर ,

ऐसे **14 मनु 14 मन्वंतर** का नेतृत्व करते हैं,

1. **स्वयंभू** : ब्रह्मा के पुत्र (सृष्टि की शुरूआत)
2. **स्वारोचिष** : अग्नि के पुत्र
3. **उत्तम** : प्रियवर्त: के पुत्र
4. **तामस** : उत्तम के भाई
5. **रैवत** : तामस के भाई (भगवान विष्णु के अवतार)
6. **चाक्षुष** : चक्षु के पुत्र
7. **वैवस्वत** : सूर्य भगवान विवस्वान के पुत्र। (हमारा निवास यहां है)
8. **अर्क-सावर्णि** : सूर्य देव और छाया के पुत्र
9. **दक्ष-सावर्णि** : भगवान वरुण के पुत्र
10. **ब्रह्म-सावर्णि** : ब्रह्मा के पुत्र
11. **धर्म-सावर्णि** : भगवान कार्तिकेय के पोते
12. **रुद्र-सावर्णि** : रुद्र (शिव) पार्वती के पुत्र
13. **देव-सावर्णि** : सत्यसहा के पुत्र
14. **इंद्र-सावर्णि** : देवराज इंद्र के पुत्र

प्रत्येक मन्वंतर के बाद एक सतयुग जितनी लम्बी आंशिक नाश की अवधि आती है। जब दुनिया आंशिक रूप से नष्ट हो जाती है और फिर से बनाई जाती है।

14 मन्वन्तर ~ 1000 महायुग = 1 कल्प
1 कल्प = ब्रह्मा का दिन = ब्रह्मा की रात

अब,
ऐसे **हर कल्प** में, रामायण, महाभारत, दक्ष यज्ञ, समुद्र मंथन वगैरह जैसी **कुछ घटनाएं लगभग समान परिणामों के साथ दोहराई** जाती हैं।
परंतु इन घटनाओं की **बारीकी अलग होती है।**

उदाहरण के लिए,

- अभी की रामायण में वानर सेना द्वारा रामसेतु का निर्माण किया गया था, **पिछली रामायण में रामसेतु का निर्माण ही नहीं हुआ था।** वानरसेना ने **अजगवं धनुष** को पुल के रूप में विस्तारित करके समुद्र पार किया।
- एक कल्प में **सीता स्वयंवर ही नहीं हुआ** था।
- दूसरे एक में जय विजय नहीं बल्कि **दो शिवगणों ने रावण और कुंभकर्ण के रूप में जन्म लिया था।**
- एक कल्प में, **परीक्षित महाराज** श्रीमद् भागवतम् सुनने के लिए **शुकदेव गोस्वामी के पास नहीं गए**, बल्कि स्वयं को बचाने के लिए **तक्षक नाग से छिप गए।**
- दिव्य काग ऋषि **काकाभुशुंडी** ने अलग-अलग परिणामों के साथ **11 बार रामायण देखी** है और **महाभारत** को **16 बार अलग-अलग परिणामों** के साथ देखा है।
- दक्ष यज्ञ को दो बार देखने के बाद, उन्होंने या तो इसे फिर से देखने की परवाह नहीं की क्योंकि इसका परिणाम हर बार एक जैसा ही आया।

शास्त्रों में ऐसे **हजारों** वर्णन हैं,
जहां अलग-अलग कल्प की **घटनाएँ भिन्न भिन्न हैं**, इन्हें हम

कल्प भेद

के नाम से जानते है।

जिसकी तुलना हम आज की

Multiverse Theory

से कर सकते हैं। परंतु ये भेद कई ब्रह्मांडों के अस्तित्व के **कारण नहीं**, बल्कि **कई समय चक्रों** के अस्तित्व के कारण होता है।
तो इसे Multi-Kalp Theory कहना ज़्यादा उचित रहेगा। है की नहि?

इसे अच्छे से समझने के लिए,

चलिए देखते हैं **किस मन्वंतर के किस महायुग में कौन सा अवतार हुआ।**

प्रथम कल्प :

जब ब्रह्मा का जन्म हुआ

1. **पेहले कल्प में नारद और 4 कुमार** प्रकट हुए और वे ब्रह्मा के साथ जीवन भर बने रहे। वे दोनों भगवान के अंशावतार हैं।

101वाँ कल्प : स्वेता वराह कल्प : वर्तमान कल्प

इस 101 वे कल्प में 6 मन्वंतर बीत चुके हैं और हम 7 वें मन्वंतर में रेह रहे हैं। इन 7 मन्वन्तरों में अनेक अवतार हुए।

जैसे की...

1st : स्वयंभू मन्वंतर

2. **भगवान वराह** : अगस्त्य मुनि के श्राप के कारण गर्भोदकशायी सागर में डूबी पृथ्वी को उठाने के लिए नीले वराह के रूप में अवतरित हुए
3. **भगवान मत्स्य** : हयग्रीव का वध किया और वेदों की रक्षा की
4. **भगवान यज्ञ** : ब्रह्मांड को सँभालने में मनु की मदद की
5. **भगवान नर-नारायण** : धर्म की संतान के रूप में आए
6. **भगवान दत्तात्रेय**
7. **भगवान कपिल** : भक्ति सिखाने के लिए
8. **भगवान हयग्रीव** : मधु और कैटभ राक्षसों का वधके लिए
9. **भगवान प्रस्नि-गर्भ**
10. **राजा ऋषभ**
11. **राजा पृथु**
12. **भगवान कूर्म** : पृथ्वी को उठाने के लिए
13. **भगवान वामन** : वस्कली से भूमि ली

6th : चक्षुसा मन्वंतर

1. **श्वेत वराह** : हिरण्याक्ष को मारने और पृथ्वी को उठाने के लिए सफेद वराह के रूप में आए : **चौथा महायुग**
2. **भगवान नरसिंह** : प्रह्लाद की रक्षा के लिए और हिरण्यकश्यप को मारने के लिए : **चौथा महायुग**
3. **भगवान कूर्म** : समुद्र मंथन में मंदराचल पर्वत को धारण करने के लिए
4. **भगवान धन्वंतरि** : समुद्र मंथन के दौरान अमृत लेकर
5. **मोहिनी रूप** : समुद्र मंथन के दौरान राक्षसों को भ्रमित करने के लिए
6. **भगवान मत्स्य** : राजा सत्यव्रत और मानवता को प्रलय से बचाने के लिए : आख़री **71वां महायुग**

7th : वैवस्वत मन्वन्तर : वर्तमान

1. **भगवान धन्वंतरि** : काशी के राजा के पुत्र, धन्व के रूप में
2. **मोहिनी रूप** : भगवान शिव की लीला के भाग रूप में
3. **भगवान वामन** : राजा धुन धुना से भूमि लेने के लिए
4. **भगवान वामन** : बाली महाराज से भूमि लेने और उन्हें भक्ति देने के लिए : **7वां त्रेता युग**
5. **भगवान परशुराम** : कुटिल क्षत्रियों को मारने और धर्म की फिर से स्थापना करने के लिए : **19वां त्रेता युग**
6. **भगवान राम** : रावण का वध करने के लिए : **24 वां त्रेता युग**
   यही नीचे से 28वें महायुग की शुरुआत होती है,
   जिसमें हम सब अभी जी रहे हैं...
7. **भगवान कृष्ण** : 28वां द्वापर युग
8. **भगवान बलराम** : 28वां द्वापर युग
9. **भगवान कृष्ण द्वैयपन व्यास** : 28वां द्वापर
10. **भगवान बुद्ध** : 28वां कलियुग
11. **भगवान कल्कि** : 28वां कलियुग
12. **भगवान चैतन्य** : 28वां कलियुग

अधिक जानकारी के लिए, मत्स्य पुराण के अध्याय 47, वायु पुराण के अध्याय 36 भाग 2, स्कंद पुराण के प्रभास खंड के अध्याय 19, ब्रह्मांड पुराण के अध्याय 73 उपोद्गतपाद और लघुभागवतामृत के अध्याय 3 को पढ़े।

अभी आगे बढ़ते है,

2 कल्प = **ब्रह्मा** का पूरा दिन
365 ब्रह्मा के दिन = 730 कल्प = ब्रह्मा का 1 वर्ष
ब्रह्मा के 100 वर्ष = 1 महाकल्प
1 महाकल्प = ब्रह्मा का जीवन काल
ब्रह्मा का जीवन काल = ब्रह्मांड का जीवन काल

जी हाँ,
यही है,

हमारे **ब्रह्मांड** का **जीवन काल,**
311,040,000,000,000
मानव वर्ष है।

इन वर्षों में,
अलग अलग स्तर पर लगातार
करोड़ों विनाश होते रेहते हैं।
उन विनाश को केहते है...
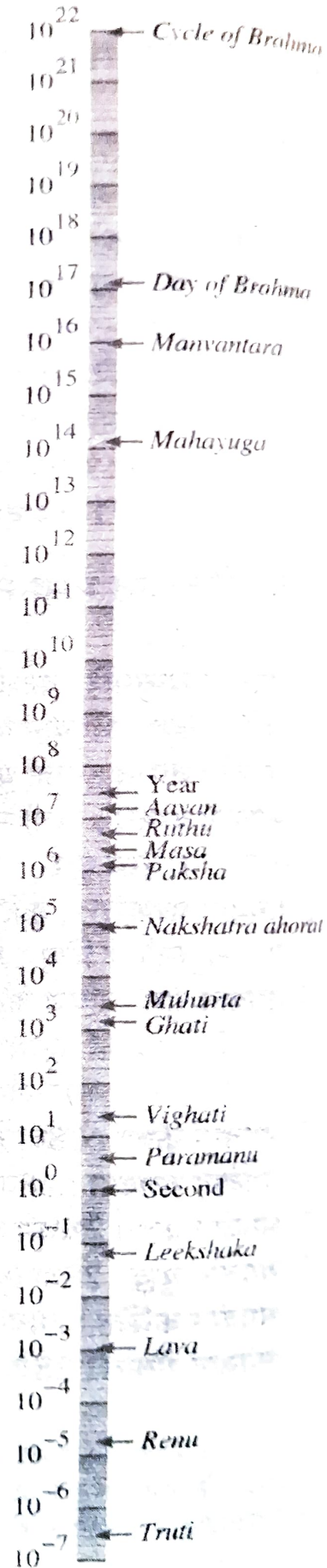
प्रलय

इस ब्रह्मांड में सभी जीव, निर्जीव, लोकों, ग्रहों और यहां तक कि उनके निर्माता चतुर्मुखी ब्रह्मा सहित अन्य सभी देवता भी **काल के अधीन हैं।**

समय को काल क्यों कहा जाता है?
वें सब **समय के प्रभाव से** उत्पन्न होते हैं, जीते हैं और **नष्ट हो जाते हैं, इसलिए उसे केहते है,**

काल...

वो काल समस्त लोकों और उनमें रेहने वाले समस्त जीवों का नियमित विनाश लाता है, ऐसे चक्रीय विनाश को कहा जाता है,

प्रलय...

प्रलय प्रमुख **पाँच प्रकार** के होते हैं :

1. **नित्य प्रलय**
2. **महायुग प्रलय**
3. **नैमित्तिका प्रलय**
4. **महा प्रलय**
5. **आत्यंतिका प्रलय**

नित्य प्रलय प्रतिदिन होता है।

जीव के शरीर की मृत्यु

नित्य प्रलय यानी की अनगिनत जीवो की मृत्यु का सिलसिला रोज चलता रेहता है। इस प्रलय में जीव का शरीर, उसके शारीरिक संबंध, जीव के शारीरिक लगाव, ये सब नष्ट हो जाते हैं।

महायुग प्रलय प्रति महायुग होता है।

एक सभ्यता की मृत्यु : महायुग संध्यांश
हर 4,320,000 साल में

हर कलियुग के अंत में, भगवान कल्कि अपनी तलवार से पूरी सभ्यता को नष्ट कर देते हैं, और अगले दिन केवल संत लोग ही उन्हें सतयुग की स्थापना करते हुए देख पाते है।

नैमित्तिक प्रलय प्रति कल्प होता है।

11 लोकों की मृत्यु : ब्रह्म प्रलय
हर 8.64 अरब साल में

ब्रह्मा के एक दिन के अंत में, जनलोक के नीचे के 11 लोक (भुः भुवाहः सुवाहः) नष्ट हो जाते हैं। ये विनाश ब्रह्मा के सोते समय एक कल्प लंबी रात तक चलता है। सभी देवता मृत्यु को प्राप्त होते हैं। अगली कल्प सुबह, ब्रह्मा फिर से निर्माण शुरू करते हैं और नीचे के सभी 11 लोकों में जनसंख्या के साथ नए देवताओं का जन्म होता है।

प्रकृति प्रलय प्रति महा कल्प होता है।

ब्रह्मांड की मृत्यु : महा प्रलय
प्रत्येक 627 ट्रिलियन वर्ष

ब्रह्मा की 100 वर्ष की आयु पूरी होने के बाद पूरे ब्रह्माण्ड का नाश हो जाता है। यहाँ, कारणोदक्षाई विष्णु के एक श्वास का चक्र पूरा होता है और वो सभी अनंत ब्रह्मांडों को वापस अपने शरीर में समा लेते है।

आत्यन्तिक प्रलय 1 क्षण में हो सकता है।

जिव की शरीर से मुक्ति : आत्म प्रलय

केवल 1 ही क्षण में - जैसे ही जीव पूरी तरह से भगवान के सामने आत्मसमर्पण कर देता है।

आत्यन्तिक प्रलय एक व्यक्ति - जीव द्वारा वैकुंठ यानी की आध्यात्मिक जगत की प्राप्ति है। जहां व्यक्ति जन्म, मृत्यु और रोग के चक्र से मुक्त हो जाता है।

जिव को अब रेहने के लिए शरीर की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि अब उसे उसका शाश्वत रूप प्राप्त हो चूका है और जीव अपने शाश्वत स्थान भगवान नारायण के आध्यात्मिक लोक में निवास करता है।

पापा हो या पुण्य, ये प्रलय कर्म के सभी पिछले खातों को नष्ट कर देता है और व्यक्ति को सदैव के लिए भगवान का प्रेम भरा सम्बंध प्राप्त हो जाता है।

काल (समय) क्यों बनाया गया है?

समय का निर्माण **जीव को भौतिक अस्तित्व की अस्थायीता का अनुभव कराने के लिए** किया गया है। **समय का मूल स्वभाव** ही है उससे प्रभावित होने वाली हर वस्तु में **निरंतर परिवर्तन** लाना।

हर सजीव और निर्जीव **वस्तु** इसी **चार चरण के परिवर्तन से गुजरती है**। निर्जीव चीजों में मात्र 'विकास' नहीं होता।

परिवर्तन के वो चार चरण है,

1. **निर्माण,**
2. **विकास,**
3. **क्षय,**
4. **विनाश**

यहां तक कि परिस्थितियां भी उसी पैटर्न से गुजरती हैं।
उदाहरण के लिए, अच्छे समय भी बनते हैं, विकसित होते हैं, क्षय होते हैं और नष्ट हो जाते हैं।

तो, भौतिक दुनिया के लिए **काल बनाया गया** क्योंकि,
भौतिक दुनिया में जो भी है उसे नष्ट होना ही है।
सूक्ष्मतम अणु से लेकर सभी कारणों के सागर,
कारण सागर में तैरते अनंत ब्रह्मांडों तक, सब नश्वर है।

किंतु वहाँ से आगे,
काल का स्वभाव बदल जाता है।

क्योंकि वहाँ से आगे,
आध्यात्मिक जगत शुरू होता है,
जहां कभी **कुछ क्षय नहीं होता।**
और कभी **कुछ नष्ट भी नहीं होता।**

तो,
आध्यात्मिक दुनिया में काल कैसे काम करता है?

आध्यात्मिक जगत में काल किसी भी वस्तु की **वृद्धि, क्षय या विनाश नहीं लाता।** क्योंकि वहा स्थित **हर वस्तु** तथा **जिव शाश्वत अस्तित्व रखती है।**

वहाँ पर **काल का उद्देश्य** मात्र
**'एक क्रिया को दूसरे के पेहले या बाद में
होने के रूप में वर्णित करना है।'**

उदाहरण के लिए,
जिस समय वे भोजन करते हैं,
उससे पेहले वे स्नान करते है,
फिर कुछ और फिर कुछ और... वग़ैरह वग़ैरह

तथा **वहा हमेशा दिन ही रेहता है।**
हमारे भौतिक जगत की तरह वहा दिन और रात या वर्ष में समय का बंटवारा नहीं होता। वहा **काल भगवान नारायण और योग माया के नियंत्रण में है।**

माया इसका उपयोग **आदर्श परिस्थितियों** को बनाने के लिए करती है, जिससे हमें वहाँ हमारे लिए भगवान की **सेवा करने के** सुंदर **अवसर** बनते हैं और उन्हें हमारे लिए **अद्भुत लीला करने के अवसर** बनते है।

आइये अब हम,

समझते है संकल्प मंत्र को :

जिसके बारे में हमने ब्रह्मांड की शुरुआत में बात की थी।

मान लीजिए **शुक्रवार, 1 जुलाई,** 2016 के दिन आंध्रप्रदेश के **श्रीशैला**
नामक शहर में यज्ञ किया जा रहा है।

अस्मिन वर्तमाने व्यवहारिके :
वर्तमान काल जिसके हम शासित हो रहे हैं,

प्रभावदी षष्ठी संवत्सरनम मध्ये :
जिसमें हम प्रभाव संवत्सरी से आरम्भ होने वाले 60 वर्षों के इस चक्र में

दुर्मुख नाम संवत्सरे :
दुर्मुख नाम के (30वे) संवत्सर से

उत्तरायणे :
उत्तर अयन पर (दो अयनों से)

ग्रीष्म ऋतू :
ग्रीष्म ऋतु में,

मिथुन ज्येष्ठ मासे :
मिथुन - सूर्य मास 15 जून-16 जुलाई;
ज्येष्ठ - चंद्र मास, 6 जून-4 जुलाई

कृष्ण पक्ष :
अंधेरे चंद्रवाले पक्ष पर,

द्वादस्यं सुभ थितू, शुक्र वासरा, अरुद्र नक्षत्र (कृतिका नक्षत्र) युक्तायम
12वीं शुभ तिथि, शुक्रवार के दिन,
अरुद्र (सूर्य तारा) नक्षत्र / कृतिका पर - (चंद्रमा तारा)

आद्य ब्राह्मण :
ब्रह्मा के जन्म के वर्ष से

द्वितेय-परधे :
दूसरे भाग में, ब्रह्मा के 51वें वर्ष में

श्री-श्वेता-वराह-कल्पे :
श्वेत-वराह कल्प में,

वैवस्वत मन्वंतरे :
वर्तमान मनु वैवस्वत (7वें) के शासन काल में

अष्ट विमसती तमे :
मनवंतर के 28वें महा-युग में,

कलियुग, प्रथम पदे :
कलियुग के प्रथम पद में,

जम्भु द्वीपे : जम्बू द्वीप पर,
भरत वर्षे : भारतवर्ष में,
भरत खंडे : भारत खंड में,

सकाबडे मेरोह दक्षिण पर्सवे :
मेरु पर्वत के दक्षिण में,

कृष्ण-गोधावरी मधेय :
कृष्ण और गोदावरी नदियों के बीच,

श्रीशैल क्षेत्र सम्पे :
श्रीशैला नामक स्थान के पास,
ये विशेष पवित्र यज्ञ हो रहा है।
इस प्रकार संकल्प मंत्र यज्ञ समारोह के होने के उचित समय और स्थान की पुष्टि करके दैवीय अभिलेखों में रिकॉर्ड स्थापित करता है।

हम अभी समय में कहाँ हैं?

वर्तमान में,
ब्रह्मा के 50 वर्ष बीत चुके हैं।
हम **ब्रह्मा के 51वें वर्ष के पेहले दिन** में हैं।

अब जब ब्रह्मा के 50 वर्ष बीत चुके हैं,
ये **द्वितिय परार्ध** है,
ब्रह्मांड की रचना का दूसरा आधा भाग।

हम ब्रह्मा के जिस दिन या कल्प में रेह रहे हैं,
उसे **श्वेत-वराह कल्प** नाम दिया गया है।

जिसमें ये सातवां मनु काल है,
हम इस समय **वैवस्वत मन्वन्तर** नाम के
सातवें मन्वंतर में जी रहे है।

इस वैवस्वत मन्वन्तर के भीतर, 27 महायुग और
28वें महायुग के सत युग, त्रेता युग और द्वापर युग बीत चुके हैं।

जिसमें **कलियुग का आरंभ** प्रोलेप्टिक जूलियन कैलेंडर के
अनुसार देखें तो **वर्ष 3105 ईसा पूर्व** में हुआ था।

परंतु,

हम ये सब कैसे जानते हैं?

हममें से कोई भी इतने समय तक नहीं जीया है। या जिया है?

फिर ये सब ज्ञान कहाँ से आता है?

तो जहाँ से ये सारा दिव्य ज्ञान आता है,
उन्हें केहते है...

वेदिक शास्त्र

विद : जानना

वेद : ज्ञान, बुद्धि

वैदिक शास्त्र क्या हैं?

परम ज्ञान का सनातन स्रोत।
जिसमें वो सारा ज्ञान है जो व्यक्ति को अपने
जीवन को सफल बनाने के लिए झरूरी है।

वेदिक शास्त्र क्यू है?

जैसे हर कंपनी अपने प्रोडक्ट के साथ एक मैन्युअल बनाती है ताकि ये सुनिश्चित हो सके कि हम इसका उत्तम रूप से उपयोग कर सकें। भगवान ने वेदों को मानवता के लिए एक मैन्युअल के रूप में बनाया है ताकि ये सुनिश्चित हो सके कि हम इस मानव जीवन का उत्तम रूप से उपयोग करें।

वेद कितने पुराने हैं?

वेद **सनातन (शाश्वत)** हैं। वे हमेशा से विद्यमान (एक्झिस्टिंग) है,
और ब्रह्मांड की शुरुआत के समय सबसे पेहले ब्रह्माजी को दिए गए थे।

वेदों की रचना किसने की?

ऋग्वेद में वेदों को **'सनातन'** और **'अपौरुषेय'** कहा गया है।
'वचा विरूप नित्यता' - ऋग्वेद 8.76.6
वे किसी नश्वर प्राणी द्वारा नहीं बनाए गए हैं।

वेदांत वेदों का वर्णन इस प्रकार करता है,
'वेद उस महान **ब्रह्मण का नि:श्वास** है।'

वैदिक ज्ञान हमेशा से ही **गुरु शिष्य परम्परा** में पीढ़ी दर पीढ़ी मौखिक रूप से दिया गया है।

वेदों को कंठस्थ कैसे किया जाता था?

वेदों का एकदम स्पष्ट स्मरण करने के लिए अलग अलग वैदिक पद्धतियों से उन्हें कठोर तरीक़े से दोहराके याद किया जाता था। पद्धतियाँ जैसे 8 विकृतियाँ और 3 पाठ,

8 विकृतिया :

1. **जटापाठ**
2. **मालपाठ**
3. **शिखापाठ**
4. **रेखापाठ**
5. **ध्वजापाठ**
6. **दंडपाठ**
7. **रथपाठ**
8. **घनपाठ (सबसे कठिन और सबसे लंबा)**
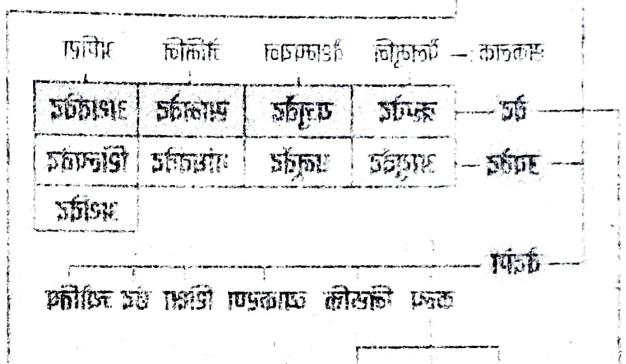
3 पाठ :

1. **संहिता-पाठ**
2. **पद-पाठ**
3. **क्रम-पाठ**

परंतु **ऋषियों** को पता था, कि जैसे-जैसे **कलयुग** निकट आएगा, भविष्य **में** मनुष्यों के पास वेदों को याद करने के लिए उतनी याद शक्ति नहीं रहेगी और उसमे मिलावट होनी शुरू हो जाएगी। इसलिए उन्होंने **इनका संकलन करके संग्रह करने का निर्णय लिया।**

फिर व्यासदेव के मार्गदर्शन में विभिन्न ऋषियों द्वारा प्राथमिक **वैदिक साहित्य का संकलन किया गया।**
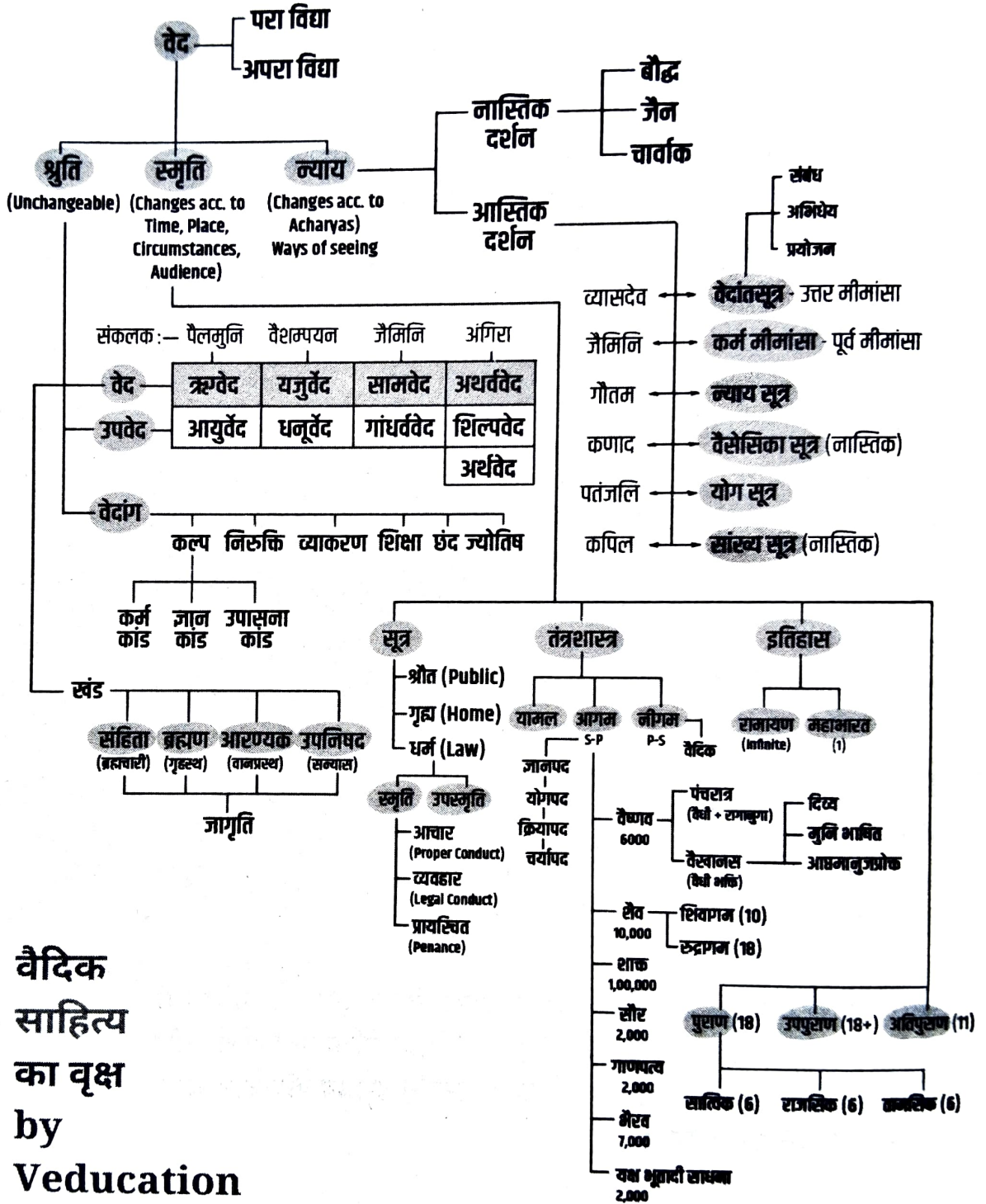
वैदिक साहित्य का वृक्ष by Veducation

वैदिक साहित्य की संरचना

वेदों में दो प्रकार के ज्ञान समाहित हैं :

1. **परा विद्या : परम सत्य** का ज्ञान
2. **अपरा विद्या : सांसारिक सत्य** का ज्ञान

दोनों प्रकार के ज्ञान के ज़्यादातर शास्त्रों को तीन श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है :

1. श्रुति : **सुनके** लिया गया ज्ञान
2. स्मृति : **स्मरण करके** या **साक्षात्कार से** लिया गया ज्ञान
3. न्याय : **देखने** और **समजने के** विभिन्न **तरीके**

श्रुति :

ज्ञान जो सुनके लिया गया था।

अपरिवर्तनीय : ये ज्ञान कभी नहि बदलता

'ज्ञान के सनातन स्रोत, स्वयं **भगवान,**
से सुनकर निर्मित किया गया ज्ञान।'

'सबसे
पेहली बार **सृष्टि के आरंभ में वेदों ने** ब्रह्मांड में **प्रवेश** किया था
जब ब्रह्माजी ने उन्हें परमात्मा (ईश्वर, ब्रह्मण) से सुना।
तेने ब्रह्म हृदा य आदिकवये... श्रीमद् भागवतम 1.1.1

श्रुति शास्त्रों में ज़्यादातर तीन प्रकार के शास्त्र आते हैं

1. **वेदांग**
2. **वेद**
3. **उपवेद**

वेदांग :

वेदांग **वेदों के अंग हैं।**
जैसे बिना अंगों को समझे शरीर को नहीं समझा जा सकता
वैसे ही बिना वेदांगों को समजे वेदों को कोई नहीं समज सकता।

वेदों को सीखने के लिए,
एक **ब्रह्मचारी** (विद्यार्थी) पेहले **वेदांग सीखता है**।
तभी वो वेदिक भाषा को और अंततः वेदों के ज्ञान को समज पाता है।

वे कुल **छह वेदांग** हैं :

1. **कल्प** : विधि-अनुष्ठान निर्देश
   जो तीन अलग-अलग कर्म कांडों के लिए दिए गए हैं
   - कर्म कंड
   - ज्ञान कांड
   - उपासना कांड
2. **निरुक्ति** : शब्दों की व्याख्या
3. **व्याकरण** : व्याकरण और भाषा का विश्लेषण
4. **शिक्षा** : उचित शब्द श्लोक उच्चारण
5. **छंद** : काव्य रचना
6. **ज्योतिष** : मुख्य रूप से अनुष्ठानों के शुभ मुहूर्त के लिए

वेद :

वेदों में ज़्यादातर स्तोत्र, सूक्त, लीलाएं, कविताएं, प्रार्थनाएं, स्तुतियां तथा अलग अलग देवताओं को प्रसन्न करने के लिए और **मानवता के कल्याण** के लिए यज्ञ अनुष्ठान **की विधियाँ दी गई** हैं।

पेहले केवल **एक ही प्रमुख वेद** था, **यजुर्वेद।**
जिसे **बाद में वेद व्यास** के आदेश पर विभिन्न ऋषियों द्वारा **चार** अलग-अलग **वेदों में विभाजित** किया गया था।

1. **ऋग्वेद**
2. **यजुर्वेद**
3. **सामवेद**
4. **अथर्ववेद**

हर एक वेद के चार विभाजन हैं :

- **संहिता : ब्रह्मचारियों** के धर्म का आह्वान करने के लिए
- **ब्राह्मण : गृहस्थों** के धर्म का आह्वान करने के लिए
- **आरण्यक : वानप्रस्थ** के धर्म का आह्वान करने के लिए
- **उपनिषद : सन्यासियों** के धर्म का आह्वान करने के लिए

1. ऋग्वेद

: **पैल मुनि** द्वारा संकलित,
: **ऋक् मंत्रों** का संग्रह है।
: **ऋक् मंत्र देवताओं को प्रसन्न करते है।**
: आज ऋग्वेद की केवल **एक शाखा**
उपलब्ध है - जिसका नाम **शाकल** शाखा है।

: ऋग्वेद में लगभग **10552 मंत्र हैं।**
: इन मंत्रों को **10 मंडलों** में वर्गीकृत किया गया है।
: प्रत्येक मंडल को **85 अनुवकों** में विभाजित है।
: उन प्रत्येक अनुवाक में **सूक्त** होते हैं।
: जो मिलके कुल **1028 सूक्त** बनते हैं।
: प्रत्येक सूक्त में कई श्लोक हैं जिन्हें **ऋक्** कहा जाता है।

: **सबसे अधिक प्रसिद्ध सूक्तों** में से कुछ हैं,
- पुरुष सूक्त
- हिरण्यगर्भ सूक्त
- धन-अन्न-दान सूक्त
- अक्ष सूक्त
- नसदिय सूक्त
- दुःस्वप्रा-नाशना सूक्त
- यम-यामी-संवाद सूक्त

: इसके साथ ही उसमें अलग-अलग देवी देवताओ के सूक्त भी है,
जैसे की **इंद्र, मारुत, वरुण, उषा, सूर्य, भूमि, सोम, अग्नि वगैराह।**

2. यजुर्वेद

: **वैशम्पायन मुनि** द्वारा संकलित,
: **यजुश मंत्रों** का संग्रह है।
: **यजुश मंत्र यज्ञ के लिए** होते हैं। (यजुः यजते)
: यजुर्वेद **यज्ञ अनुष्ठानों का वेद** है।

: यजुर्वेद के दो भाग हैं,
1. **शुक्ल यजुर्वेद** (आदित्य विद्यालय) में समाहित हैं,
    1. मध्यांडीना संहिता
    2. कण्व संहिता
2. **कृष्ण यजुर्वेद** (ब्रह्मा विद्यालय) में समाहित हैं,
    1. तैत्तिरीय संहिता 3. कथक संहिता
    2. कपिष्ठला संहिता 4. मैत्रायणी संहिता

: सबसे अधिक उल्लेखित यज्ञों में से कुछ हैं,
- अग्निहोत्र
- अश्वमेध
- सर्वमेध
- ब्रह्मयज्ञ
- पितृमेध
- सोमयज्ञ
- चातुर्मास्य यज्ञ
- वाजपेय
- राजसूय (सोमयाग से प्रारंभ और सौत्रामणि से समाप्ति)
- दर्शन-पूर्णम
- सोमयज्ञ और अग्निचयन

: **दो तात्त्विक भाग सब से** अधिक उल्लेखित **हैं,**
1. ईशावास्य उपनिषद्
2. शिवसंकल्प सूक्त

3. सामवेद

: **जैमिनी मुनि** द्वारा संकलित,
: **समन मंत्रों** का संग्रह है।
: **समन** का अर्थ होता **है राग**।

: तीन वेद (वेद त्रयी) तीन प्रकार के योगों के लिए महत्वपूर्ण कहे गए हैं,
- **ऋग्वेद** : **ज्ञान** : क्योंकि कि इसमें देवताओं का वर्णन है
- **यजुर्वेद** : **कर्म** क्रिया : क्योंकि कि इसमें यज्ञ की व्याख्या है
- **सामवेद** : **भक्ति** : इसमें महिमा गयी गई है

: यही कारण है कि **श्री कृष्ण** भगवद **गीता 10.22** में केहते हैं
'वेदानां सामवेदोऽस्मि...'
'वेदों में से मैं सामवेद हूँ...'

: पतंजलि के अनुसार **सामवेद में 1000 शाखाएं थी।**
: आज **केवल तीन उपलब्ध** हैं :
1. कौथुम
2. जैमिनीय
3. राणायनीय

: सामवेद के **दो भाग** हैं,
- **पूर्वार्चिक** (650 मंत्र)
    1. **अग्नेय** : अग्नि के लिए मंत्र
    2. **ऐंद्रा** : इंद्र के लिए मंत्र
    3. **पावमन** : सोम पावमन के लिए मंत्र
    4. **अरण्य** : इंद्र, अग्नि, सोम वगैराह के लिए मंत्र।
- **उत्तराचीक** (1225 मंत्र)

4. अथर्ववेद

: **अंगिरा मुनि** द्वारा संकलित
: **अथर्वन मंत्रों** का संग्रह है।
: **अथर्व** का अर्थ है **स्थिर दिमाग वाला योगी या पुजारी**
: **अथर्ववेद** को अन्य नामों से भी जाना जाता है जैसे
अंगिरसवेद, क्षत्रवेद, भैषाज्यवेद,
चांदोवेद, महिवेद, ब्रह्मवेद वगैराह...

: आज उसकी **दो शाखाएं** ही उपलब्ध हैं,
1. **शौनक**
2. **पिप्पलाद**
: जो की **20 कांडो** में विभाजित हैं

: **आयुर्वेद** का भी **एक हिस्सा अथर्ववेद** से निकला है।
: जिसमें **शारीरिक** और **मानसिक रोगों** को **ठीक करने** के श्लोक है।
: और **दवाइयाँ** और **औषधीय जड़ी बूटियों** के बारे में भी उल्लेख है।
: **अथर्ववेद** में **शांति स्थापित करने के,** सुरक्षा,
स्वास्थ्य, धन, मित्रता और लंबी उम्र पाने के **मंत्र भी हैं।**

: अथर्ववेद के **सबसे प्रसिद्ध सूक्त** हैं,
- भूमि सूक्त
- ब्रह्मचर्य सूक्त
- कला सूक्त
- विवाह सूक्त
- मधुविद्या सूक्त
- रोहित सूक्त
- स्कम्भ सूक्त
- सामनस्य सूक्त

: अथर्ववेद में **प्रजापति** संसार के रचयिता के रूप में **सर्वोच्च** देवता हैं।

उपवेद :

प्रत्येक वेद से ज्ञान का एक माध्यमिक स्रोत आता है,
जिसे **उपवेद** के नाम से जाना जाता है।

1. **ऋग्वेद** से **आयुर्वेद** (दवाएं और जड़ी बूटी)
2. **यजुर्वेद** से **धनुर्वेद** (तीरंदाजी और युद्ध)
3. **सामवेद** से **गंधर्ववेद** (संगीत और कला)
4. **अथर्ववेद** से **शिल्पवेद** (वास्तुकला) और
   अथर्ववेद से **अर्थ-शास्त्र** (अर्थव्यवस्था)

आयुर्वेद में 8 प्रमुख भाग हैं :

- **कायाचिकित्सा :** सामान्य चिकित्सा, शरीर की औषधि
- **कौमार-भ्त्या (बाल रोग) :** बच्चे और मां की प्रसवपूर्व और प्रसवोत्तर देखभाल के बारे में चर्चा; गर्भाधान के तरीके; बच्चे के लिंग, बुद्धि और प्रकृति को चुनना; बचपन के रोग
- **शल्यतंत्र :** सर्जिकल टेकनीक्स और बाह्य वस्तुओं का निकाल
- **शालाक्यतंत्र :** खुले घाव से होने वाली बीमारी का उपचार और ऊपरी शरीर में होने वाली बीमारियों का उपचार : कान, आंख, नाक, मुंह, वगैर...
- **भूतविद्या :** आत्माओं और भूत वर्गीत लोगों को शांत रखने के उपाय।
- **आगदतंत्र/विशाग्र -वैरोध तंत्र (विष विज्ञान) :** महामारियों के उपाय; जानवरों, सब्जियों और खनिजों में ज़हरीले पदार्थ; और उनके उपचार
- **रसायनतंत्र :** आयु, बुद्धि और शक्ति बढ़ाने के लिए जीर्णोद्धार के औषध
- **वाजिकरण तंत्र :** कामुक; वीर्य और यौन सुख की मात्रा और व्यवहार्यता बढ़ाने के लिए उपचार; बांझपन की समस्या; और आध्यात्मिक विकास (यौन ऊर्जा का आध्यात्मिक ऊर्जा में रूपांतरण)

स्मृति :
ये ज्ञान समय, स्थान, परिस्थितियों और दर्शकों के अनुसार बदलता है।

हम केह सकते है की स्मृति शास्त्र वो वैदिक शास्त्रों का उपयोग में लिया गया ज्ञान हैं। जैसे कि श्रुति हमें नियम और तरीके बताती है, तो स्मृति हमें बताती है कि उन नियमों को कैसे लागू करते हुए उस सही रास्ते पर चलना है।

क्यूँकि धर्म का मार्ग समजने में बहुत जटिल और सूक्ष्म है,
इसलिए स्मृति हमें श्रुति का ज्ञान व्यावहारिक रूप से वास्तविक जीवन में कैसे उतारे ये सिखाता है।

सरलता से समजने के लिए
हम केह सकते हैं की,
श्रुति = थियोरी = सैद्धांतिक ज्ञान
स्मृति = प्रेक्टिकल = प्रायोगिक ज्ञान

स्मृति ग्रंथों में मुख्य चार प्रकार के ग्रंथ आते हैं,

1. **पुराण**
2. **इतिहास**
3. **सूत्र**
4. **तंत्र शास्त्र**

पुराण :

पुरा : पूर्व, प्राचीन, पेहले का, पुराना
पुराण : (कथाएँ, लीलाए) बड़ों की, पूर्वजों की।

पुराणों को **पंचम वेद**, पांचवां वेद कहा जाता है।
इतिहासपुराणं पंचमं वेदानाम
- छांदोग्य उपनिषद 7.1.2

पंच लक्षण :
प्रत्येक पुराण मुख्य रूप से पाँच विषयों के बारे में बात करता है जिन्हें **पुराणों की पाँच विशेषताओं** के रूप में भी जाना जाता है।

1. **सर्ग** : ब्रह्मांड का निर्माण, विनाश और उसका विज्ञान
2. **प्रतिसर्ग** : ब्रह्मांड की संरचना, ब्रह्मांड विज्ञान
3. **वंश** : देवताओं, ऋषियों और राजाओं की वंशावली
4. **मन्वन्तर** : ब्रह्मांडीय चक्र, राजसत्ता के समय का इतिहास
5. **वंशानुचरित** : सूर्यवंशी और चंद्रवंशी राजाओं सहित प्रतापी राजवंशों के वंश का लेखा-जोखा

हालाँकि श्रीमद् भागवत पुराण में **पांच और लक्षण** जोड़े गए हैं :

1. **उत्या** : देवताओं, ऋषियों, राजाओं और विभिन्न जीवों के बीच कर्म संबंध
2. **ईशानुकथा** : एक देवता के बारे में कहानियां
3. **निरोध** : निष्कर्ष
4. **मुक्ति** : मोक्ष, आध्यात्मिक मुक्ति
5. **आश्रय** : शरण

मत्स्य पुराण के अध्याय 53 में,
भगवान मत्स्य वैवस्वत मनु से केहते हैं कि,
सभी शास्त्रों में से
ब्रह्माजी ने सबसे पेहले पुराणों का स्मरण किया था,
जीसके बाद, उन्होंने अपने चार मुखों से चार **वेदों का उच्चारण किया।**

उस समय ये **मात्र एक ही महा पुराण था**
जिसमें **एक सौ करोड़** (हाँ!) **श्लोक थे।**
और देव लोक में **देवताओं के लिए** वो अभी भी उपलब्ध हैं।
शतकोटिप्रविस्तरम।

जबकि **मनुष्यों के लिए पुराण में** कुल **4 लाख श्लोक** हैं, जो **व्यासदेव** द्वारा प्रत्येक द्वापर युग में **18 पुराणों** में विभाजित करके जगत में फैलाये जाते है।

पुराणों में ब्रह्मांड में अलग अलग स्थानों से लीलाएं, वर्णन, बातचीत, अलग अलग **देवताओं की स्थितियां** और **विभिन्न कल्पों से** महत्वपूर्ण व्यक्तित्वों के बारे में ज्ञान समाहित हैं।

इसलिए **पौराणिक ज्ञान समय, स्थान, परिस्थितियों** और **दर्शकों के अनुसार व्यक्तिगत** हो जाता है। हर किसी के लिए समान नहि रेहता।

इसलिए अगर उसका **बिना उचित मार्गदर्शन के अध्ययन** किया जाए, तो शास्त्रों के प्रति **भ्रम, अधूरा ज्ञान और अविश्वास** खड़ा **हो जाता है।**

जो **आज कल हम होते हुए देख रहे है,**
कि सामान्य **लोग** जो **बिना किसी पारम्परिक मार्गदर्शन के शास्त्रों का अध्ययन** करने का प्रयास करते हैं, वे मतभेदों को विरोधाभास मानते हुए शास्त्रों के बारे में बहुत सारी शंकाएं और भ्रम में पड़ जाते है।

फिर **वे शास्त्रों के प्रति अविश्वासु हो जाते है** और काफ़ी बार नास्तिक भी।
इसलिए शास्त्रों को हमेशा उचित पारम्परिक मार्गदर्शन के साथ ही पढ़ना चाहिए और पढ़ाना भी वैसे ही चाहिए।

पुराणों में दो प्रकार के भेद

श्रील व्यासदेव ने **अलग-अलग समय**, **अलग-अलग जगहों**, **अलग-अलग परिस्थितियों**, **अलग-अलग प्रकृति** और **अलग-अलग स्तर की चेतना वाले अलग-अलग लोगों** के लिए **अलग-अलग पुराणों** को संकलित और वर्गीकृत किया है।

उसके अनुसार पुराणों में दो प्रकार के मुख्य भेद पाए जाते हैं,

1. **कल्प भेद** : **लीलाओं** में भेद
2. **इष्ट भेद** : **ईश्वरीय सर्वोच्चता** का भेद

अलग-अलग पुराणों में एक ही **लीलाओं में भेद** इसलिए है क्योंकि वो एक ही लीला अलग-अलग कल्प या युग में हुई हैं, ऐसे भेद को **कल्प भेद** केहते है।

उदाहरण के लिए,
यहाँ कुछ पुराण और उनके कल्प है जिनसे वे लीलाएँ का वर्णन कर रहे हैं,

- **पद्म पुराण** : पद्म कल्प (इसीलिए पुराण का नाम भी पद्म है)
- **विष्णु पुराण** : वराह कल्प (वर्तमान कल्प)
- **वायु पुराण + शिव पुराण** : श्वेत कल्प
- **भागवत पुराण** : सरस्वती कल्प
- **नारदीय पुराण** : बृहत कल्प
- **अग्नि पुराण** : ईशान कल्प
- **भविष्य पुराण** : अघोर कल्प
- **ब्रह्मवैवर्त पुराण** : रथन्तर कल्प
- **लिंग पुराण** : अग्नेय कल्प
- **वराह पुराण** : मानव कल्प
- **स्कंद पुराण** : सतपुरुष कल्प
- **वामन पुराण** : कूर्म कल्प
- **कूर्म पुराण** : लक्ष्मी कल्प
- **मत्स्य पुराण** : वराह कल्प (वैवत्सर मन्वन्तर)

अब,
एक अर्थ में भगवान **की सर्वोच्चता** का भेद भी कल्प भेद ही है, परंतु इसे विशेष रूप से **इष्ट भेद** केहते है। क्यूँकि अलग अलग कल्पों में उस कल्प में जन्म लेने वाले **जीवों के स्वभाव** के अनुसार **विभिन्न भगवान को सर्वोच्चता दी जाती है**।

जैसे अपने **गुणों के आधार पर** (सत्व, रजस और तमस) एक व्यक्ति **उन विशेष भगवान से ही सम्बद्धि (Relate) कर पाता है** वैसे ही वो उस पुराण की **लीलाओं**, उनके **उद्देश्यों**, **परिणामों** और उसमें वर्णित **प्रथाओं** की **प्रकृति के कारण** उसी पुराण से सम्बद्धि (Relate) कर पाता है।

हर एक **पुराण** हमारे **चेतना** के स्तर **को ऊपर उठाने के लिए** विशेष **नियमों** के साथ एक विशेष **प्रक्रिया का वर्णन करता है**।

क्यूँकि **शास्त्रों का लक्ष्य** कुछ जीवनो में हमारी **चेतना** को धीरे-धीरे **ऊपर उठाना है**। उसके लिए, **पेहला** और सबसे महत्वपूर्ण **कदम** ये **है** कि अपने इष्ट देव के प्रति **सम्पूर्ण समर्पण** और **अडिग भक्ति** के गुणों को विकसित किया जाए, बजाय इसके कि अधिक से अधिक व्यक्तिगत लाभ के लिए बार बार अलग अलग अधिक से अधिक बड़े देवी या देवता की खोज करते रहें।

जैसे कि अगर एक पत्नी हमेशा बेहतर और बेहतर व्यक्ति की खोज में रहे और जिस पति से उसका विवाह हुआ है उसके प्रति उसके कर्तव्य, प्रेम और तृप्ति विकसित नहीं करती है, तो ना तो उसका आध्यात्मिक विकास होता है, ना ही उसके परिवार का भला हो पाता है।

इसलिए व्यक्ति को **अपने इष्ट देव के प्रति निष्ठावान रेह**ना चाहिए और **परम्पराओं के अनुसार** उनकी **सेवा** करनी चाहिए जिसे वो समर्पित है, और साथ ही साथ इस तथ्य का भी सम्मान करना चाहिए की अन्य परंपराएं भी ऐसा ही करेंगी। तो कभी किसिके इष्ट का अपमान नहि करना चाहिए।

इसीलिए पुराने समय में हमारी संस्कृति हुआ करती थी की कभी **अपने पति, गुरु या इष्ट देव का नाम दूसरों के सामने नहि लिया जाता था**।

अब आगे बढ़ते है, तो जब व्यासदेवने पुराणों का संकलन किया था, **उन्होंने पुराणों को उनकी प्रमुख प्रकृति के अनुसार तीन स्वभावों में वर्गीकृत किया है।** पद्म पुराण उत्तर कांड 236.18-21

सात्विक पुराण

1. श्रीमद् भागवत पुराण : 18,000 श्लोक
2. विष्णु पुराण : 23,000 श्लोक
3. नारदीय पुराण : 25,000 श्लोक
4. पद्म पुराण : 55,000 श्लोक
5. गरुड़ पुराण : 18,000 श्लोक
6. वराह पुराण : 24,000 श्लोक

राजसिक पुराण

1. ब्रह्माण्ड पुराण : 12,200 श्लोक
2. ब्रह्मवैवर्त : 18,000 श्लोक
3. मार्कंडेय पुराण : 9,000 श्लोक
4. भविष्य पुराण : 14,500 श्लोक
5. वामन पुराण : 10,000 श्लोक
6. ब्रह्म पुराण : 13,000 श्लोक

तामसिक पुराण

1. मत्स्य पुराण : 14,000 श्लोक
2. कूर्म पुराण : 18,000 श्लोक
3. लिंग पुराण : 11,000 श्लोक
4. शिव पुराण : 1,00,000 श्लोक
5. स्कंद पुराण : 81,100 श्लोक
6. अग्नि पुराण : 16,000 श्लोक

दूसरी ओर स्कंद पुराण में वैष्णव पुराणों को तामसिक और शैव पुराणों को सात्विक बताया गया है।

इसे, जैसा कि पेहले बताया गया है, विरोधाभास के रूप में नहीं लिया जाना चाहिए। यदि आप शैव संप्रदाय में हैं, तो शैव पुराण आपका केंद्रीय ध्यान होना चाहिए, न कि वैष्णव या शाक्त पुराण। वैष्णव और शाक्त संप्रदाय के लिए भी यही है। इसलिए, अपने स्वयं के संप्रदाय से निष्ठावान रहें और दूसरों के इष्ट देव का सम्मान करें।

एक श्लोक में सभी 18 महापुराण
के नाम ऐसे याद रखें :

मद्वयं भद्वयं चैव ब्रत्रयं वचतुष्टयम।
अ-ना-प-लिं-ग-कू-स्कानि पुराणानि पृथग्विदुः॥

ये श्लोक 18 महा पुराणों के नामों के पेहले अक्षर से बना है,

म-द्वयं : म से दो पुराण :
मत्स्यपुराण, मार्कण्डेयपुराण

भ-द्वयं : भ से दो पुराण :
भागवतपुराण, भविष्यपुराण

ब्र-त्रयम् : ब्र से तीन पुराण :
ब्रह्मपुराण, ब्रह्माण्डपुराण, ब्रह्मवैवर्तपुराण

व-चतुष्टयम् : व से चार पुराण :
वराहपुराण, वामनपुराण, वायुपुराण, विष्णुपुराण

बाकि के कुछ ऐसे,
अ-ना-प-लिं-ग-कू-स्कानि

अ : अग्निपुराण
ना : नारदीयपुराण
प : पद्मपुराण
लिं : लिंगपुराण
ग : गरुडपुराण
कू : कूर्मपुराण
स्क : स्कन्दपुराण

इनके सिवाय,

18 उपपुराण

देवी भागवत और **मत्स्य पुराण** में वर्णित है।

1. गणेश पुराण
2. नरसिंह पुराण
3. कल्कि पुराण
4. एकाम्र पुराण
5. कपिल पुराण
6. दत्त पुराण
7. श्री विष्णुधर्मोत्तर पुराण
8. मुद्गल पुराण
9. सनतकुमार पुराण
10. शिवधर्म पुराण
11. आचार्य पुराण
12. मानव पुराण
13. उष्न पुराण
14. वरुण पुराण
15. कालिका पुराण
16. महेश्वर पुराण
17. सांबा पुराण
18. सौर पुराण

और कुछ अन्य...

1. पाराशर पुराण
2. मारीच पुराण
3. भार्गव पुराण
4. हरिवंश पुराण
5. सौरपुराण
6. प्रज्ञा पुराण

फिर **11 और उप-पुराण** 'अतिपुराण' हैं जिन्हें पशुपति पुराणों के नाम से जानते है।

इतिहास :

इति+ह+आस : वो, जो हुआ था

इतिहास शास्त्र,
ब्रह्मांड के इतिहास में हुई **सबसे महत्वपूर्ण घटनाओं के बारे में** बात करने वाले शास्त्र **है।**

इतिहास हमे **वैदिक ज्ञान को प्रायोगिक रूप में कैसे अपनाएँ ये सिखाता है।**

हालाँकि पुराणों को भी इतिहास के रूप में लिया जाता है, इनके अलावा, प्रमुख रूप से **दो महाकाव्य** हैं जिन्हें इतिहास शास्त्र में गिना जाता है।

1. **महाभारत**
2. **रामायण**

1. महाभारत :

व्यासदेव को महाभारत का मुख्य **वर्णनकर्ता** माना जाता है,
और **लेखक भगवान श्रीगणेश** हैं।

महाभारत की महानता :
धर्मे चार्थे च कामे च मोक्षे च भरतर्षभ।
यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत् क्वचित्॥
-महाभारत 1.62.53

'हे राजन्! **धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष** नामक जीवन के चार पुरुषार्थों से सम्बन्ध रखने वाला **जो कुछ** ज्ञान **महाभारत में है वो दूसरी जगह है**, परंतु **जो महाभारत में नहीं है, वो कहीं और भी नहीं मिलेगा!'**

महाभारत में कल्प की शुरुआत से लेकर पृथ्वी पर कलियुग के
प्रवेश तक की सबसे महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाओं की चर्चा है।

हालाँकि महाभारत की मुख्य कथा,
वो कुरु वंश की पीढ़ीगत गाथा और चचेरे भाई
कौरवों और पांडवों के बीच का सबसे बड़ा युद्ध है।

श्रीमद् भगवद् गीता,

सनातन धर्म का सबसे महत्वपूर्ण साहित्य,
महाभारत का हिस्सा है और श्री कृष्ण द्वारा अर्जुन को
कुरुक्षेत्र के युद्ध के मैदान के बीच में बोला गया था।

जो महाभारत के **भीष्म पर्व** कहे जाने वाले
18 पर्वों में से छठे में पाया जाता है।

महाभारत में कुल 1,00,000 श्लोक हैं
जो **18 पर्व** (घटनाओं, अध्यायों) में विभाजित हैं :

1. **आदि पर्व** : शुरुआत की घटना
2. **सभा पर्व** : सभा का आयोजन
3. **वन पर्व** : जंगल की घटना
4. **विराट पर्व** : विराट नगर की घटना
5. **उद्योग पर्व** : प्रयास की घटना
6. **भीष्म पर्व** : भीष्म की घटना
7. **द्रोण पर्व** : द्रोण की घटना
8. **कर्ण पर्व** : कर्ण की घटना
9. **शल्य पर्व** : शल्य पर्व की घटना
10. **सौप्तिका पर्व** : सोते हुए योद्धाओं की घटना
11 **स्त्री पर्व** : महिलाओं की घटना
12. **शांति पर्व** : शांति की घटना
13. **अनुशासन पर्व** : निर्देश
14. **अश्वमेधिक पर्व** : अश्व यज्ञ का आयोजन
15. **आश्रम्वासिक पर्व** : आश्रम की घटना
16. **मौसल पर्व** : क्लबों का आयोजन
17. **महाप्रस्थानिका पर्व** : महान यात्रा
18. **स्वर्गारोहण पर्व** : स्वर्ग तक की चढ़ाई

यहाँ तक कि **महाभारत में भी रामायण** है। वनवास में गए पांडवों के सामने **मार्कंडेय मुनि द्वारा** रामायण का संक्षिप्त रूप में **वर्णन किया गया** था।

दुनिया की किसी भी सभ्यता के इतिहास में लिखी गई
सबसे लंबी कविता का रिकॉर्ड **महाभारत** के नाम है।

हालांकि मुख्य लेखक का श्रेय व्यासदेव को दिया जाता है।
महाभारत में कथा के अंदर कथा है जिसमें **व्यासदेव के दो और शिष्य** नैमिषारण्य वन में इस महाकाव्य को ऋषियों की सभा में केहते हैं।

1. **वैशम्पायन मुनि** 2. **उग्रश्रवा सौति/ सूत गोस्वामी**

2. रामायण :

मूल **रामायण** सबसे **पेहले ब्रह्माजी** ने **नारद मुनि को** सुनाई थी, जो **फिर उन्होंने वाल्मीकि जी को सुनाई, जिन्होंने फिर** उसे सम्पूर्ण **जगत को दिया**। और हाँ, जब ब्रह्माजी ने उसे सुनाया था, तब उसमें **सौ करोड़ श्लोक** थे। जिसमें से मनुष्यों के लिए सिर्फ़ 24,000 श्लोक से संक्षिप्त में बताई।

रामायण कितनी बार हुई?

रामायणानि बहुश: श्रुतानी बहभिर्द्विजैः।।
-आध्या. राम. 2.4.77
अनंत ब्रह्मांडों में रामायण **अनंत बार** घटित हुई है। हालांकि **हमारे** अपने **ब्रह्मांड में,** ये लगभग **51 बार** हुई है। प्रत्येक कल्प में एक बार।

सबसे हाल की रामायण कब हुई?

तो उन 51 में से सबसे हाल की रामायण **24वें महायुग के त्रेता युग** में घटित हुई। और हम वर्तमान में **28वें महायुग** में जी रहे हैं।
तो ये अब से **4 महायुग** पेहले हुई थी।
लगभग 18.2 मिलियन वर्ष पेहले।

रामायण किसने लिखी थी?

कौन सी वाली? जी हां, रामायण एक नहीं है।
हालाँकि मनुष्यों के लिए जो **प्राथमिक रामायण** है,
वो **वाल्मीकि मुनि की लिखी** गई आदि-रामायण ही है।
किंतु ये एकमात्र रामायण नहीं है जिसे उन्होंने लिखा था।
तो **फिर?**

कुल कितनी रामायण है?

अनगिनत।
जी हाँ, रामायण अनगिनत बार होने के उपरांत, जितनी भी बार ये हुई है, उसे अलग अलग व्यक्तिओ द्वारा अनगिनत बार लिखा गया है।

हम उन्मे से कुछ को जानते है, जैसे कि,

1. **श्रीमद वाल्मीकि रामायण** : वाल्मीकि ऋषि : आदि रामायण : मत्स्य पुराण के अनुसार उसमें 5,25,000 श्लोक थे।
2. **आनंद रामायण** : वाल्मीकि ऋषि से भारद्वाज मुनि
3. **अद्भूत रामायण** : वाल्मीकि ऋषि
4. **रामचरितमानस** : तुलसी दासी
5. **रहस्य रामायण** : हनुमानजी ने सनत कुमार को सुनाई
6. **भुशुंडी रामायण** : ब्रह्माजी से काकभुशुंडि को सुनाई
7. **अध्यात्म रामायण** : भगवान शिव ने माता पार्वती को सुनाई
8. **अगस्त्य रामायण** : अगस्त्य मुनि द्वारा
9. **लोमश रामायण** : लोमश मुनि द्वारा
10. **मंत्र रामायण** : ऋग्वेद में उल्लेखित
11. **सत्योपाख्यान** : वाल्मीकि ने मार्कंडेय मुनि को सुनाई
12. **योग वशिष्ठ रामायण** : वशिष्ठ मुनि
13. **ब्रह्म रामायण** : ब्रह्माजी ने अपने सुख के लिए लिखी (1 अरब श्लोक)
14. **संव्रत रामायण** : नारद मुनि
15. **मंजुल रामायण** : सूतीक्षण मुनि
16. **सौपद्मा रामायण** : अत्रि मुनि
17. **रामायण महा माला** : भगवान शिव ने माता पार्वती को सुनाई
18. **रामायण मणि रत्न** : ऋषि वशिष्ठ ने अरुंधति को सुनाई
19. **सौहरदा रामायण** : ऋषि शरभंगा
20. **सूर्य रामायण** : भगवान सूर्य ने हनुमानजी को सुनाई
21. **चंद्र रामायण** : भगवान चंद्र
22. **स्वयंभू रामायण** : नारद को भगवान ब्रह्मा ने सुनाई
23. **सुवर्चा रामायण** : सुग्रीव ने तारा को सुनाई
24. **देव रामायण** : भगवान इंद्र ने अपने पुत्र जयंत को सुनाई
25. **श्रवण रामायण** : राजा जनक को भगवान इंद्र ने सुनाई
26. **दुरंत रामायण** : वशिष्ठ मुनि ने राजा जनक को सुनाई
27. **मैदा रामायण** : मैदा ने कौरवों को सुनाई

ये सब असंख्य ऋषि-मुनियों द्वारा लिखी गई **असंख्य रामायणों में से सिर्फ़ कुछ ही हैं : ऋषिभिष्ठत्वदर्शिभी:** - श्रीमद् भागवतम् 9.10.3

इनके उपरांत,

वाल्मीकि मुनि ने स्वयं **1 अरब** रामायणों की रचना की थी।
भगवान शिव और **भगवान ब्रह्मा** अपने स्वयं के **दिव्य आनंद** के लिए
बारंबार **कई रामायणों** की **रचना करते रेहते हैं।**
रामायण सत कोटि अपारा ।।

उसके उपरांत वानरसेना के **प्रत्येक प्रमुख वानर ने**
अपनी स्वयं की **एक रामायण लिखी थी।**

कई अन्य रामायण का विवरण **पद्म पुराण, पुरा कल्प रामायण, भागवत महा पुराण, कालिका पुराण** जैसे अलग अलग पुराणों **में** भी पाया जाता **हैं।**

ये सभी रामायण ईश्वरीय श्रुतियाँ हैं,
इसलिए इन सब को **प्रामाणिक** केह सकते **है,**
और इन सब में जो भी भेद मिलते है वे सब कल्प भेद ही होते है।

इन सबके बाद कलियुग में भी कई संत और कवि हुए हैं,
जिन्होंने अपने **प्रादेशिक भाषाओं में रामायण** लिखी है।
उदाहरण के तौर पर, **श्री रंगनाथ रामायण, कम्बा रामायण, सप्तकंद रामायण, कृत्तिवासी रामायण** और **और भी बहुत सारी।**

इनमें से कई रामायण जो भक्त संतों और महान कवियों द्वारा लिखे गए हैं,
वो या तो दिव्य श्रुति द्वारा या तो परम्पराओं के तहत अत्यंत गहन
रामायण अध्ययन के बाद लिखे गए थे।

जो बाद में **सार्वजनिक दैवीय प्रमाणों** और **लीला प्रमाणों से प्रामाणिक सिद्ध हुए हैं।** तो इनमें से भी कई को हम प्रामाणिक मान सकते है।

सूत्र :

सूत्र : डोर, धागा, लघु कथन

सूत्र शास्त्र वे शास्त्र है जिनमें कुछ ही शब्दों के छोटे छोटे लघु कथनो, यानी की सूत्र वाक्यों से अत्यंत ही गहन सत्य, नियम, दर्शन या शिक्षाएं बताई गई है।

कई सूत्र शास्त्र चार वेदों से आते हैं, और अन्यो को समय, जगह, परिस्थिति, दर्शकगण और आवश्यकताओं के अनुसार लिखा जाता है।

सूत्र शास्त्र मुख्य तीन प्रकार के है,

1. **श्रौत सूत्र (सार्वजनिक) :**
   का पालन कर्तव्यों का पालन करते समय और जन-साधारण के लिए किए गए यज्ञ अनुष्ठान के समय किया जाता है।

2. **गृह्य सूत्र (घर) :** का पालन गृहस्थ जीवन में अनुष्ठान संस्कार जैसे कर्तव्यों का पालन करते समय किया जाता है।

3. **धर्म सूत्र (कानून) :** का पालन धर्म के नियमो के रूप में किया जाता है। धर्म सूत्रों को 2 भाग में वर्गीकृत किया गया है;

   - **स्मृतियां**
   - **उप स्मृतियां**

स्मृति (धर्म सूत्र)

धर्म सूत्र स्मृतियाँ व्यवहार के नियमों के बारे में बताती हैं।
इनमें ज़्यादातर तीन विषय होते हैं :

- **आचार** (उचित आचरण)
- **व्यावहार** (सामाजिक प्रक्रिया)
- **प्रायश्चित** (तपस्या)

इनमे सबसे प्रसिद्ध और
वर्तमान में उपलब्ध स्मृति शास्त्र कुछ इतने हैं :

1. मनु स्मृति
2. याज्ञवल्की स्मृति
3. अत्रि स्मृति
4. विष्णु स्मृति
5. हारीत स्मृति
6. औशनास स्मृति
7. अंगिरा स्मृति
8. यम स्मृति
9. कात्यायन स्मृति
10. बृहस्पति स्मृति
11. पराशर स्मृति
12. व्यास स्मृति
13. दक्ष स्मृति
14. गौतम स्मृति
15. वशिष्ठ स्मृति
16. आपस्तंब स्मृति
17. संवर्त स्मृति
18. शंख स्मृति
19. लिखित स्मृति
20. देवल स्मृति
21. शततप स्मृति

उप स्मृति

1. गोभिल
2. जमदग्नि
3. विश्वामित्र
4. प्रजापति
5. वृद्ध शातातप
6. पैठीनसि
7. आश्वलायन
8. पितामह
9. बौद्धायन
10. भरद्वाज:
11. छागलेय
12. जाबालि
13. च्यवन
14. मरीचि
15. कश्यप...वगैराह

तंत्र शास्त्र :

तंत्र : बुनना, मुख्य (पतंजलि के हिसाब से)

तंत्र शास्त्रों में मानव जीवन की विभिन्न भौतिक और आध्यात्मिक इच्छाओं को प्राप्त करने के लिए अलग अलग **क्षेत्र का ज्ञान, नियम, और आदर्श मार्गदर्शक प्रक्रियाएं** दी गई हैं।

तंत्र शास्त्रों को **तीन भागो में वर्गीकृत किया गया** है,

1. **यमल**
2. **निगम**
3. **आगम**

यमल

यमल : युगल, जुड़वाँ, संयुक्त

यमल तंत्र में **अलग अलग देवताओं और उनकी पत्नियों के बीच हुई गुप्त बातचीत** समाहित है।

यमल साहित्य अलग अलग प्रकार की इच्छाओं को पूरा करने वाले ख़ास देवी-देवताओं का परिचय देकर अलग अलग **तांत्रिक साधनाओं और परंपराओं** के बारे में बताता है।

उनमें से कुछ यमल तंत्र हैं,

1. **रुद्रयमल,**
2. **विष्णुयमल,**
3. **ब्रह्मयमल,**
4. **लक्ष्मीयमल,**
5. **उमायमल,**
6. **स्कन्दयमल,**
7. **आदित्ययमल,**
8. **भैरवयमल आदि।**

निगम

निगम : वो जो ऊपर गया था

निगम शास्त्र **माता पार्वती द्वारा भगवान शिव को बताए गए थे।**

अधिकांश निगम तंत्र में **वैदिक श्लोक** हैं।
इसी कारण से अक्सर **शैव भक्तों द्वारा माना जाता है,** कि **वेद निगमों के अंतर्गत** आते हैं या निगम वेदों का दूसरा नाम है।

आगम

आगम : वो जो नीचे आया था

आगम शास्त्र **भगवान शिव द्वारा माता पार्वती को बताए गए थे।**

आगम शास्त्र प्राथमिक तंत्र साहित्य है जिसमें **कर्म कांड, तंत्र योग और मंत्र योग** का ज्ञान समाहित है।
आगम शास्त्र चार पदों से बने होते हैं।

1. **ज्ञान-पद**
2. **योग-पद**
3. **क्रिया-पद**
4. **चर्या-पद**

आगम की प्रमुख श्रेणियां :

- **वैष्णव आगम** (6000 तंत्र)
  - **पंचरात्र** :
    जो की वैधि और रागानुग दोनों भक्ति सिखाते हैं।
  - **वैखानस** :
    केवल वैभी भक्ति सिखाता है।
    - दिव्य
    - मुनिभाषिता
    - आप्तमनुजप्रोक्त
- **शैव आगम** (10,000 तंत्र) :
  शैव आगम भगवान शिव से देवी, उनसे नंदी, उनसे ब्रह्मा, ब्रह्मा से ऋषियों, और ऋषियों से मनुष्य तक आए है।
  - **शिवगम**
    - कामिका, योगज, करण, अजिता, दीप्त, सूक्ष्म, सहस्त्र, अंशुमन, सुप्रभेद
  - **रुद्रगम**
    - विजय, निश्वास, स्वयंभू, आनल, वीर, राउरव, मुकुट, विमल, चंद्रज्ञान, बिम्बा, प्रोडनित, ललित, सिद्ध, संतान, शारवोक्त, परमेश्वर, किरण, वतुल
- **शाक्त आगम** (1,00,000 तंत्र)
- **सौर आगम** (2000 तंत्र)
- **गणपति आगम** (1000 तंत्र)
- **भैरव आगम** (7000 तंत्र)
- **यक्ष भूतदि साधना** (2000 तंत्र)

(तंत्र संख्या परमानंद तंत्र के अनुसार)

तथा वाराही तंत्र के अनुसार,
सभी देव लोक, ब्रह्म लोक, भुलोक और पाताल लोक के श्लोकों को जोड़ कर तंत्र **शास्त्रों में श्लोकों की संख्या 9,00,000** है।

और **भारतवर्ष में केवल 1,00,000 ही उपलब्ध हैं।**

न्याय :
जो की आचार्य, द्रष्टा, ऋषि या विद्यालय के अनुसार बदलता है।

न्याय में दर्शन शास्त्र आते हैं।
दर्शन का अर्थ है '**देखने** और **समजने का तरीका**'।

सड़क पर चलने वाली एक सुंदर महिला को एक पिता द्वारा शादी के लिए तैयार पुत्री के रूप में देखा जाता है, एक चोर द्वारा चोरी की वस्तु, एक बाघ द्वारा भोजन की वस्तु और एक संत उसे एक आत्मा के रूप में देखते है; जिसे इस भौतिक दुनिया से मुक्त करने की आवश्यकता है।

एक ही वस्तु को अलग-अलग लोग अलग-अलग तरह से देखते या मेहसूस करते हैं। उसी तरह, न्याय में वास्तविकता और अस्तित्व को अलग अलग तरह से देखा और माना जाता है।

न्याय में मुख्य दो प्रकार के दर्शन होते हैं:

1. **आस्तिक दर्शन**
2. **नास्तिक दर्शन**

नास्तिक दर्शन :

नास्तिक दर्शन **वेदों और ईश्वर की सर्वोच्चता** को **स्वीकार नहीं करते** हैं।

वे या तो सम्पूर्ण अस्तित्व को **ईश्वरविहीन या शून्य** के रूप में लेते हैं,
या वे ईश्वर की वैदिक व्याख्या को गलत या अपूर्ण मानते हैं।

परंतु ये भी जान लीजिए की
नास्तिक दर्शन का होना भी **आवश्यक** है।
क्योंकि सनातन धर्म में उन लोगों के लिए भी जगह है जो भगवान के प्रभुत्व।
को स्वीकार नहीं करना चाहते हैं परंतु फिर भी समाज में अपने नैतिक भाव
और भले व्यवहार के साथ समाज में योगदान देकर अच्छे से रेहते है।

आधुनिक समय के लोग नास्तिकता का नाम लेके अपने नैतिक मूल्यों और
आदर्श आचरण से दूर भागके स्वयं को ही मूर्ख बनाते हैं। ये सब उन्हें इन
दर्शन शास्त्रों की शिक्षा न देने का परिणाम है। अगर सही तरीके से
ज्ञान दिया जाए तो नास्तिकता भी समाज में योगदान ही देगी।

चार प्रमुख **नास्तिक दर्शन हैं...**

1. **बौद्ध दर्शन**
2. **जैन दर्शन**
3. **चार्वाक दर्शन**
4. **आजिवक दर्शन**

आस्तिक दर्शन :

आस्तिक दर्शन **वेदों और ईश्वर के प्रभुत्व को स्वीकार करते हैं**, परंतु उन्हें समजने और प्राप्त करने के तरीके अलग अलग होते हैं। छह ऋषियों के नेतृत्व में **छह आस्तिक दर्शन शास्त्र** हैं :

1. **वेदांत सूत्र :** उत्तर मीमांसा : **व्यास देव**
    - **तीन विषय वस्तुओं** के संबंध में सम्पूर्ण अस्तित्व को **समजाता है** :
        - **सम्बंध**
        - **अभिधेय**
        - **प्रयोजन**

2. **कर्म मीमांसा :** पूर्व मीमांसा : **जैमिनी ऋषि**
    - **कर्म और वेदों** को सर्वोच्च सत्य मानता है।

3. **न्याय सूत्र : गौतम ऋषि**
    - **दो** प्रमुख **विद्याओं** को पढ़ाता है,
        - **तर्क विद्या** : वाद-विवाद का विज्ञान
        - **वाद विद्या** : चर्चा का विज्ञान

4. **वैशेषिक सूत्र :** नास्तिक झुकाव
    - मुक्ति की प्राप्ति, प्रकृति के **आध्यात्मिक आण्विक स्वभाव (मेटाफिज़िकल एटॉमिक) के ज्ञान** की प्राप्ति से **होती है।**

5. **योग सूत्र : पतंजलि ऋषि**
    - **पतंजलि ऋषि** से नेतृत्वित
    - **अष्टांग योग** को **सर्वोच्च** योग पद्धति के रूप में लेता है।

6. **सांख्य सूत्र :** नास्तिक झुकाव : **कपिल मुनि**
    - **कपिल मुनि** से नेतृत्वित
    - **पुरुष, प्रकृति और जीव** को प्राथमिक विषय लेकर अस्तित्व को समजाता है।

शास्त्रों के बाद के स्रोत :

1. **खगोल विज्ञान** : आर्यभट्ट : आर्यभट्टियम
2. **ज्योतिष** : वराहमिहिर : पंचसिद्धांतिका, बृहत होरा शास्त्र
3. **शल्य चिकित्सा** : चरक और सुश्रुत : संहिताएं
4. **एनाटॉमी** : पतंजलि : योगसूत्र
5. **योग** : पतंजलि : योगसूत्र

वेद और उपनिषदों में भी योग शास्त्र आते हैं। याज्ञवल्क्य, वशिष्ठ और पतंजलि ने बाद में इसे अष्टांग विज्ञान के रूप में संकलित किया। योगी याज्ञवल्क्य और वशिष्ठ पतंजलि से ज़्यादा पुराने हैं।

6. **अर्थशास्त्र** : चाणक्य
7. **परमाणु सिद्धांत** : ऋषि कणाद : कणाद सूत्र
9. **वायु गतिकी** : मायासुर : वास्तु दर्पण
11. **व्याकरण** : पाणिनि : व्याकरण दीपिका
12. **नाट्यशास्त्र** : भरतमुनि : नाट्यशास्त्र
14. **नाटक लेखन** : कालिदास : मेघधूतम, रघुवंशम, कुमार संभव आदि।
15. **गणित** : भास्कर II : लीलावती
16. **युद्धकला** : परशुराम : कलारीपयतु, सुलबा सूत्र
17. **कथाएँ** : विष्णु शर्मा : पंचतंत्र
18. **राजनीति** : चाणक्य : नितीशराष्ट्र
19. **अद्वैत** : आदि शंकराचार्य : भाष्य, पंचदशी, विवेक चूड़ामणि
20. **रस-विधा** : नागार्जुन : प्रग्नापरमिता सूत्र
21. **औषधि** : चरक : चरक संहिता
22. **मानव इच्छाएँ** : वात्स्यान : कामसूत्र

हालांकि सुप्रसिद्ध कामसूत्र केवल सेक्सुअल एनाटॉमी के बारे में नहीं है। इसका प्राथमिक विषय मनुष्यों की इच्छाएं हैं, जिसमें धर्म और सामाजिक नितियों के प्रति सच्चे रेहते हुए जीवन से सर्वोत्तम सुख प्राप्त करने के आदर्श तरीके बताएँ हैं। उनके संकलन में दत्तक, बभ्रव्य, सुवर्णनाभ वगैराह के पेहले के ज्ञान भी सम्मिलित हैं।

शास्त्रों का अध्ययन क्यों करें?
शास्त्रों का अध्ययन करने की क्या ही आवश्यकता है?

सच कहु तो,
जब तक वेदों को पढ़ना या पढ़ाना आपके कर्तव्य में नहीं आता,
तब तक **वेदों का अध्ययन करने की आपको कोई आवश्यकता नहीं है**।
और आसान भी नहि है, क्यूँकि उसके लिए आपको जीवन का अच्छा ख़ासा समय सिर्फ़ साधना, अध्ययन और पठन में लगाना होगा। जो की अपने और कर्तव्यों का पालन करने के साथ करना लगभग से नामुमकिन है।

हालाँकि, **आवश्यक ये है की हमें** हमेशा एक ऐसे **गुरु के मार्गदर्शन में** होना चाहिए **जो शास्त्रों के ज्ञान को समज**ते और लागू करते हो। **और उनके** निरंतर **मार्गदर्शन में**, आपको जो **कर्तव्य** दिए गए हैं, उनका **पालन करना चाहिए**।

अगर लोग पढ़ने का प्रयास भी करेंगे तो अधिकांश लोगों को वेद और **वैदिक ज्ञान** अत्यंत उबाऊ लगेगा। और यदि वे फिर भी उसे सीखने के इच्छुक हैं, तो भी सीखने के उचित तरीक़े का पालन करना **अत्यंत ही कठिन है।**

और उस **उचित तरीके का पालन किए बिना,**
व्यक्ति शास्त्रों को गलत समझने लगेगा। फिर या तो उनका
अध्ययन बंद कर देगा या **गलत ज्ञान फैलाना शुरू कर देगा।**

अब, अगर इन सब के बाद भी यदि कोई उचित विधि से वेदों का अध्ययन करने के लिए तैयार है, तो जो मुख्य प्रश्न ये आता है,

की ...

वेदों का अध्ययन कैसे शुरू करें?

वेदों का अध्ययन करना हमारी पढ़ाई की किताबें पढ़ने जितना सरल नहीं है। वेद केवल पढ़ने के लिए नहीं हैं। उन्हें **पढ़ना, समझना, अनुभव करना** और उनका **आचरण अभ्यास** करना पड़ता है।

शास्त्रों के **मंत्रों** में **अगाढ शक्ति है**। उनमें न केवल जीवन और अस्तित्व का सबसे महत्वपूर्ण ज्ञान होता है, बल्कि भारी से भारी **परिस्थितियों, जीवन और यहां तक कि समय को बदलने की** शक्ति भी होती है।

उन्हीं **मंत्रों के प्रयोग से** प्राचीन **ऋषियों ने वर्षा** करते थे, **देवताओं का आह्वान करते थे**, **दिव्य शस्त्र और** सभी प्रकार के **वरदान प्राप्त करते थे।** परंतु वैदिक मंत्र बंदूक़ की गोलियों की तरह हैं। जो निश्चित रूप से शक्तिशाली हैं, परंतु बिना बंदूक के वे केवल कंकड़ के समान है। वो बंदूक है **तप, साधना; साधु, गुरु और वरिष्ठो का आशीर्वाद, मार्गदर्शन;** और अंत में शुद्ध हृदय से की गई **प्रार्थना।** ये सब आपको एक ही जगह मिल जाएगा। वो है उचित **गुरु शिष्य परम्परा** या **गुरुकुल**।

अपनी परंपरा को चुने। फिर वो वैष्णव हो, शैव हो या शाक्त। एक पारंपरिक **आश्रम या मठ खोजें।** वहाँ जाइये और पूछिए कि आप वहां कैसे जुड़ सकते हैं और **गुरु या आचार्य की सेवा** कर सकते हैं। उन्हें अपनी सेवा दीजिए। **फिर** जब वो आपकी सेवा से प्रसन्न हो, तो उन्हें **विनम्रतापूर्वक** आपको **अपने मार्गदर्शन** में लेने **के लिए पूछे**।

फिर अगर वो आपको स्वीकार करते है, तो **उनकी आज्ञाओं का पालन करें।** और अगर वो मना करते है, जिसकी बहुत कम संभावना है, परंतु फिर भी संभव है; अभी भी जैसा वो केहते है उसका पालन करें। हो सकता है कि वे आपको अपना शिष्य स्वीकार न करें, परंतु एक प्रामाणिक गुरु आपको हमेशा बताएंगे कि आपके लिए सबसे अच्छा क्या है। तो उनसे पूछें कि उस मामले में क्या करना है, और फिर वो जो बोलें उसका पालन करें।

यही आदर्श तरीका है।
ऐसे ही वैदिक ज्ञान उचित रूप से प्राप्त किया जा सकता है।

अभी,
यदि किसी कारण से, आप **आदर्श स्थिति में नहीं हैं**, और आप फिर भी इतना समय और प्रयास किए बिना शास्त्रों का अध्ययन करना चाहते हैं तो **मंदिर समुदायों** या **परम्पराओं** को खोजें और शनि रवि को और विशेष त्योहारों के अवसरों पर **साधुओं की सेवा करें।**

उनके **आध्यात्मिक प्रवचन सुनें** और उनसे अपने प्रश्न पूछें। उनसे पूछें कि क्या वे शास्त्रों का अध्ययन करते समय आपका मार्गदर्शन करेंगे?

ज्यादातर मामलों में, यदि आप काफी निष्ठावान हैं, तो वे सहमत होंगे। परंतु एकबर आप उन्हें मार्गदर्शक के रूप में स्वीकार करते हैं, उसके बाद **उनके मार्गदर्शन का** पूर्ण **समर्पण के साथ पालन करें।**

वो **जो केहते है वो करें** और **जिसके लिए वो मना करे वो न करें**। वो जैसी **साधना, जप, तप** करने के लिए कहे वैसा **करें**। अपने गुरु में विश्वास के बिना, भगवान भी आपकी प्रगति करने में आपकी मदद नहीं करेंगे।
अगर आप विफल होते हैं, तो माफ़ी मांगे और फिर से प्रयास करें,
परंतु **अपने गुरु के प्रति पूरी तरह ईमानदार रहें।**

और हम आपको विश्वास देते हैं की **आप प्रगति करेंगे**।

परंतु क्या होगा अगर आप इतना भी नहीं कर सकते!

हम जानते है की 99% लोग ये नहीं कर पाएंगे। चिंता न करें,
उन 99% **लोगों के लिए ही हमने Veducation शुरू किया है**।

यहां आपको सारा **वैदिक विज्ञान, इतिहास, तत्त्व ज्ञान** और **सांस्कृतिक शिक्षा** का अमूल्य ज्ञान **प्राप्त होगा।** बस **जुड़े रहें, सीखें,** और जो भी आप **Veducation से सीखते हैं वो दूसरों को सिखाएं**।

इस तरह हम **इस दिव्य ज्ञान को पूरी दुनिया में फैलाएंगे,**
और वापस लाएंगे हमारी...

सनातन संस्कृति

ऊपर सीखे हुए सभी 10 विषय - आत्मा, परमात्मा (भगवान),
देवता, प्रकृति, योग, धर्म, कर्म, ब्रह्माण्ड, काल और वैदिक शास्त्र
मिलकर बनती है हमारी सनातन संस्कृति।

अभी कुछ सदियों पेहले,
कलयुग में भी,
जब पूरे देश में **हमारी संस्कृति का पालन किया जाता था,**
तो **पूरा देश** इतना **समृद्ध था** कि उस समय भारत आने वाले बड़े बड़े **विदेशी तत्तवदर्शी और इतिहासकारों** के पास भी **भारत की महिमा** को पन्नों में उतारने **के लिए शब्द कम पड़ जाते थे।**

इसी लिए हमारे भारत को कहा जाता था,
'सोने की चिडियां' ('ध गोल्डन बर्ड')

परंतु क्यों?
भारत को सोने की चिड़िया क्यों कहा जाता था?
और अब **भारत सोने की चिड़िया क्यों नहीं रही?**

भारत सोने की चिड़िया था क्योंकि वो **स्वयं ईश्वरके दिए गए मार्ग का अनुसरण करता था।** जो की **सबसे मजबूत आध्यात्मिक नींव पर बनाया गया था।** और अब भारत सोने की चिड़िया नहीं रहा,
क्योंकि मजबूत नींव के बलबूते पर हमने हमारी सभ्यता को बनाया था,
हम उन्ही आध्यात्मिक जड़ों को भूल गए हैं।

उस **मजबूत नींव के बिना,**
उसके ऊपर पर बनी **हर चीज,**
कुछ ही समय में **ढह जाती है।**

जीवन की मूलभूत 4 आवश्यकताएं निःशुल्क थीं :

भोजन :

सुसंस्कृत गृहस्थ परिवार सभी **जरूरतमंद को भोजन उपलब्ध कराते थे।** स्वयं भोजन पाने से पेहले अपने घर में रेहने वाली छिपकली तक को भी खिलाना सिखाया जाता था। घर के बड़े अग्रज **स्वयं भोजन लेने से पेहले** घर के आँगन के पास खड़े होकर जोर से पूछते थे कि क्या **कोई भूखा है**? अगर हाँ, **तो** वो अपना भोजन लेने से पेहले **उसे खाना खिलाते थे।**

शिक्षा :

हर गाँव और शहर में एक या एक से अधिक **गुरुकुल होते थे।** उस समय के ज़्यादातर मंदिरों से गुरुकुल जुड़ा हुआ करता था **जहाँ गाँव के बच्चे प्रामाणिक गुरु से सीखते** और **प्रशिक्षित होते थे। लाखों** छोटे और बड़े **गुरुकुल भारतभर में** बसे हुए थे, जो की संपूर्णतः **निःशुल्क थे।**

न्याय :

अपराध दर (क्राइमरेट) वैसे ही **कम था।** परंतु अगर फिर भी कोई क्राइम होता, तो **न्याय के लिए राजकीय दरवाजे हमेशा खुले रेहते थे** और धर्मपरायण **राजा ऋषियों और बुद्धिमान मंत्रियों के मार्गदर्शन से तुरंत न्याय देते थे।**

चिकित्सा (उपचार - मेडिकल ट्रीटमेंट) :

वैदिक जीवन शैली स्वयं में ही इतनी **स्वस्थ थी** कि बीमारियाँ बहोत ही कम होती थीं। परंतु अगर फिर भी कोई बीमार होता था तो, ब्राह्मण वैद्यों द्वारा **चिकित्सा उपचार निःशुल्क** प्रदान किया जाता **था।**

और हाँ,
ये सुनिश्चित करना क्षत्रिय का कर्तव्य था,
कि ये सब मूलभूत आवश्यकताएँ सभी के लिए निःशुल्क उपलब्ध हो।

वैदिक संस्कृति किसके लिए बनाई गई है?

संपूर्ण **वैदिक संस्कृति जीवात्मा को** सत्य के पास, आनंद के पास, **भगवान के पास लाने के लिए बनाई गई है**, जहां से वो मूलतः है।

ये इस लिए डिजाइन किया गया है जिससे एक **व्यक्ति समाज की सेवा करते हुए**, ज्यादा से ज्यादा गहराई के **आनंद को अनुभवित करते करते** अपनी जन्म जन्मांतर की **आध्यात्मिक यात्रा पर प्रगति** प्राप्त **कर सके।**

वैदिक संस्कृति को कैसे डिजाइन किया गया है?

वैदिक संस्कृति को बनाया गया है **कर्तव्य और कृतज्ञता (Gratitude) को केंद्र में रखते हुए**। जीवन में छोटी से छोटी चीज़ के प्रति अपनी कृतज्ञता को प्रार्थना और आदतों के रूप में व्यक्त करना हमारी दिनचर्या का भाग रहा है।

सुबह जब हम अपनी आँखें खोलते हैं तो सबसे पेहले **देवताओं को धन्यवाद देना** शुरू करते हैं, **अपनी हथेलियों को देखकर** और **प्रार्थना करते हैं 'कराग्रे वसते लक्ष्मी, कारा मध्ये...'**

फिर **धरती माता पर पैर रखने से पेहले उनको प्रणाम करते है** और **प्रार्थना करते हैं 'समुद्रे वसते देवी, पर्वतस्तन...'**

फिर प्रात:काल स्नान के बाद **सूर्य देव, तुलसी, पीपल और इष्ट को अर्घ्य देकर माता-पिता व बड़ों का आशीर्वाद लेते हैं**। एक व्यक्ति को उसके जीवन में उसके आशीर्वादों की लगातार याद दिलाई जाती थी।

जिससे वो अपने आप को **विनम्र**, मन और हृदय को साफ, **आभारी** और **उत्साही** रखता है।

अधिकार एवं जवाबदारियाँ

ऐसी संस्कृति **कर्तव्य और सम्मान केंद्रित मानसिकता** को प्रेरित करती थी।
यह सम्मान समाज में एक-दूसरे के लिए प्रेम और भाईचारा पैदा करता था।

जो की मूल रहस्य था उस उत्साह का, जिससे हर कोई अपने समाज
के लिए अपने कर्तव्यों का पालन करने में माँ से लगा रहता था।
जो की बदले में अपने आप ही सभी के
अधिकारों को संपूर्णतः पूरा करता था,

क्यूँकि यह एक मूलभूत सामाजिक सत्य ये है की,
'किसी और का अधिकार हमारा कर्तव्य,
और हमारा अधिकार किसी और का कर्तव्य होता है।'

यदि मैं आपके और जनसमाज के प्रति **मेरे कर्तव्यों को पूरा करता हूं,**
तो **आपको अपना अधिकार प्राप्त होता है**, और यदि आप मेरे और
जनसमाज के प्रति **अपने कर्तव्यों को पूरा करते हैं, तो मुजे** अपने
हिस्से का **अधिकार प्राप्त होता है**।

और वैसे भी,
वास्तविक सुख दूसरों की सेवा से ही आता है,
क्योंकि आख़िरकार सेवा ही **आत्मा की प्रकृति** है (धर्म अध्याय याद है ना?)

तो हकीकत में,
जीवनभर अपने अधिकारों के लिए लड़ते रहना मूर्खता है।
व्यक्ति को अपने **कर्तव्य** पालन के लिए संघर्ष करना चाहिए।

यही
हमारे जीवन को अर्थ;
हमारे अस्तित्व को प्रतिष्ठा;
और **हमारे हृदय को संतुष्टि देता है।**

तो क्या केहते है आप?

क्या हमें एक साथ मिलकर,
हमारी इस सोने की चिड़िया को वापस लाना चाहिए?

और इस बार इसे भारत की भौगोलिक सीमाओं तक ही सीमित क्यों रखें?
आइए इसे पूरे भारत खंड, माने सम्पूर्ण पृथ्वी के लिए वापस लाते है।

आइये फिर से उस सुवर्णमय समय को वापस लाते है।

परंतु,
वो हम कैसे करेंगे?
कैसे वापस लाएंगे वैसा सुनहरा समय?

उस **सुवर्णमय समय को वापस लाने का रहस्य** इस वेदिक ज्ञान को अपनाने और फैलाने की **हम सब की निष्ठा में छिपा है।** जी हाँ, आप, मैं और हमारे आस-पास के सभी लोग। यदि **हम सभी व्यक्तिगत रूप से** इस दिव्य जीवन शैली पर **कार्य करने का निर्णय लेंगे तो सनातन धर्म का** ये मार्ग, ये स्वर्णिम **भविष्य ना ज्यादा दूर है** और ना ही इतना कठिन।

मैं अकेले इसे वापस नहीं ला सकता।
मैं आपको प्रेरित कर सकता हूं और **आपको रास्ता दिखा सकता हूं।**

परंतु भारत की भाग्यशाली भूमि पर जन्म लेने वाले **सभी लोगों का ये कर्तव्य है** कि वे अपना जीवन स्वयं सफल बनाएं और फिर दूसरों के जीवन को सफल बनाने के लिए कार्य करें।

भारत भूमि ते होइलो मनुष्य जन्म जार।
जन्म सार्थक करि, कर पर उपकार।।
- चैतन्य चरितामृत

तो चलिए,
साथ मिल कर वापस लाते है,
हमारी सोने की चिड़िया को।

यदि आपको लगता है कि,
इस पुस्तक ने आपके जीवन में 1% भी बदलाव लाया है,
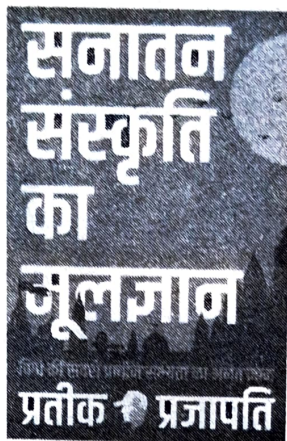
तो कृपया **अभी** नीचे दिये गए **QR को स्कैन करें और**
Amazon पर अपना हृदयपूर्ण **Review दें..**

इससे हमें इस सनातन ज्ञान को और लोगों तक
पहुँचाने में अत्यंत ही सहाय होगी।
और इसे हम आपका हमारे इस मिशन के प्रति एक योगदान समझेंगे।

धन्यवाद

तो, क्या सीखा हमने?

B.O.S.S द्वारा दिए गए 555 प्रश्नो के उत्तर

1. आत्मा का मूलज्ञान : 20

- आत्मज्ञान की शक्ति
- आत्मज्ञान कहाँ से शुरू होता है?
- हम कौन हैं?
- हमारा शरीर क्या है?
- हमारा शरीर किससे बना है?
- 11 इंद्रियां क्या हैं?
- हमारे शरीर का प्राथमिक कार्य क्या है?
- सोचने, समझने, इच्छा करने की क्रिया कौन करता है?
- हमारे शरीर के तत्व
- 2 प्रकार के तत्वों हमारा शरीर बना है
- हम अपने शरीर को कैसे आकार देते हैं?
- हमारे अगले जीवन को कैसे डिजाइन करें?
- अगले जीवन के शरीर के उदाहरण
- ब्रह्मांड में कितने प्रकार की प्रजातियां हैं?
- पद्म पुराण से कुल प्रजातियों की श्रेणियाँ
- प्रजातिया कैसे विभिन्न रूप कैसे लेती हैं?
- जीवन में वास्तव में क्या मायने रखता है?
- क्या तय करेगा कि हमें अगले जन्म में कौन सा शरीर मिलेगा?
- जन्म-मरण के चक्र से कैसे निकले?
- हमारा मूल इटर्नल रूप क्या है?

2. परमात्मा का मूलज्ञान : 26

- ईश्वर कौन है?
- भगवान की परिभाषा
- वेदांत का अर्थ
- भगवान कैसे है?
- भगवान के लक्षण
- भगवान का अर्थ
- भगवान के छह ऐश्वर्य
- ऐश्वर्य हमें कैसे प्रभावित करता है?
- भगवान को कैसे प्रभावित करें?
- भगवान किसे महत्व देते है?
- भगवान के तीन रूप
- परमात्मा का आकार
- हमारा हृदय कैसा होना चाहिए?
- 4 मार्गो से भगवान से आदान-प्रदान
- क्या होगा यदि हम इन चारों में से किसी से भी आदान-प्रदान नहीं कर सकते हैं?
- कितने अवतार होते हैं?
- छह प्रकार के अवतार
- तीन पुरुष अवतार
- 25 लीला अवतार
- तीन गुण अवतार
- चौदह मन्वंतर अवतार
- युग अवतार
- साक्षात अवतार क्या है?
- एक अवेशा अवतार क्या है?
- शक्तिवेश अवतार की शक्तियां
- अवतार के अन्य रूप

3. देवी देवता का मूलज्ञान : 67

- देवी-देवता कौन हैं?
- देवी-देवताओं के लक्षण
- देवी-देवताओं का पद कैसे अर्जित होता?
- देवी-देवताओं की शक्ति कहाँ से आती है?
- देवी-देवता कब बदलते हैं?
- इंद्र के स्थान पर कौन बैठा है?
- इंद्र के स्थान पर अगला कौन बैठेगा?
- सूर्यदेव के स्थान पर कौन बैठा है?
- देवी-देवताओं की स्थिति पूर्ण होने के बाद उनका क्या होता है?
- देवीदेवताओं की जगह कौन ले सकताहै?
- देवी-देवताओं का पद किसका प्रतिनिधित्व करता हैं?
- कितने देवी-देवता है? 33 कोटि या 33 करोड़?
- त्रिदेव और त्रिदेवी
- 3 विष्णु पुरुष
- 24 विष्णु रूप
- 12 सरस्वती
- 8 लक्ष्मी
- 12 गौरी
- 33 प्रमुख देवता

- गण कौन हैं?
- गणों का नेता कौन है?
- 12 आदित्य
- 8 वसु
- 11 रुद्र
- यक्ष और दस्युजनों के देवता कौन हैं?
- अन्य कल्पों के रुद्र
- 2 अश्विनी कुमार
- अश्विनी कुमार के पिता
- 36 तुषित
- 10 विश्वेदेव
- महाभारत के विश्वदेव
- 12 साध्यदेव
- 64 अभास्वर
- 12 यमदेव
- 49 मारुतगण
- मारुतगण कौन हैं?
- 7 मारुत
- मारुतो के 7 आंदोलन क्षेत्र
- मारुत कहाँ रहते हैं?
- मारुत का काम क्या है?
- 220 महाराजिक
- नव ग्रह देवता
- स्टांडर्ड श्रेणी के अन्य देवता
- स्टांडर्ड श्रेणी की अन्य देवियाँ
- स्थानों के देवता
- 9 पितृ
- नक्षत्रों के 12 अधिपति
- 10 दिशाओं के 10 दिग्पाल
- शास्त्रों में अन्य देवताओं की सूची
- कितनी अप्सराएं है?
- निष्कर्ष : देवताओं की संख्या
- कौन सा देवता क्या करता है?
- 14 मन्वंतर के 14 इन्द्र
- ब्रह्मांड की आत्मा कौन है? क्यों?
- यमराज के दो रूप
- देवी देवताओं का संचारक कौन है?
- कामदेव को अनंग क्यों कहा जाता है?
- आधुनिक समय में कार्तिकेय के विश्वव्यापी समुदाय
- देवों के ऋषि कौन हैं?
- वाल्मीकि और व्यास के गुरु कौन हैं?
- देवताओं का दूत कौन है?
- कौन किसका देवता है?
- किसकी पूजा किसके लिए करें ?
- इच्छा अनुसार देवता
- सबसे जल्दी प्रसन्न होने वाले देवता कौन है?
- अगर हम सब कुछ चाहते हैं तो किसकी पूजा करें?
- अगर हमें कुछ नहीं चाहिए तो किसकी पूजा करें?

4. प्रकृति का मूलज्ञान : 28

- प्रकृति क्या है?
- भगवान की 3 ऊर्जा
- आध्यात्मिक दुनिया कैसी है?
- भौतिक संसार कैसा है?
- आध्यात्मिक दुनिया सत चित आनंद क्यों है?
- भौतिक जगत् सत चित आनंद क्यों नहीं है?
- माया क्या है?
- माया का क्या मतलब है
- भगवान ने माया को क्यों बनाया?
- माया क्यों होती है?
- प्रकृति किससे बनी है?
- माया कैसे काम करती है? सिद्धांत..
- माया वास्तव में कैसे काम करती है?
- प्रकृति के तीन रूप
- हम तीन अलग-अलग गुणों को क्यों मेहसूस करते हैं?
- लोग तीन गुणों से कैसे प्रभावित होते हैं?
- क्या होता है जब हम माया में आनंद लेने का प्रयास करते हैं?
- भ्रामक संघर्ष
- चार न टाले जाने वाले दुख
- लगातार मिलने वाले तीन दुख
- माया क्यों काम करती है?
- छह अनर्थ
- क्या माया हमारे लिए इतनी बुरी है?
- माया देवी कौन है?
- माया आध्यात्मिक दुनिया की रक्षा कैसे करती है?
- प्रकृति क्यों है?
- भौतिक अस्तित्व का उद्देश्य
- माया के प्रभाव से हम कब मुक्त होते हैं?

5. योग का मूलज्ञान : 65

- योग क्या है?
- योग क्या नहीं है?
- योग की पांच प्रणालियां
- योग का अभ्यास करने के लिए पाँच आवश्यकताएँ
- अष्टांग (हठ) योग क्या है?
- अष्टांग योग के आठ अंग
- 10 यम:
- अहिंसा कैसे करें?
- सत्या का पालन कैसे करें?
- अस्तेय का पालन कैसे करें?
- ब्रह्मचर्य का पालन कैसे करें?
- क्षमा कैसे करें?
- धृति कैसे करें?
- दया कैसे करें?
- अर्जवा कैसे करें?
- मिताहारा कैसे करें?
- सौच कैसे करें?
- 10 नियम:
- तप कैसे करें?
- संतोष कैसे रखे?
- आस्तिक्य कैसे बने?
- दान कैसे करें?
- मति कैसे करें?
- ईश्वरपूजन कैसे करें?
- सिद्धांत श्रवण कैसे करें?
- ह्री कैसे करें?
- जप कैसे करें?
- हुत कैसे करें?
- सम्यम क्या है?
- आसन क्या है?
- आसनों को किसने प्रकट किया?
- कुल कितने आसन?
- कितने पूर्व-प्रतिष्ठित आसन है?
- भौतिक जगत में कितने आसन उपयोगी हैं?
- कितने आसन आवश्यक हैं?
- प्राणायाम क्या है?
- प्राणायाम किससे बनता है?
- प्राणायाम के कई तरीके
- प्राणायाम तकनीक
- प्रत्याहार क्या है?
- प्रत्याहार कैसे किया जाता है?
- धारणा क्या है?
- धारणा की वस्तु को क्या कहते हैं?
- धारणा कैसे कि जाती है?
- ध्यान का प्रारंभिक चरण क्या है?
- ध्यान क्या है?
- ध्यान की प्रक्रिया?
- ध्यान और धारणा में अंतर?
- ध्यान योग क्या है?
- समाधि क्या है?
- समाधि में क्या होता है?
- समाधि के तीन प्रकार
- कर्म योग क्या है?
- कर्म के 3 प्रकार
- कर्म क्या है?
- विकर्म क्या है?
- अकर्म क्या है?
- कर्म और विकर्म किसके कारण होते हैं? कैसे?
- कर्म के अनंत चक्र का समाधान क्या है?
- अकर्म हमें क्यों नहीं बांधते?
- ज्ञान योग क्या है?
- सभी दर्शन शास्त्र किस योग प्रणाली पर बने हैं?
- भक्ति योग क्या है?
- योगिक उन्नति के स्तर
- सभी योग प्रक्रियाओं का अंतिम लक्ष्य क्या है?

. धर्म की मूलज्ञान : 63

- धम क्या ह?
- धर्म क्या नहीं है?
- क्या रिलिजन का मतलब धर्म है?
- धर्म का क्या अर्थ है?
- धर्म क्यों नहीं बदला जा सकता?
- जीव का धर्म क्या है?
- आत्मा का स्वरूप क्या है?
- सेवा की चार प्रेरणाएँ
- आत्मा का परम सनातन धर्म क्या है?
- प्रेम क्या है?
- भौतिक संसार में प्रेम करना क्यों संभव नहीं है?
- हमारी इटर्नल आवश्यकता क्या है?
- हम भौतिक अस्तित्व के कुंड में कैसे गिरते हैं?

- सभी सामाजिक समस्याओं का एक समाधान क्या है?
- धर्म का पालन करने पर क्या होता हैं?
- कर्तव्य के रूप में धर्म
- भगवान ने धर्म की रचना क्यों की है?
- धर्म का उद्देश्य क्या है?
- धर्म के दो अंग
- शुद्ध/आत्मा/नित्य धर्म क्या है?
- गौन / नैमित्तिक धर्म क्या है?
- साधरण धर्म क्या है?
- मानसिक धर्म क्या है?
- शारीरिक धर्म क्या है?
- युग धर्म क्या है?
- चार युगों के युग धर्म क्या हैं?
- अपद धर्म क्या है?
- वर्णाश्रम धर्म क्या है?
- चार वर्ण क्या हैं?
- चार आश्रम कौन से हैं?
- वर्ण धर्म क्या है?
- वर्ण कैसे विभाजित है?
- ब्राह्मण कौन है?
- ब्राह्मण के प्राकृतिक गुण क्या हैं?
- ब्राह्मण के कर्तव्य क्या हैं?
- क्षत्रिय कौन है?
- 5 कमजोर अबला
- वैश्य कौन है?
- वैश्य के प्राकृतिक गुण क्या हैं?
- वैश्य के कर्तव्य क्या हैं?
- क्षुद्र कौन है?
- क्षुद्र के प्राकृतिक गुण क्या हैं?
- क्षुद्र के कर्तव्य क्या हैं?
- अंत्यज कौन है?
- अंत्यज के गुण क्या हैं?
- चारों वर्णों के सामान्य कर्तव्य
- आश्रम धर्म क्या है?
- आश्रम प्रणाली क्यों डिजाइन की है?
- ब्रह्मचारी का क्या मतलब है?
- क्या होता है ब्रह्मचारी आश्रम में?
- क्या होता है ब्रह्मचारी आश्रम में?
- गृहस्थ का क्या अर्थ है?
- गृहस्थ आश्रम में क्या होता है?
- गृहमेधी किसे कहते हैं?
- कब विवाह नहीं करना चाहिए?
- वानप्रस्थ का क्या मतलब है?
- वानप्रस्थ आश्रम में क्या होता है?
- सन्यास का क्या मतलब है?
- संन्यास आश्रम में क्या होता है?
- वर्ण और आश्रमका सम्बंध
- कलियुग में सन्यास क्यों वर्जित है?
- कलियुग में संन्यास के स्थान पर शास्त्र क्या सुझाता है?

7. कर्म का मूलज्ञान : 24

- कर्म क्या है?
- कर्म के दो मुख्य अर्थ
- कार्य के रूप में कर्म
- कर्म के दो स्वरूप
- पुण्य कर्म क्या है?
- पाप कर्म क्या है?
- कर्म का द्वंद क्या है?
- अनिवार्य कर्तव्यों के रूप में कर्म
- दो प्रकार के कर्म
- लौकिक कर्म क्या है?
- अलोकिक कर्म क्या है?
- लौकिक कर्म की 5 श्रेणियां
- नित्य कर्म क्या है?
- नैमित्तिका कर्म क्या है?
- 16 संस्कार
- 6 पितृ कर्म
- अन्य नैमित्तिक कर्म
- काम्या कर्म क्या है?
- प्रायश्चित कर्म क्या है?
- प्रायश्चित कर्म का उद्देश्य
- सच्चा प्रायश्चित कब प्राप्त होता है?
- निष्काम कर्म क्या है?
- निसिद्ध कर्म क्या है?
- अन्य प्रकार के कर्म

8. ब्रह्मांड का मूलज्ञान : 80

- संकल्प मंत्र क्या है?
- वैदिक ब्रह्मांड विज्ञान की मूल बातें
- हम कुल भौतिक अस्तित्व का कितना हिस्सा अनुभव कर सकते हैं?
- डायमेंशनल सीमाओं को पार करने के दो तरीके।
- अस्तित्व की प्रकृति क्या है?

- भारतवर्ष क्या है?
- भारतवर्ष के 9 खंड
- जम्बूद्वीप
- जम्बूद्वीप के 9 वर्ष
- जम्बूद्वीप पर भारतवर्ष कहाँ है?
- अन्य 8 वर्षा में कौन रहता है?
- 9वर्षों के अधिष्ठाता देवता
- 8 आकाशीय पर्वत 9 वर्षा को अलग करते हैं
- सुमेरु : स्वर्ण पर्वत
- सार्वभौमिक दिशाओं की गणना कैसे की जाती है?
- स्वर्ग का मार्ग क्या है?
- ब्रह्मपुरी कहाँ है?
- अस्ता दिक्पालस के 8 शहर
- 7 संकेंद्रित द्वीप
- 7 संकेंद्रित महासागर
- 7 कन्सेन्ट्रिक महासागर
- गरुड़ देव कहाँ रहते हैं?
- निम लोका कहाँ है?
- देव लोक कहाँ है?
- हुमांडल की त्रिज्या क्या है?
- मानवमंडल की संरचना
- 6 ऊपरी लोक
- 9 ग्रह की स्थिति
- भारतवर्ष में क्या खास है ?
- कर्म भूमि कहाँ है?
- कर्मभूमि के सिवाय और कौन से स्थान हैं
- भारतवर्ष के बाहर के स्थानों में कौन सा युग चलता है?
- 7 निचले लोक
- बाली महाराज के महल के दरवाजों पर कौन पेहरा देता है?
- मंदोदरी के पिता कौन हैं?
- नाग कहाँ रहते हैं?
- दानव कहाँ रहते हैं?
- नागों का नेता कौन है?
- नरका कहाँ है?
- कितने नरक?
- 28 नरकों के नाम
- पितृसत्ता का मुखिया कौन होता है?
- 14 लोकों की पूरी सृष्टि कहाँ स्थित है?
- अनंत शेष कहाँ विश्राम करते है?
- कूर्मा कहाँ तैर रहा है?
- गर्भोदक समुद्र का जल किसने भरा?
- ब्रह्माण्ड के 7 तात्विक आवरण
- ब्रह्माण्ड का आकार
- आप इस ब्रह्मांड में क्या कर रहे हैं?
- मल्टीवर्स
- लाखों ब्रह्माण्ड कहाँ तैरते हैं?
- अन्य ब्रह्माण्डों के आकार
- ब्रह्मा के सिरों की विभिन्न संख्या
- द्वारिका लीला
- सभी ब्रह्माण्ड कहाँ से आते हैं?
- करणों दक्षयी विष्णु
- भौतिक और आध्यात्मिक अस्तित्व का आकार
- भौतिक और आध्यात्मिक अस्तित्व का आकार
- आध्यात्मिक दुनिया कहाँ से शुरू होती है?
- ब्रह्म ज्योति
- ब्रह्म ज्योति में मोक्ष किसे मिलता है?
- नित्य कैलाश
- अयोध्या : साकेत लोका
- वैकुंठ लोक
- द्वारिका धाम
- मथुरा धाम
- गोलोक वृंदावन धाम
- मधुरा धाम
- भगवान के साथ संबंधों के प्रकार
- पूतना अब कौन है?
- एक आत्मा का परम सुख क्या है?
- आध्यात्मिक दुनिया कैसी है?
- वैकुंठ का अर्थ
- कुंठ जगत क्या है?
- आध्यात्मिक दुनिया की सुंदरता
- कल्प तरु
- हमारा इटर्नल घर कैसा है?
- ऐसा कौन सा अनुभव है जिसकी तलाश हर आत्मा कर रही है?
- हम असंतुष्ट क्यों रहते हैं?
- भौतिक जगत में हमारी आंखें कौन खोलता है?
- हम भौतिक दुनिया में कैसे पहुंचे?
- भगवान के पास वापस कैसे जाएं?

9. समय का मूलज्ञान : 52

- समय क्या है?
- उसे काल क्यों कहा जाता है?
- दोनों दुनियाओं में समय का सामान्य कार्य
- समय की नॉन लीनियर प्रकृति
- समय की चक्रीय प्रकृति
- समय का क्वांटम स्तर पर वैदिक माप
- चौघड़िया क्या है?
- चौघड़ियें के भगवान
- चौघड़ियें के दिन
- चौघड़ियें के हिसाब से कार्य
- 7 सप्ताह के दिन और उनसे जुड़े ग्रह
- सूर्य सिद्धांत समय गणना
- वैदिक समय गणना
- यह पक्ष क्या है?
- दो प्रकार के पक्ष
- शुक्ल पक्ष के नाम
- कृष्ण पक्ष
- शुक्ल और कृष्ण पक्ष में दिन
- सूर्य सिद्धांत समय गणना
- वैदिक समय गणना
- 12 महीने
- 6 ऋतु
- 60 संवत्सर
- 3 त्रिदेवों की जवाबदारियां
- 4 युग अवधि
- कैसा था सतयुग
- कैसा था द्वापरयुग
- कैसा था त्रेतायुग
- कलियुग कैसा था
- 14 मन्वंतर
- कल्पभेद क्या है?
- क्या हम इसकी तुलना मल्टीवर्स थ्योरी से कर सकते हैं?
- किस कल्प में नारद और 4 कुमारों का जन्म हुआ था?
- वर्तमान कल्प का नाम क्या है ?
- किस मन्वंतर में कौन सा अवतार आया?
- हम किस मन्वंतर में रेहते हैं?
- हम किस महायुग में जी रहे हैं?
- ब्रह्मा का जीवनकाल कितना होता है?
- हमारे ब्रह्मांड का जीवन काल क्या है?
- प्रलय क्या है?
- समय को काल क्यों कहते हैं?
- 5 प्रकार के प्रलय
- नित्य प्रलय क्या है?
- महायुग प्रलय क्या है?
- नैमित्तिला प्रलय क्या है?
- प्रकृति प्रलय क्या है?
- आत्यंतिका प्रलय क्या है?
- काल की उत्पत्ति क्यों हुई?
- समय की प्रकृति
- 4 स्टेप पैटर्न परिवर्तन
- आध्यात्मिक दुनिया में काल कैसे काम करता है?
- संकल्प मंत्र को समझना
- हम इस समय कहाँ हैं?

10. वैदिक शास्त्रों का मूलज्ञान : 120

- वैदिक शास्त्र क्या हैं?
- वे क्यों होते हैं?
- वेद कितने साल के हैं?
- वेदों की रचना किसने की?
- वैदिक ज्ञान का प्रसार कैसे हुआ?
- वेदों को कैसे कंठस्थ किया गया?
- ऋषियों ने वेदों को कम्पाइल करने का निर्णय क्यों लिया?
- वेदों का संकलन किसने किया?
- वैदिक साहित्य का वृक्ष
- वैदिक साहित्य की संरचना
- वेदों में दो प्रकार के ज्ञान
- वैदिक शास्त्रों की तीन श्रेणियां
- श्रुति क्या है?
- ब्रह्मांड में वेदों का प्रवेश कब हुआ?
- वेदों को सबसे पहले किसने सुना?
- श्रुति की 3 सामग्री
- वेदांग क्या हैं?
- 6 वेदांग
- वेद क्या है?
- 4 वेद
- वेदों के 4 विभाजन
- ऋग्वेद के बारे में
- ऋग्वेद का संकलन किसने किया?
- यजुर्वेद के बारे में
- यजुर्वेद का संकलन किसने किया?
- यजुर्वेद के दो भाग

- सामवेद के बारे में
- सामवेद का संकलन किसने किया?
- सामवेद के दो भाग
- अथर्ववेद के बारे में
- अथर्ववेद का संकलन किसने किया?
- अथर्ववेद में सर्वोच्च देवता कौन है?
- उपवेद क्या हैं?
- 5 उपवेद और उनके संबंधित वेद
- आयुर्वेद के 8 घटक
- स्मृति क्या है?
- स्मृति किसके अनुसार बदलती है?
- स्मृति शास्त्रों की 4 सामग्री
- पुराण क्या है?
- पुराणों के 5 लक्षण
- पुराणों की 5 अतिरिक्त विशेषताएं
- प्रारंभ में कितने पुराण थे?
- महापुराण में पहले कितने श्लोक थे?
- मनुष्यों के लिए पुराणों में कितने श्लोक हैं?
- पुराणों का विभाजन किसने किया?
- पुराणों की सामग्री क्या है?
- क्या होता है जब हम बिना उचित मार्गदर्शन के पुराणों का अध्ययन करते हैं?
- पुराणों में दो प्रकार के भेद
- पुराणों और कल्पों वर्णन
- सभी पुराणों में सर्वोच्च भगवान क्यों बदलते हैं?
- गुण के अनुसार पुराणों की 3 श्रेणियां
- एक श्लोक में 18 महापुराण के नाम
- 18 उपपुराण
- अन्य उपपुराण
- 11 अति पुराण या पशुपति पुराण
- इतिहास क्या है?
- दो प्रमुख इतिहास
- महाभारत के बारे में
- महाभारत किसने सुनाया?
- महाभारत किसने लिखा था?
- महाभारत की महानता
- महाभारत की सामग्री क्या है?
- महाभारत में श्रीमद् भगवद् गीता कहाँ है?
- महाभारत में कितने श्लोक हैं?
- महाभारत के 18 पर्व
- महाभारत में रामायण
- महाभारत के दो जोड़े गए लेखक
- रामायण के बारे में
- रामायण सबसे पहले किसने सुनाई?
- रामायण में मूल रूप से कितने श्लोक थे?
- रामायण कितनी बार हुई?
- हाल ही में रामायण कब हुई थी?
- रामायण किसने लिखी थी?
- रामायण कितने प्रकार की होती है?
- कई प्रमुख प्राचीन रामायणों में से 27 रामायण
- वाल्मीकि मुनि ने कितनी रामायण की रचना की?
- ब्रह्मा और भगवान शिव की रामायण
- वानरसेना की रामायण
- अन्य रामायण
- क्षेत्रीय रामायण
- सूत्र क्या हैं?
- 3 सूत्र शास्त्र
- धर्म सूत्र
- धर्म सूत्र के 4 विषय
- 21 उपलब्ध धर्म स्मृतियाँ
- 15 उप स्मृति
- तंत्र क्या है?
- तंत्र शास्त्र की सामग्री
- तंत्र की तीन श्रेणियां
- यमल क्या है?
- यमल की सामग्री
- यमल शास्त्र में से कुछ कोनसे हैं?
- निगम क्या है?
- निगम को किसने बताया?
- निगमों की सामग्री
- अगम क्या है?
- अगम को किसने बताया?
- अगमों की सामग्री
- अगमों के चार पद
- अगमों की श्रेणियाँ
- वैष्णव अगम
- शैव अगम
- अन्य अगम
- अगम शास्त्रों में कितने श्लोक हैं?
- न्याय क्या है?
- न्याय शास्त्र किसके अनुसार बदलता है?
- न्याय शास्त्रों की सामग्री
- 2 प्रकार के दर्शन
- नास्तिक दर्शन क्या है?
- 4 प्रमुख नास्तिक दर्शन
- आस्तिक दर्शन क्या है?

- 6 आस्तिक दर्शन शास्त्र
- 6 आस्तिक दर्शन शास्त्रों का नेतृत्व करने वाले ऋषि
- शास्त्रों के बाद के स्रोत
- कामसूत्र वास्तव में किस बारे में है?
- शास्त्रों का अध्ययन क्यों करें?
- शास्त्रों का अध्ययन करने की क्या आवश्यकता है?
- शास्त्रों का अध्ययन कैसे शुरू करें?
- वर्तमान समय में वेदों का अध्ययन करने के लिए 3 दृष्टिकोण
- 99% लोगों के लिए सही दृष्टिकोण

11. सनातन संस्कृति का मूलज्ञान : 10

- सनातन संस्कृति क्या है?
- भारत सोने की चिड़िया क्यों था?
- भारत अब सोने की चिड़िया क्यों नहीं है?
- वैदिक काल में 4 निःशुल्क मूलभूत आवश्यकताएं
- वैदिक संस्कृति किसके लिए बनाई गई है?
- वैदिक संस्कृति को कैसे डिजाइन किया गया है?
- अधिकार एवं उत्तरदायित्व
- हम स्वर्णिम समय कैसे वापस लाएंगे ?
- शुरू करने के लिए सबसे सरल कदम (होमवर्क)
- **Veducation की आने वाली किताबें**

तो अब,

इस B.O.S.S पुस्तक से सनातन संस्कृति का मूलज्ञान तो ले लिया,

परंतु इस **सनातन संस्कृति को** अपने **जीवन में कैसे उतारे?**

यह आप सीखोगे हमारी पुस्तक '**वैदिक दिनचर्या**' में,
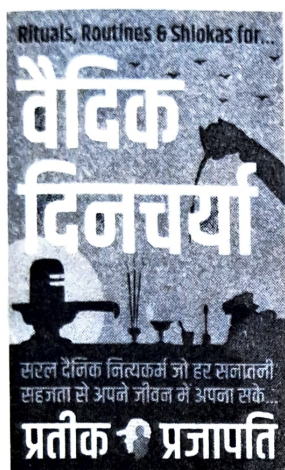
क्या सीखोगे आप इस पुस्तक में?

धर्म शास्त्र + **ज्योतिष शास्त्र** + **आयुर्वेद शास्त्र** और आज की मॉडर्न जीवनशैली को ध्यान में रखकर बनाया गया **दैनिक नित्यक्रम** जो हर सनातनी सरलता से अपना सके।

1. प्रभातचर्या

1. ब्रह्म मुहूर्त
2. कर दर्शन
3. पाद स्पर्श
4. उषापान
5. शौचक्रिया
6. दंत धावन
7. जिह्वा निर्लेखनम
8. कवल गण्डूष
9. स्नान

2. साधनाचर्या

1. शिखा बंधन
2. तिलक
3. आचमन शुद्धि
4. सूर्य अर्घ्य
5. तुलसी प्रणाम
6. पूजा
7. जप
8. पठन
9. व्यायाम
10. प्राणायाम
11. वस्त्र धारण

3. दिनचर्या

1. भोग अर्पण
2. प्रसाद ग्रहण
3. हरि स्मरण
4. संकीर्तन
5. धर्म पालन (नियम पालन)

4. रात्रिचर्या

1. शयन नियम
2. पूर्व शयन
3. कथा पठन
4. वंदन

5. श्लोक संग्रह

1. संपूर्ण दिनचर्या श्लोक
2. पूजन वंदन श्लोक
3. स्वास्थ्य श्लोक

इस वैदिक दिनचर्या का पालन करने से,

आपका **शरीर दीर्घायु** और **बुद्धि निर्मल** होकर चेहरे पर **ब्रह्मचर्य का तेज** साफ़ दिखने लगेगा और विकट परिस्थिति में **मन शांत** और **अभय** रहेगा। जीवन में इतना प्रशासन आएगा की **किसी मोटिवेशन की ज़रूरत नहीं पड़ेगी।**

तो अपना '**वैदिक दिनचर्या**' पुस्तक आज ही पाएँ,
अभी नीचे के इन QR को स्कैन करके अपनी प्रति लें और पढ़ें।
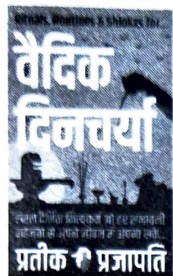
या फिर हमारी वेबसाइट से पाएँ, **www.veducation.world**

Veducation की आने वाली किताबें

हनुमंतायाण :

संपूर्ण हनुमान इतिहास एक ग्रंथ में...
हनुमानजी के पूर्वजों से लेकर उनके अवतार, जन्म, जीवन
और स्थान का संपूर्ण रहस्यमयी इतिहास एक ग्रंथ में।

पक्व शास्त्र :

108 Laws for Ultimate Maturity
जो आपको और आपकी दुनिया को देखने के तरीक़े को
संपूर्ण रूप से बदलकर आपको अपने जीवन को
समझने और उसे हल करने में सहाय करेंगे।

पूर्व गीता (Pre-Gita) :

भगवद गीता पढ़ने से पहले **पूर्व गीता पढ़ें और**
आप एकदम सरलता से **पूरी गीता समझ पाएंगे।**

ब्रह्मचर्य :

The ultimate Action book for Brahmacharya
नशा, जुआ, पोर्न और हस्तमैथुन जैसी सभी प्रकार की बुरी
आदतों से छुटकारा पाने और एकदम High Quality
जीवन जीने के लिए Ultimate Action Book.

पौरूष शास्त्र :

एक श्रेष्ठ पुरुष क्या, क्यों और कैसा होता है!
वो सब जो एक पुरुष को अपना Best Version बनने
मेंऔर जीवन के सभी क्षेत्रों में जीत हासिल करने
के लिए जानना आवश्यक है।

रहस्य रामायण :

हमारी रामायण, परंतु ऐसे अज्ञात रहस्यों और डिटेल्स
के साथ जिसे आपने कभी पढ़ी या सुना नहीं होगा।

Veducation से जुड़ें

आगामी पुस्तकों, लेक्चर्स और सेमिनार्स के बारे में
अधिक अपडेट प्राप्त करने के लिए, हमारे साथ जुड़ें

Instagram : Veducationn
Facebook : Veducation

हमारे वीडियो लेक्चर्स देखें
Youtube: Veducation

हमारे पॉडकास्ट सुनें
Spotify, Apple, Google: Veducation

Business और collaboration संबंधी प्रश्नों के लिए,
Email: pr.veducation@gmail.com

सब कुछ एक जगह,
Website: www.veducation.world

लेखक के बारे में...

कौन?

Tall guy with taller tales

प्रतीक प्रजापति का जन्म और पालन गुजरात, भारत के एक छोटे से गाँव में हुआ था। उन्होंने अपने इंजीनियरिंग की पढ़ाई के चार वर्ष वैश्विक-सभ्यताओं और सामुदायिक मनोविज्ञान (कलेक्टिव साइकोलॉजी) पर रीसर्च करने में व्यतीत किये। जिसके दौरांत उनको प्राचीन वेदिक ज्ञान के बारे में पता चला और अगले 7 साल उनका अध्ययन करने में बिताए।

क्या?

A problem well-found is a problem half solved.

जब वे उन प्राचीन वेदिक ग्रंथों पर रीसर्च कर रहे थे, उसके साथ साथ उन्होंने भारत की सेंकडो जनजातियों, आश्रमों, संस्कृतियों और घटनाओं की यात्रा की; जो उनके जीवन के लिए एक महत्वपूर्ण मानवशास्त्र (ऐंथ्रोपोलॉजिकल) अध्ययन बन गया। यहां उन्होंने सीखा कि सभी वर्तमान सभ्यताओ की समस्याओं का समाधान हमारे वैदिक शास्त्रों में छिपा है। उसी दिन से उन्होंने इस वैदिक ज्ञान को पूरी दुनिया में फैलाने को अपना ध्येय बना लिया। जिसके भागरूप, उन्होंने शुरू किया Veducation.

कैसे?

Solving the Unsolved by seeing the unseen.

दुनिया में कुछ भी महान बनाने के रहस्य उन मूलभूत सिद्धांतों में छुपे हुए होते है जिन पर उसे बनाया गया है। वैश्विक संस्कृतीयो के 7 वर्षों के अध्ययन के बाद, उन्हें स्पष्ट हो गया कि सबसे बड़ी समस्याओं का कारण हम जो सोचते हैं उससे पूरी तरह अलग हैं और उन्हें सुधारने के प्रयास हम व्यर्थ तरीक़ों से कर रहे हैं। तो उसको बदलने के लिए हमें उन समस्याओं के मूल को खोजकर, फिर हम सबको मिलकर उसका समाधान लाना होगा। तभी फलदायी परिणाम ला सकते हैं।

क्यों?

क्योंकि हम नहीं, तो और कौन?

भारत आध्यात्मिक संस्कृति का खजाना है, और अपार सुख समृद्धि उसके साथ ही आती है। हालांकि अभी अज्ञानता में हम पश्चिमी भोगवादी और प्लास्टिक ग्लैमर की संस्कृति की नकल करने का व्यर्थ प्रयास कर रहे हैं। इसलिए हमारा ध्येय आज की युवा पीढ़ी में वे आध्यात्मिक मूल्यों और वैदिक संस्कृति को वापस लाना है, जो ऐड्वर्टायज़ की गई अर्थहीन क्षणिक सुख की खोज में तेजी से पतन और आत्म-विनाश की ओर बढ़ रही है।

ये वेदिक ज्ञान हमें ज़िम्मेदार मानवी बनाके हमारे जीवन को सार्थक बनाता है।
ऐसे समर्पित ज़िम्मेदार लोग ही मिलके पूरे विश्वभर में स्वर्णिम युग को वापस लाएँगे।

सनातन धर्म का विश्वकोश

सात साल की वेदिक रीसर्च एक पुस्तक में।

दुनिया की सबसे प्राचीन और सबसे समृद्ध संस्कृति होने के बाद भी, एक औसतन व्यक्ति सनातन धर्म के बारे में 1% से भी कम जानता है। और ऐसा नहीं है की वे सीखना नहीं चाहते; वो चाहते है! परन्तु सीखें कहाँ से? शुरुआत कहा से करे?

तो इस B.O.S.S पुस्तक से हमने उस समस्या को हल कर दिया है। 7 साल के विस्तृत अध्ययन के बाद, Veducation लाया है B.O.S.S (Basics of Sanatan Sanskriti) यानी की 'सनातन संस्कृति की मूल ज्ञान'। मात्र एक पुस्तक से समझिए सम्पूर्ण सनातन संस्कृति के विज्ञान, मनोविज्ञान और तत्त्व शास्त्र को।

B.O.S.S हर उन जिज्ञासु के लिए है जो सनातन धर्म का मूलज्ञान जानने में रुचि रखते हैं। इस पुस्तक से दुनिया का हर बच्चा, बूढ़ा, भारतीय, गैर-भारतीय, हिंदू, गैर-हिंदू सीख सकेगा कि सनातन संस्कृति वास्तव में क्या है।

तो, आप क्या सीखेंगे?

11 सबसे महत्वपूर्ण विषयों का मूल ज्ञान...

1. **आत्मा** का मूलज्ञान : आत्मा, जीव
2. **परमात्मा** का मूलज्ञान : परमात्मा, ईश्वर, भगवान
3. **देवी** देवता का मूलज्ञान
4. **प्रकृति** का मूलज्ञान
5. **योग** का मूलज्ञान
6. **धर्म** का मूलज्ञान
7. **कर्म** का मूलज्ञान
8. **ब्रह्मांड** का मूलज्ञान
9. **समय** का मूलज्ञान : काल
10. **वैदिक शास्त्रों** का मूलज्ञान
11. **सनातन संस्कृति** का मूलज्ञान

विश्व की सबसे प्राचीनतम सभ्यता का अनंत ज्ञान...

Self-Help/ Religion & Philosophy

For sale in Indian Subcontinent only

M.R.P : 599/-

WWW.VEDUCATION.WORLD

ISBN 978-93-5607-846-8